'विदेह' २६२ म अंक १५ नवम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३१ अंक २६२)

ऐ अंकमे अछि:-

दुध-पानि फराक फराक

(कथा आ पाण्डुलिपि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल/ सम्पादन-संकलन आ छाया उमेश मण्डल)

A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया संस्करण

दुध-पानि फराक फराक

𑒠𑒳𑒡–𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒤𑒩𑒰𑒏

कथा एवम् पाण्डुलिपि : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

पलल्वी प्रकाशन

छाया एवम् सम्पादन/सङ्कलन : उमेश मण्डल

दुध-पानि फराक फराक/कथा-पाण्डुलिपि-छाया सङ्कलन

सं. उमेश मण्डल

दुध-पानि फराक फराक

दुध-पानि फराक फराक

(मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया पोथी)

कथा एवम् पाण्डुलिपि : जगदीश प्रसाद मण्डल

छाया एवम् सम्पादन/संकलन : उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-89-8

दाम : 500/- (भा. रू.)
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

DUDH-PAIN PHARAK PHARAK

A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथाक सत्तैर-

अप्पन गाम/09
क्रान्तियोग/17
एगच्छा आमक गाछ/28
चटवाह/32
भगैतिया/42
झूठ सपना/51
यादास्त/59
एकरबा बानर/67
विचारभेद/77
अनचोकक अन्हार/87
हारि केना मानब/91
अप्पन-बीरान/99
दिवालीक दीप/107
रेचना चाची/119
अकाल/123

पोथीक मादे

सगर राति दीप जरय'क शातांक आयोजनक माहौल रहने एकाएक मन बनल, मन बनल माने विचार एलापर, जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण एबक चाही। ओना, जहियासँ टंकन/सम्पादन/प्रकाशन कार्य आरम्भ केलौं तहियेसँ सभ पाण्डुलिपिक छाया प्रतिकेँ संजोगि-संजोगि रखैत एलौं हेन। एक बेर किछु पोथीक लोकार्पण सिडीमे सेहो करेने रही। मुदा वर्त्तमानमे मित्र नवरत्न वेंगानीजीक विचार भेलैन जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण हेबक चाही, माने एकटा आरो पोथी विमोचन हेतु 'सगर राति दीप जरय'क शातांक समारोहमे बढ़ि जाएत। ओना, आयोजनमे मात्र दू दिन समय बँचल अछि, तथापि काजमे हाथ लगा देलौं। छाया-चित्र तैयार रहबे करए, मुदा एकर महत्वपर अपन नजैर नइ गेल छल। गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)केँ पुछलयैन। ओहो कहला जे सम्हरैए तँ जरूर कएल जाए, ई एक नव कार्य होएत, तेतबे नहि कथा विधामे सम्पूर्ण पोथी ऐ रूपमे अपना ऐठाम पहिल होएत।

बहुत उत्साहित भऽ कऽ ई पोथी अपने लोकनिक हाथमे दऽ रहल छी। उत्साह एतेक जे समरोहक अफरा-तफरीक बावजूदो मात्र दू दिनमे ऐ कार्यकेँ, नव कार्यकेँ करैत अपने लोकनिक सेवामे समर्पित कए रहल छी।

उमेश मण्डल

मो: 6200635563

निर्मली (सुपौल)

20.12.2018

कथा — अप्पन गाम — पृष्ठ-1

अट्ठाइस (अठाइस) बर्खं बंगलोर में नोकरी केला पश्चात्
शुभलाल भाएक मन (जीह) ऐना उचैट गेलनि जे एको
क्षण रहब पहाड़ जेँका बुझि पड़नि (पड़ैत)। सात
दिन सँ ऐहेन विचार मन में एलैत आ दिनो-दिन असाध्य रोगक
रोगी जेँका विचार मे मजबूती अबैत गेलनि आ रहैक
विचार (बंगलोर मे) मे उड़-बिड़ी लगौ लगलैन। ऑफिस
जाइ सँ पूर्वे डेरे पर मन मे आबि गेलैन जे काल्हि
गाम ले बिदा भ' जाएब। बिड़हाएल मने शुभ
लाल भाए ऑफिस बिदा भेला। रास्ता भरि यैह मन मे उठ-
बैठैत रहलैन जे आइ वोलनटरी रिटायरमेंटक
ले आवेदन दइये देब। मात्र अढ़ाई बर्खं नोकरी शेष
अछि तेँ बीच मे कोनो तरहक बाधा नहियेँ हएत। ओहुना पाँचा बरखे पूर्वे तक अधिकार अछिये। मने-मन
विचारलैन जे ककरो पुछबो तखन ने ओ कुसा-सुआ
वाला रंग-बिरंगक विचार द' द' मनाहियो करत। नीक कैलौं
जे अखन तक ने पत्नीयेलग बजलौं हेन आ ने दुनू
बेटेक कान मे देलौं हेन।

ऑफिसक रंग-रूप जेना शुभलाल भाए कैँ जेना बदरंग
बुझि पड़ैत रहनि। जे ऑफिस कहियो शुभलाल भाए कैँ कातिकक
लक्ष्मी-गणेशक पुजनोत्सव जेँका लगौ छलनि ओहए ऑफिस
आइ उजड़ल-उपटल ओहन विरान लगौ लगलैन जेना कोनो
देश कोनो देश कैँ उजाड़ि-उपाटि बेनगन कौ-ए। ऑफिस
बीच नव-पुरान संगी सब रहनि (रहैन) तिनको सबहक
चेहरा बेदरंगे बुझि पड़ैत रहैन। जहिना परिवार मे
पत्नीक संग वा बेटाक संग कोनो विचार मे विभेद
अबिते चेहराक सूरत मे बदरंगी अबौ लगौ-ए आ
बढ़ैत-बढ़ैत एते बढ़ियो जाइ-ए जे एक-दोसरक
हत्यारा सेहो बनियेँ जाइ-ए। ऐना करब जे ऐहेन
परिवेश कैँ रोकलो त जा सकिते अछि, हँ, रोकल जा
सकै-ए मुदा परिवेश कैँ रोकै सँ पहिने ओकर पाबशताक
संग परवरिस कैँ सेहो बुझै पड़त। खैर जे अछि
शुभलाल भाए अपन टेबुलक कुरसी पर बैसि आगू

पृ- 2

दिशि (तकलनि) तकलैन त कागजक फाइल सब पर नजरि पड़ैक
~~मनुष्य~~ जे मनुष्य अपन समर्पण अपना लेने छल ओकर
दुनिया बदलि जाइ छै आ ओ दोसर दुनियाक लोक
केना भ जाइ-ए से त ओ जानथि मुदा शुभंकरलाल भाए से सब
किछु ने बुझैलनि (बुझलैन आ) अपन विचार पर आबि अटैक गेला। जँ
भौलनटरी रिटायरमेंट नहि दैत, तखन कि करब। धनतंत्रक
धनिक तंत्र मे जखन जीबै छी तखन अनेको वहन्नों लगा
सकै-ए आ अनेको लांछना सेहो लगा ~~सकै-ए~~। कैँ चोरि
सकै-ए (त सकिते आदि)। तखन? जेना-जेना शुभंकरलाल भाए अपना दिशि
बदल अबैत (देखा) तेना-तेना मन सेहो सकता लगलनि (सकताइते देखैत)।

किछु कालक गुम्मीक पद्धति शुभंकरलाल भाएक मन मे
ठहलनि जे जखन विचार बना (मन मे लेबै (रो.पि.)) लेलौं जे अप्पन गाम जाएब
तखन जेबे करब। वृन्दावनक ओहुन मरूभूमि मे रहि
कृष्ण-राधिकाक संग कदमक गाछ पर बैस बाँसुरि
टेरि (टेर) सकै- (देखा) छथि तइ सँ त हमर गाम बहुत नीक अछि
बेचारी सबकैँ (राधिका सबकैँ) डिबिया मे खानक
मटिया तेल नहि रहने कठगैनी- कौरक बीमा (बीआ) कैँ पीस-
पीस तेल निकालि डिबिया जरबै पड़ै छन्हि (देखैत) तेखम, हमर गाम त
बिजली सँ जगमगाए ए। ~~शुभंक~~ टेबुल पर बैसल शुभंकर
लाल भाएक मन मे ठहलैन जे जखन ऑफिस आबि गेल
छी तखन पहिल विचार इ करैक अछि जे आजुक ड्यूटि
केला पर पद्धति (सेवानिवृत्तिक) आवेदन करब आ कि ड्यूटी करै सँ पहिने
करब। जेना-जेना शुभंकरलाल भाएक मन मे विचारक
मोहनि (मोहन) चलबैत (चर्चाक) तेना-तेना समखन जेका विचार
मे चिकनपन अबैत रहैन। (विचार कैँ पकिया बान्ह सँ बान्हि) ~~विचार~~ पक्का कऽ लेलनि
जे ऐठाम सँ (आब) सेहो जाएन। जखन पत्राचार ले पोस्ट-
ऑफिस अछिये तखन अगिला सब काज ओही माध्यम
सँ होइत रहत। ~~एर~~ भौलनटरी रिटायमेंटक आवेदन
~~लिखि~~ लिख शुभंकरलाल भाए चुप-चाप नैने गेला आ
अपन अफसरक फाइल मे लगा चोहि ऑफिस सँ
घुमि अपना ~~[illegible]~~

पृ० - २

डेरा दिस कदम बढ़ौलनि।

कार्यालयक (ऑफिसक) अंतिम गेट (फाटक) लग पहुँचते
जहिना भकुआएल कें भक्क टुटने नजैर बदैल जाइ छै, जहिना
दिशांस लगलाहा कें दिशांस छुटिते बदलल-बदलल दुनिया देख
पड़ै लगै छै, तहिना शुभलाल भाए कें भेलनि। जिनगीक
एकटा ओहन बान्ह तोड़ैक सीमा पर पहुँच गेल छी, जेहिमे
एक दिसि स्वतंत्र जिनगीक प्रखर ज्योतिक प्रखरता पसरल
अछि तँ दोसर दिसि मनुष्यक जिनगीक भारीपनक कालिमा
गुलामी पसरल अछि। दुनूक अपन दुनियाँ छै, जइमे दोहरी सब किछु छै।
संकल्प सेहो छै, विकल्प सेहो छै। संकल्पवान सेहो छथि आ विकल्पवान त छइहे।
गेटक सीमा टपिते शुभलाल भाएक मन मे उठलनि
अप्पन गाम। दुनियाँक बीच जते मानवक संग आनो-
आनो जीव-जन्तु अछि ओकरो त अपन-अपन देशो छै ओहिना अपन भेषो छै
अपन दुनियो छै, अपन मनियो छै अपन मनियाक ओहिना
कनियाँ-सुकन्यो छै आ दुरकनियो त छइहे। कन्या-सुकन्या मन
मे अबिते जेना कोनो फूलक गाछ मे फूलक कोढ़ीक आगमन
होइते फूलक पुरुक आगमन होइ छै आशा-पुरीक
शुभलाल भाए कें सेहो अपन गामक आशाक फूलक कोढ़ी जकाँ
अपन कोढ़ विहुँसलेन। विहुँसते मन गवाही दैत कहै
लगलेन जे गाम-गाम, मिथिलाक धाम छी, तखन जँ मिथिलाक गाम कें छोड़ि देता आ तखन ऐहेन जिबठगर कें मन गामेक
सँ जे सोहरियै-समदाउन सुनबोइ, कलता वा सेहो कलता तेइ सँ मन
मिथिला कें अंगेज पौआ वा ऐवे छथि, से त मने-मन सब जनवे करै छी
कत-दूर तक
आइ एकसम एकै शब्दीक कुहियै मिथिलो आ मिथिलाक
गामो कें देखैक जरूरत अछि। जहिना एक दिसि पहाड़क
पानिक उपद्रवक संग मौनसूनक (समुद्री) उपद्रव अछि जइ
सँ धार-धुरक हवाका रहने पानि बेसम्हार भ' जाइ-ए
जइ सँ गामक-गाम उजैड़-उपैट जाइ-ए। तइ संग
गाम सँ पड़ाएन भेने गामक सम्पत्ति सेहो लुटैक गेल।
मनुखे रहने बजारो बने-ए आ बजार मेटाइतो
अछिये। तैं सब करामाती हमही-अहाँ ने छी।

पृ०-४

जखन मनुष्य होइक नाते अपन गिनतिक शैली दुनियाक बीच रखै
छियै, बढ़िया विचारो आ काजो अछि तैं दुनि जखन दुनियाँक बीच
आगाँ कें रखै छी तखन दुनियाँक सब किछु सँ नै संबंध बनबै
पड़त। जँ आबे संबंध नहि बनत, ताबे निर्णयक दौड़ मे
पहुँच देना पाएब सकै छी। अहिना बेसी काज सोझा मे ऐने
~~सब अकाद्ध (अकेद्ध)~~ मन अकद्द लगा-ए तहिना
विचारक दौड़ मे शुभलाल भाइक मन मे सेहो अकद्दी
उठ लगलेन। ~~उठलेन~~। अकद्दी उठिते मन कुहूलकनि अनेरे जे दुनियाँ
दिसि देखैत-देखैत अपने रस्ता भोतिया जाए, सेहो
केहेन हएत। जावे इजोत मे आँखि तकै छी ताबेक दुनिया
आ भोतिआएल-अन्हराएल मे देखबै एके थोड़े हएत।
अकुछल मन मे स्वच्छतल बिचार शुभलाल भाइकेँ
उठलेन। उठलेन ई जे सबसँ पहिने, पत्नी कें अपन
आजुक क्रियाक रूप देखबैन। विआहक पद्धति आनुष्ठानिक
संगीये टा नहि संकल्पित संगी। कम सँ कम जँ दुनू परानी एक बिचार मे रहब
त एते त आशा बनिये जाएत कि नै जे सीता हरण
भेला पद्धति भगवान-रामो दुइये भाए गंगा कातक
जंगल सँ ल' क' लंका तकक बौन-झाड़ छपि लेलनि
तखन हम कि भए नै गामक जिनगी के अपन जिनगी समा टॉपि सकै छी। ~~कि छी~~। पचपन-साठिक उमेरक सीमाक बीच
छी, औहुना अढ़ाइ-सालक नोकरी पद्धति ~~(नोकरीक पद्धति)~~ बेकम्मा भइये
जाएब ~~जेबो~~। कम सँ कम एतेक गिनती त हमरो अपन गामक
धरतीक नसीब भइये जाएत ~~जेतै~~ नै जे भाए भीखो-
दुखन काटि औहुना जन्मक रजिस्टर मे नाम दर्ज
अछि तहिना मृत्युक रजिस्टर मे सेहो भइये जाएत।
सैह ने भेल धरती-पर जीवन-मृत्यु।

डेरा मे (ओना शुभलाल भाए एकटा मकानो बना नेने
छथि, मुदा ओ आबनो धरि घरक श्रेणी मे नइ
एलैन तैं डेरे) अनुसार, बरखनी जेँका पत्नी कुर्सि पड़लैन। पत्नी ओहिना आने दिन जेकाँ ओछैली
मुदा कुसमय पतिक आगमन सँ किछु अचंभित भेली अनुसार
ओर, जइ सँ शुभलाल भाएक चेहरा पर नजैर टिकले नै देलन ~~पहुँचबे नै~~
जइसँ हृदयक फूल कें देखि पैबितथि। शंकालुमन
रहने, भेलनि जे मन-तन ने ते खराब भेलैन ~~भेने~~ अछि

कथा - अप्पन गाम - पृ० ५

अनुभा कें किछु नहि बजली। पत्नीक (अपराजीतक) संबंधक विचार शुभलाल भाएक मनमे एकाएक जागि गेलैनि। धरती पर जते मनुष्य अछि सभकें स्वतंत्र रूपे जीबैक अधिकार अछि मुदा तइ लेल जीबैक दुनियाँक खगता अछिये। तखन त भेल जे दोसरक अपेक्षा पत्नी त बंधन सहित करार (वैवाहिक संबंध) केनहि छथि जे आबे जीव संगे जीव आ मृत्युक पद्धति एक दोसरकें शरीरान्त धरि। ओना शुभलाल भाएक मनक चेतनशीलता मे सेहो सोच उठ' लगल छलैन। आइ धरिक पत्नीक जेहेन बेवहारक संबंध शुभलाल भाएक छलैन तइ मे मीठपन सेहो जागि चुकल छलनि। मनकें (शुभलाल भाएक मन कें) तेना विचार पकड़ि लेलकनि जे टस सँ मस हेबाक कोनो विकल्प कें ओ एकसिरे खारिज क' देने देला। अपन नोकरी सँ भोलनटरी रिटायरमेंटक चर्चो नहि कैत शुभलाल भाए बजला - 'काल्हि गाम जाएब।'

'काल्हि गाम जाएब' ई कि भेल, ने अखन छठि पाबनि अछि आ ने दुर्गापूजा, ने कोनो बिआह-दानक लगन अछि आ ने कियो तेहेन मरबे केलनि अछि जे तइ सराध मे जेता। तखन कोन एहेन धड़फड़ी गाम जाइक भ' गेलनि जे जेता। तैं आगूक आशाक बात सुनै ले अपराजित मुँह दिशि (दिस) देखै लगली। पत्नीक कोनो प्रतिक्रिया नहि देख शुभलाल भाएक मन मे एकाएक उठलैन जे एते त समझदारी पत्नी मे अछिये गेलैन हेन जे बात (आगूक बात) सुनै ले ततपर (तत्पर) भेली।

अपन जिनगी कें समुद्रीक रेत पर दहलबैत शुभलाल भाए अतीतक मुस्की मारलैन। अतीतक मुस्की भेल पैछला खुशीक इजहारक मुस्की। बजला - 'मन अछि कि बिसैर गेलौं, जे जखन आठे दिन एक गाम (माने अपराजितक सासुर) तेना भेल रहै तहिया ----।'

अपराजित जेना किछु मन पाड़ै लगली तहिना अतीतक बोन दिस बिदा भेली। जइ सँ चेहराक रूप सुतन्ता (सुतनता) सँ जगनता दिस बदलै लगलनि। मुदा नीक जेँका

पृष्ठ- ६८

धियान नइ टुटने मन मारने छैली। खिलैत मुस्की छइत (देत) शुभलाल भाए बजला - किए विआहक तीन साल पछाति दुरागमन भेल रहै से मन अछि कि नइ?'

अपराजित -' से किआए ने मन रहत।'

शुभलाल भाए - और (आरो) कि सब मन अछि।'

'आरो कि सब मन अछि,' से कि कोनो एके-दुइये टा बिहीत भेल जे कि मन अछि आ कि बिसरलौं। अही गुन-धुन मे अपराजित तत्मत् करै लगली जइ सँ बकारे ने फुटैन। अवसरक लाभ उठबैत शुभलाल भाए बजला -' जेठ मासक इजोरिया एकादशी कैं दुरागमन भेल रहै। समय खूब सुभियस्त रहै, आमो खूब फड़ल रहै।'

दुअन्नी हँसी मुँह सँ निकालैत अपराजित बजली-' ओही साल हम अमौट (अम्मट) पाड़ब सीखलौं।'

अमौट (अम्मट) सुनि शुभलाल भाए बुझि गेला जे पत्नीक मन खटपन-मिठपन मे रहल छथि। बजला -' आठे दिन पीढ़र सँ पीयर ऐना भेल रहै, भोरहरबा मे जे एकटा पुरना छबा उठल, हम खास आम खसि पड़त, तखन कहने रहिये ने जे घरवाली कैं संग क' क' चलि जाइ। राति-बिराति हमर जाएब नीक रहत।'

घटनो त घटना छी। जुबकि तेज लड़की उठल छल, जेहू गाछी-कलम मे बगबार सुतै छैला, से त छेलाहे जे नइ सुतै छैला तइ मे शुभलाल सेहो छैलाह। आम सन पवित्र सबजीन फल, तइ मे दू टा आम (फल) अपराजित दिन मे खेने छेली। जेकरा खेबा मे जते समय खाइ मे लगल छलैन तइ सँ बेसी समय ओकरा निहारै (निङहारे) मे लगल छलैन। तैं देखल-बुझल रूप मन मे अतीतक टटके गरल छलैन। माइयक (सासुक) आदेश सुनि अपराजित पत्नीक रूप मे आमक गाछी जाइ लेल पतिक संग तैयार भेल छेली। एक ते ओढ़ना ओ डमेर ओढ़ने छेल

पृष्ठ-6

जइ मे लोक कें किछु कोनो उत्कंठा जगिते छैक। तइ मे संगी भेटने त आरो प्रखर भ' जाइ-ए।

जीवनक चारि मे अपराजित कें ठाढ़ होइते शुभलाल भाए विचार केलैन जे आब अपन विचार कें खोलि बजै मे कोनो असोकर्ज नहि अछि। अतीत मे जीबैत अपराजित भविष्य दिस देखैक-सुनै-बुझैक जिज्ञासा मे जिज्ञासु बनि पति दिस देखै लगली। शुभलाल भाए बजला- 'काल्हि भोरका गाड़ी गाम जाइबे जरूर पकैड़ लेब। गाम जेबे नइ करब आब गामे मे रहब।'

पुरुष परीक्षाक अंतिम बेला मे जहिना जखन सभ मोड़क धारक बीच लोक पड़ै-ए, जेठाम निकलैक सॉकरि रहै-ए असोकर्जो होइ-ए, मुदा भसैक (गलत धारक) धारक रूप, निकरास अछियो तइयो बीच जे समय अछि, घड़ी ने पुरुषक परीक्षक भेल। अपराजित गाम बिसैर जेकाँ गेल छेली। ~~ओहुना लोक गाम नहि बिसरै-ए मुदा~~ तइ मे सासुरक गाम। अपन जन्म सँ बालपन होइत किशोरपन तक माए-बापक छाँह मे रहली, सासुर ऐला मासे दिनक पछाति पतिक संग (सासुर मे) गाम मे रहने समये कम भेटलनि। तइ मे मास दिनक ओहन जिनगी जे आँगन सँ बहरा नइ सकली, तखन जँ सासुरक गाम माने पतिक गाम बिसैर गेली त समीचीने भेल। ओना आब तक अपराजितक मन सँ छुटि हटल छेलैन जे बंगलोरक शहरी जिनगी, जेकर अभ्यस्त भ' गेल छी, आ ग्रामीण जिनगी मे केहेन दूरी बनिये गेल अछि, मुदा मनुखो त मनुख छी दुनियाँक दोनो दूरी कें मेटाइयो सकै-ए आ बनेबतो अछिये।

ओना शुभलाल भाए अपन विचार कें संकल्प बना सोचि नेने छेला जे जँ पत्नियो संग जाइ ले तैयार नइ हेती तइओ असकरो गाम जेबे करब। अपन भार इच्छुक कैने अपराजित बजली-

- आब कि बुझै छियै जे ओइर समय अछि जे डेरा मे ताला खोसि दइ छेलियै, दुनू आ दुनू परानी हाथ मे झोड़ा-बैग लटकौने बिदा होइ छलौं। दू-टा बेटे-पुतोहु अछि, आ कि असकरे छोड़ि ओकरा कें बिदा भ' जा

पृ०-८

ओना भुमलाल भाएक मन में ठोि गेलनि जे । कि अपने परिवार बंधन सँ मुक्त छी वा बंधन में छी। मुद्दा तइ दिश सँ अपना कें मोड़ि भुमलाल भाए अपन गामक सिमृत (स्मृति) में तेना भसि रहल छैला जे फले-फलै, सुफले-सुफल नजैरिक आगू दौड़ रहल छलाति। समयक चाहेँ गाम दिस (दिशि) नइ बदल जा रहल अछि सेहो केना, नइ बदल जा सकै-ए। ओ त बदिये रहल अछि। जहिना मिथिलाक लोक आन गाम गेला तहिना आनो-आन गामक लोक त मिथिलाक बजार में जीविकोपार्जन करैये रहला अछि। अनेको संस्थानो आ व्यापारोक रूप में करैये रहला अछि।

अपन विचार में दृढ़ता अनैत भुमलाल बजला- हँ, से त परिवार में छीहे। तें एकनेर कहि त जरूर देबइ। किएए अपना सिर भजस लेब जे कालिह दिन ओइह जँ उनेह कें कौ जे जखन अपन बाप-दादाक डीह जगवै, जे आवन मरनासन्न भ' गेल अछि, जाएब तखन परिवारक सब किअए ने जाएब।

विस्मित होइत अपराजित बजली -' गाम मे आब कि अछि जे जाएब?'

नव चिन्तनं सँ चेतल चेतना में जहिना उदीयमान बल होइ छै तेहने बल जेना भुमलालक भाएक विचार मे सन्हिया गेल छनि। बजला- गाम में नइ अछि।'

समाप्त
६।११।०१८

कथा – क्रान्तियोग – पृ० १

गामक हवा-पानि खा, रैहल-बुलि जीवन काका दरबज्जा पर अबिते पत्नी कें चौकठि लागल ठाढ़ देखलैन। ओना मन में पहिनें ई उठलनि जे किछु बात परिवारक जरूर छी तें पत्नी केबाड़क चौकठि लागल ठाढ़ छथि नहि (नइ) त आबन काल अंगना-घरक काजक (बदैल) भेलैन। विचार बदलैक कारण भेलैन जे जीवन काका ठेंठ छै जइ सें रंग-रंगक विचार मनः स्थिति कें सेहो खुशी खुशिया अपना रंग में रंगैत रहैए, तहिना भेल छलैन। ओसार (दरबज्जाक ओसार) पर चढ़िते बजला – 'पहिनें एक गिलास पानि पिआउ, पछाति चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।'

'विचार करबाक अछि' सुनि कामिनी (पत्नी) क मन पहिनें ठमकलनि पाछु हटलेन, मुदा लगले पाछु उनैट तकली त बुझि पड़लैन जे किछु बात जरूर छी। आन दिन अपना मने कि विचार करै छला कि नइ कौं छला से कहाँ कहियो कहै छला। रौह ने हुकुम (आदेश) दइ देला जे अमुख काज करू, कि वा अमुख काजक की भेल? मुदा विचार करबाक अछि, कहला अछि। खुशी हास्य में विनोद चोरि (छोड़ि) कामिनी द्रवी बजली – 'हम कोन ओकर छी जे विचार करब।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन में कनी कचकचौर जरूर भेलैन मुदा चोट लगला पर जेहेन मन चोटाउ-ए, से नहि (नइ) भेलैन। अपनों मन गवाही देलकनि जे अपन तकक जिनगी में पत्नी कें विचारबान बुझि विचारिये कहिया बुझि कोनो विचार केलौं अछि। पत्नीक बात कें विचार में विचरित करैत जीवन काका बजला – 'जइ ओकर नइ छी, सैह ने दुनू परानी मीलि विचार करब।' कामिनीक आंतरिक अन्तर्मन विहुँसि गेलैन। पतिक उठैत विचारक भंग देखन में गाड़ैत मन मिलबैत बजली – 'चाहक ओरियान त चुल्हि पर सब किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटा में पानि सेहो आनि कें रखने छी। बैसू, लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।'

सोलहन्नी पर बतीस अन्नी केकैत वा नहला पर दहला देकैत, जीवन काका बजला – 'शुभ काज में विलम्ब करब मूर्खता भेल। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब ओतबे पाछोनक समा...

पृ० · 2

(परसब) तावे अइ दुधू के चाह बनि जाएत।' अपन काज कें निसवासक रंग चढ़ैत कामिनी काकी बजली-' सें किए (कियए) ने बनत। भैया तँ दु गिलास दुध-पानि औंटैक ओछि।'

कहि कामिनी काकी आंगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटा मे पानि रखने छेली, रखैत लोटा-गिलास नेने कामिनी काकी दरबज्जा पर पहुँच पतिक आगू मे राखि देली। ओना मन मे नव-नव विचार जरूर उठैत रहैन मुदा चाह बनाएब कें जरूरी बुझि किछु ने बाजि चोट्टे आंगन घुमि गेली।

अधा गिलास पानि पीबैत-पीबैत जीवन काका कें विचारक तरंग तेना तरंगित कए देलकनि जे गिलास चौकी पर रखिते पछिला जिनगी (अपन दुनू परानीक जिनगी) दिस मन दुमरि कऽ घुमड़ि पड़लैन। मन मे उठलैन अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तइ संग पारिवारिक जिनगी, मुदा अंतहीन रस्ताक अछिना ओर-छोर नइ होइ-ए तहिना मन मे उठै लगलैन दुनू परानीक बीच तीस-पच्चीस बर्खक जिनगी रहलैन। मुदा अंतहीन रास्ता (रस्ता) कें तँ लोक खतिया कें खुटिया अपन रस्ताक सीमा तँए करैये लइ-ए।

अखन तक माने पचास बर्खक जिनगी तक जीवन काका ओहेन बेह जिनगी धारण केने अबि रहल छला जे गाम-समाजक रहलैन। ओना मन मे ई बात जीवन काका कें जरूर उठलैन जे अधा जिनगी रीब-रीबे मे चलि गेल। रीब-रीबक माने भेल जे जहिना मिरचाइक सुआद गुण कड़ुपन होइ-छै जँ ओइ मे कड़ुपन नइ आएल रहल वा ओकरा मे कड़ुपन रहबे ने करै सेहो भेल रीब-रीब। मिचाइये के गुण-स्वभाव जकाँ मनुखोक छैत अछिये। जहिना जे मनुख कैलक-धैलक किछु ने आ खाइत पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता देलक ओकरो जिनगी ने रीब-रीबाइले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे भरण-पोषण बीतैत किछु आगू धारि डेग उठबैत चलै। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। एक भेल जे आगू दिस उचित डेग बढ़ाएन आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीच मे तेसरो तँ अछिये जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछु दिस ससरल, बीच मे डमफल चलैत रहल। ओना आगू दिस डेग बढ़ाएब आ कि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन छैहे अछि। एक कारण

पृ०-२

नइ अछि। आगू दिस बढ़बाक कुनु अहिना कुनु कारण अछि तहिना
पाछू दिस ससरबाक सेहो छै टा कारण त अछिये। माने छै जे
अहिना आगू दिस उचित (डेग) डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओ छन
डेग जइ मे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना (उद्धार) निहित
अछि, आ दोसर अछि जे जइ मे केकरो मंगल कामना (उद्धार) नहि
भए अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबाक सेहो
कारण अछिये। पहिल भेल बिना किछु कैने-धैने ठाढ़ छी
आ सभे निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल कऽ रहि गेल। तहिना दोसर रहलो
बिछाड़िक एतै चोट दान पड़ल जे लाखो चेष्टाक कोशिश
कैलाक पद्धतियो डेग (जिनगी) पाछू मुँहे घुसकि गेल।
माने भेल जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ
साधने छीना गेल आ सभैक थपेड़ (थपेर) ओकरा ओपरा
दऽ निच्चा उताड़ि देलक। तही बीच चारू नेने कामिनी काकी
पहुँचली आ पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल
विरहीन जेका बिछाएल छनि। मुदा जगले कामिनी काकीक
मन मे एकटा नव विचार उठलैन। विचार उठलैन जे अहिना माहुर
(मारि) खाएल वा चोटाएल पति कऽ पत्नियेँ एहन औषधि छथि
जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित कऽ ओइ पर
मरहम (मलहम) पट्टी कए सकै-ए। आन दोसर त ओइ
तरहक नहिये कए सकै-ए। कोखिक अनमोल माइयोत मात्र
बेटाक बेथा देल अपन नयनधार मे मोनि फोड़ि
बेथा बाँटै चाहै छथि मुदा तीतक रोगक दबाइ तीते
सँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठो सँ छोड़ाएल
जाए, ई त संबंधे पर निर्भर अछि। चाहक गिलास
जीवन काका कऽ हाथ मे पकड़बैत कामिनी काकी (बजली)
'आन दिन सँ कनी बेसी चीनियो, चाहो पत्ती आ दूधो
देल चाह अनलौं हेन, तेँ कनी सुआदि-सुआदि पीबो करब
आ रसिक जन जेकाँ रसो ग्रहण करब।'
पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन बेथा (मनक बेथा)
कऽ मनेक मन सँ मनबैत मुस्कुराइत बिहुँसैत बजला-' अहाँ हाथक
चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब त एहन सुआद केकरा
हाथक चाह मे भेटत जे रसी नइ कुरबै।'
अपन सुतरल विचार बाण देख कामिनी काकीक मन
...

(कलैया) ढरिएकौने। ढरिआइते बजली - अपनों मन होइ-ए
जे दुनू परानी एकठाम बैसि संगे चाहै पीबितों।'

विचरणक दुनियाँ मे अएलाह जीवन काकाक मन एहने कौना
बजला - ' ऐहेन दिन कहिया पाएब जे दुनू गोटेक (माने दुनू
परानी) चाहो एक रंग रहत आ एकठाम बसि सुआदि-सुआदि
चाहैपीबाक आ गपो-सप करब।'
पाछु ससरैत माने विचार कैं पाछु ससरैत कामिनी बाजल - अपना सोहंत-
गर लागत - 'बुझि पड़ैए।'
'अपना सोहंतगर' सुनि जीवन काका कैं विचारक बाइन (बनावट) सुनालि
बुझि पड़लेन। बजला - किअए ने लागत। बुझि पड़त।'
नहुआ पा दहुआ कैकेत कामिनी बाजल - ' अपना जैं कनी-मनी
(प्रेमवश) नीको लागत त परिवारो आ समाजो धुरन्धी करबे
करत कि ने?'

उमहाएल आम होउ आ कि जनाम वा कोनो आन फल
उमहेला पद्धति ओ पुनः स्वेच्छा नहि बनि आगू दिस बढ़ि
बौनेबे-पकबे करै-ए। तेठाम जैं परिवारे (माने परिवारेक
लोक) आ कि समाजे जैं नादानी वा बजउमकी करबे करत
जे आगू स्वेच्छा बनत, एहनो विचारकें जैं धुरन्धी करत
त ओकरा मानबो त जीवन रेख कैं पाछु दिस मोड़ब भेल
कि ने। परिपक्व होएत जीवनकाकाक विचार फुरि पड़लेन।
फुटिते मुँह सँ निकललेन - ' परिवारे आ कि समाजे जेकरा
धुं धुर-धी करै-ए, आ हँसै-ए जैं ओकर
गुण-दोष कैं परखबो अपना कैं लोक-लाज सँ लज्जित
बुझैक तखन त एको डेग आगू ससरब कठिन अछि।'

ओना एहेन विचार कामिनीकाकीओ मे तरंगित भ रहल
छलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक विचार सुनि मन उमकलेन।
उमकैक कारण भेलैन जे एक दिस पतिक विचार अछि, जे
जीवन साथीक रूप मे हाथ पकड़ि माए-बाप (माता-पिता)
लग सँ अननें छथि। माइयो-बापो (मतो-पिता) स्वेच्छो
सँ दान-सरूप जीवन दान देने छथि, तेठाम हमरा दोसर
के अछि, जे जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौल
कैं लोकलाज माने अपन जिनगीक लाज कैं अपने विचार कि छै
विचारणे बिना मानि रखबो त धोखा छी, निधोक सँ डेग
उठाएब तखन ने भेल जखन अपन अगिला जिनगीक बे-
अपन अगिला ओहन डेग जे जिनगी कैं गढ़इने

कथा - क्रान्तियोग - पृ०-४

हैलैत, तोड़ैत वा कुदि क फनैत टपब अछि। मनक कल्लोल विचार मे विचड़ैत कामिनी काकी बजली - 'अखन एते प्रेम सँ चाह बनौने छी, तइ बीच जँ कोनो कनि-काठी फेक मन कँ (चाह पीबैक मन कँ) दुइर कए दिऔ, तँ इहो हमरा सन (माने पटनी सन) हेत। लोकक लोटा कैतेन हेत।'

कामिनी काकीक सहगर विचार सुनि जीवन काका बजला - 'जँ गपे-सप मे चाहक - चाह आ (चाहक) ओकर गुण सुआद कँ पानि बना लेब खन सेहो कँ हेत हेत।'

ओना कामिनी काकी आ जीवन काकाक बीच आवन धरिक जे जिनगी रहलेन ओ ने तीते रहलेन आ ने मीठे रहलेन। तीत-मीठ दुनू रहलेन जइ सँ एक वस्तुक गुण जे हजारो-लाखोक संख्या मे किअए ने हुअए मुदा ओकर रूपो-गुणो आ सुआदो त एके रंग ने होइ-ए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी संख्या मे पाँच अछि। ओइ मे सँ एकटा मिथिलांचल मे खेलौं, दोसर असाम मे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरल मे खेलौं चारिम गुजरात वा राजस्थान मे खेलौं, पाँचम पंजाब वा कश्मीर मे खेलौं, कि ओकर गुण-सुआद जगह बदलने गुण घटैत-बढ़ैत जाएत आ कि ओहिना रहत जे मिथिलांचल मे बसहल। एकर माने इहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदह मे ई गुण छै। ई गुण सब ठामक सब वस्तु मे छै। (पुरा बदलल) चाहक गिलास ठोर मे (मुँह मे) सटौने कामिनी काकी जीवन काका दिस पहुँचली। ओना कामिनी काकीकेँ चाहक गिलास मे मुँह सटौने देखि जीवन काकाक मन मे कनी कुबाथ भेलैन। कुबाथ इ जे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लग सँ पीबैत-पीबैत दलान तक भरि घोंट पीब लेती। इ तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद कुमलियौं, तावे चाहो ससरि कँ पेट मे गेल जइ सँ मन मे फुहराम भेल। फुहरपन विचार उठलाह। ओना कनी-मनी जीवन काकाक मन कड़ुएलनि जरूर जइ सँ क्रोधक बिनबिनी (बीन-बीनी) जगलेन मुदा अपन मन त फुहराम रहबे केलेन। क्रोध कँ घोंपैक विचार जखन मन मे फुरलेन। मन मे विचार फुरिते मन-विचरण कँ जगलेन जे क्रोध जान नीक कि अधलाह क्रोध तँ कतौ संसारे सँ लोक मे नइ अछि ए। इ (ओ) त लोकक मन मे मनोविकार (मनक विकार) ओगेसब मे रहबे करत आ रहिते अछि।

पृष्ठ-६८

मुदा एकटा विचारणीय प्रश्न त अछिये जे जँ क्रोध सीखहुँ आना अधले छी तखन ओकर किअए ने (मानें सामूहिक रूप मे) ओकरा पानि बहैत नाली वा कचड़ाक ढेर मे फेक दइ-ए। प्रश्न अछि क्रोधक रूप कें देखब। मनक विकार कहियौ आ कि शरीरक उर्जा शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध त छी जरूर। मुदा ओकर सीमा-सरहद कि अछि आ कते अछि, सेहो त देखे पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्पशक्तिक प्रहरी (सिपाही) छी त दोसर दिस पोखैर-झाखैड़ धार-समुद्र मे डुमबैबला सेहो छी है। तँ क्रोध अज्ञानक अज्ञान मुरखता पैदा करैबला छी त ज्ञानक ज्ञान कावलक संकल्पक संगी सेहो छीहे तँ क्रोध सँ क्रोधी नहि बनि क्रोधी जिनगी धारण करबो ने जिनगीक पथ कें प्रदर्शित करै-ए।

रसे-रसे जीवनकाकाक मनक कुवाथ सँ जे क्रोध चढ़ि रहल छलैन सेहो समन उफान (उफनेन) लगलनि। समन होइते (क्रोध कमिते) मन मे उठलैन जे जहिना जाँत मे, जेइ मे तर-उपर दु चक्की रहै छै, दु चक्की रहितो बीचक जे कील होइ-ए ओ एकटा कें सक्कत सँ पकड़ने रहै-ए आ दोसर के ढील रखने कुह रवैया छोड़ि दइ-ए। तहिना बीच मे ने पीसिनिहारि वा पीसिनिहार बाम हाथ से हत्था चलबैत दहिना हाथे ओइ मे झीक दइ-ए। मुदा ओ त रहै-ए अन्नक झीक त उपराक होइ-ए। तखन हत्था जे झीकै ए, मानें हाथ से जे झीक के हत्था कें चलबै छी ओ कि भेल? मुदा लगले जीवनकाकाक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी ले जँ जाँतक किला किछो मे लगि जाएब तँ जिनगी ससैर कें पहाड़ पर से निच्चा खाधि मे खसै पड़त। तँ दहिना हाथे झीक देलौं आ कि वामा हाथे - मानें जाँत मे अन्न देलौं, ऐहेन-ऐहेन खींच-साँच कें विचारे सँ सरिअबैत चलब। नीको जखने ऐहन-ऐहन विचार कें सरिअबैत चलब, तखने झाकुर मात्र जेकाँ सुरकुनिया मारि चलि सकै छी। नइ त छोट-छीन हल्लुक-फल्लुक रहितो रचना मात्र जेकाँ खड़े-पात मे तेनक ओझराजाएब जे 'अब' से विदा भेलौं, चलल्हौं, ततै रहि जाएब। मने-मन जीवन-काका सामंजस्य करिते छलाह कि तेसर दुनू गोटेक हाथक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथ मे गिलास (खाली) पकड़बैत बजला -
'अहाँक लगाएल पानो खाएब।'

पानो खाएब सुनि कामिनी काकी कें सुतरलनि। सुखेत बजली - 'सासुर मे नइ कहियो पान लगेलौं तँ कि कुओ छी जे पान नइ लगाबै अबै-ए।'

कामिनी काकीक मन त ओते फरगर (फरहर) नइ रहैन मुदा

पृ०-6

जे आवेश रहैन- मुदा ओकर जे प्रवाह रहैन ओ तरू से कुछि पड़लेन जे प्रवाहित आवेगित छल अरज्ञ छवि तैं आवेगित आवेगक वेग कैं अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला- अनेरे नै अहाँ मीठ के तीत बनबै लगै छी। हमर मनक विचार अछि जे जहिना हम पान लगा कुँइ खा मुँहकेँ लाल बना मुँहक लाली लौलक मिलानी करैत लपका तिलकोर तोरबो फाव आ देख-देख खेनौ जेब।'

ओना जीवन काका अपना सूढ़िये बजैत रहैथ मुदा कामिनी काकीक मन जीवनकाकाक पान लगाएब सुनि मौड़ी जकाँ मौड़ि देने रहैन। तैं मने-मन सोचै लगली जे नैहर मे पान त जरूर लगबै देलौं। देव स्वरूप पिता कैं कुछो देलिएनि, जन्मदाता सेहो देलाह, इनका पान लगा खुअबै तेहाम त अनाड़ी छीहे। अनाड़ी इ जे ओहन पत्नी जे ने पान लगबै छथि आ ने खाए छथि। बजली- 'किअए ने पान लगा कैं खुआएब। मुदा लगाएब सोझा मे। पहिने गिलास आंगन मे रखने अबै छी।'

ओना जीवन काकाक मन मे छहलेन जे सोझा मे पान लगौती (माने पत्नी) आ जँ एके खिल्ली हमरे टा लै लगबैथ तखन कि हएत। ओ त पान नइ खाइ छथि। मन आगू बढ़ि अखाढ़ (अखाढ़) मास पर गेलैन पाइनिक (वर्खाक) फुहार पड़िते फुहराम भ' सृजन शक्ति सिरजैत प्रकृति सृजन करै लगै-ए आ जहिना धरती हरिया लगै-ए। ओना तीन मौसमक बीच धरती कैं छह रूपक रूपो आ रंगो बनै-ए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धर्मो (धरमो) छै आ रूप धरमो दइ छै। जइ सँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूप मे अन्तर अबिये जाइ छै। जाड़क मौसम सँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौलाक पछातिक जिनगीक रूप मे अन्तर आबिये जाइ-ए। तहिना गरमी सँ बरसात आ गरमी बरसातक बीचक जे मधु मास अछि भलेँ ओ जाड़-गरमीक मधुमास सँ भिन्न परिस्थिति मे किअए ने किएक ने दुनू मेल हुअए, मुदा छी त ओहो मधुमासे। तहिना जाड़-बरसातक बीचक सेहो अछिये।

गिलास रख घौं क' रहि कामिनी काकी लफड़ल आंगन सँ दरबज्जा पर आबि धमकली। अबिते बजली- 'लाउ, कहाँ अछि पानक समचा।'

गमछाक खूँट मे बान्हने जीवन काका पानक सब समान (खूने रहथि, कन्हा परसँ गमछा उतारि, खूँटक मे बान्हल मोटरी पोटरी

खोलि ~~चौकी~~ आगू मे चौकी पर रखला। अपने कनी पाछु घुसैक देवाल (दलान्जाक देवाल) मे ओंगठि क' गेला। आगू मे पानक समान, बगल मे माने आगू दिस सौंसा-सौंसी वैसे कामिनी काकी पानक पत्ती (पीलीपीतकओहा) खोलि पान निकालि एक खिल्ली पातक वैसार केलैन। ओना मन मे ई जरूर रहैन जे देखियै जे कि (पति) बाजि रहला अछि। तें पानक खिल्ली माने पातक पत्ती वैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि क' आंगन दिस बढ़ली।

देवाल मे ओंगठल जीवन काका आगू मे पसारल पानक पात देख मने-मन विचार करय लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच विषमता अछि (रहत, जे जीवन संगिनी सैहो छथि, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। एहेन खाइ (खाधि) त जिनगीक कियार मे अनेको अछि। जाबे तक आधारि एहेन-एहेन खाइ बनल रहत ताधारि चौमास खेत जेकाँ समतल समभूम केना बनत। जाबे आधारि से नइ बनत ताबे ताधारि समरूप समउपज केना उपैज सकै-ए। माने ई जे जाबे तक विचार एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हैत-(माने एक गहराइ) ताबे तक समरूप विचारक निर्णय मन मे केना उठत आ ओहन समरूप निर्णय कौत समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकै छी आगू बढ़ि ले-माने दोसर-तेसरक संग, त एकरूपताक एकरूपता अछिये। जँ से नइ हैत त अनुसार जगह मे (माने समस्याकेँ) एक रूप जँ भइयो सकै छी त ओहन परिचित जगह मे तँ एकरूपता भंग भइये जाइत जइ सँ संगपना मे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाट-(जिनगीक संग चलैक) मे विघ्न-बाधा उपस्थित हैत तखन चलब त दुरकर भइये जाएत। असकर चलब, दोसकर वा दशकर दशकर चलब आ दुरकर चलब मे अन्तर अछिये। मुदा लगलै मन मे (जीवन काकाक) उठलैन जे आवन जे परिस्थिति आगू मे उपस्थित भ' गेल अछि ओहुना सोलहन्नी मानियो लेब जल्दबाजी (धड़फड़ी) हैत। जँ पान जा सकै छल, मुदा आवन त पहिलुके (प्रथमे) डेग उठौलैन अछि, जइ मे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली ~~लगाके~~ पसारैक वा वैसबैक, तखन किअए ने इनकेँ (पत्नियो) पर आबन रहै दिअनि जे आगू कि करए रहला अछि। जँ सुइरसे गतिये दोसरो खिल्ली वैसबैत छथि त बढ़ियाँ। जखन चारि संगे पीबी, तखन जँ पाने खाएब त ई कोन नइका मत भेल जे मन हानि हैत।

कथा - क्रान्तियोग - पृ०-

जीवन काका मने - मन जीवन काकाक अपने हारि-जीतक विचार करैत चुप-चाप आँखि के कनी छोट कैने माने दुनू पीपनी कें सिकुड़ने चिन्तक रूप जकाँ दैनाल में औंगठल पत्नीक प्रतिक्षा (परतीक्षा) करै लगला। तइ बीच आंगन सँ पत्नी (कामिनी काकी) सेहो पहुँचली पहुँचते अपन जगह - माने पहिने जेना बैसल छेली, पकड़ि जेना बिसैर गेल होथि तहिना इ पानक पन्नी (पोलीथिनक झोरी) कें हौंड़-हौंड़ सौंड़े लगली। ओना मन मे इ बात जरूर नचैत रहैन जे देखियौ, अपना बेर मे पति कते इमानदार छथि। अनका कें सबकें सब कहै-ए, मुदा करइलो गेल अछि जे पंडित होइजो गाल बजाबा'। गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा कें देबैन (माने पति कें देतैन) ओ हमरे लगौलहा पान सँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल।

ओना जीवनो काका गलतिये कं गलतिया गलती भरि पत्नीक लीला-भूमि देखै चाहै छेला मुदा कामिनियो काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारलनि जे शिकारी कैनका छी आ शिकारी कें छी - माने दू टा शिकारी जँ दुनो एकटा शिकार पर बाण (तीर) फेकै आ दुनू तीरक बीच सिरिआएल शिकार खसै, तँ ओइठाम निर्णय करब कठिन भइये जाइ-ए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल छेलै कामिनी काकी दोसर बाण (तीर) छोड़ैत बजली - 'पान मे दइले जे चुन रखने छी, ओ तेहेन मरचुन जकाँ माने सुखि गेने, बनि गेल अछि जे पात मे लागबो कठिन अछि तैं कनी पानि देने आंगन सँ अबै छी।'

ओ पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन मे उठलैन जे किछु बाजी। बाजी इ जे कहिऐनि चाहै भेल इच्छा आ पान भेल पौनाइ। माने इच्छाक पूर्ति हैब। मुदा फेर लगलै मन मनाही कैलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तैं राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्ता मे नाच देखब सभ नोकसान करब हैत। भाए अखन परीक्षा दइले बिदा भेलौं तखन सभ सँ पहिने नहि पहुँचब तँ अपन कें तैयार कैना कुरूम। इ तँ नहि जे जेना लोक बजै ए जे भोजक बेर कुम्हर रोपबे काज थोड़े चलत। मुदा जँ अही बिचार कें ए रूपे राखल जाए जे भोज मे कुम्हरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तैं तखन ने कुम्हरक संग न्याय भेल सें त नहिये अछि। विचारक बीच मे तेना जीवन काका ओझरा गेला देखा जे पत्नीक बात अनसुनिये रहि गेलैन। माने म...

पृ०-१०

मन जीवन काका विचारिये रहल छथा तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानि ढ़ुले चलि गेली।

कामिनी काकी कें परोछ होइते माने दरबज्जा सँ आंगन दिस बढ़ने, जीवन काकाक मन मे दोसर विचार फुनफुना कें फुनफुनेलेन। फुनैकते विचारें लगला जे पानक जे सरमजाम माने पात, चून, खैर, सुपारी, जर्दा, अछि ओ त परिवारक भेल माने परिवारक आमदनीक खर्च मुख्य भेल, जे दुनू परानीक (पति-पत्नीक) भेल मुदा खेबा काल हम खाएब आ ओ (पत्नी) नइ खेती, इ त सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान एहेन कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत त रोग भगतै आ बिनु रोगी खाएत त रोग बढ़तै। तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानी देने दरबज्जा पर पहुँचली। दरबज्जा पर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखिये पत्नीक चेहराक चुहचुही पर देखलनि। (देखलेन) ओना कोनो काजक कौंक तीन अवस्था होइ-ए। पहिल जँ काज सफल पूर्वक होइक संभावना रहल तखनका चुहचुही, दोसर काज असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखनका चुहचुही आ जखन काज सफल नइ होइक संभावना स्पष्ट भ' गेल रहल तखनका चुहचुही मे स्पष्ट झलक आबिये जाइ-ए।

ओना कामिनी काकीक चुहचुही देखन जीवन काका बुझि गेला जे इनका (पत्नीक) चुहचुही सँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार इनका हाथ छनि। माने पत्नीक सफल विचार छनि (छैन)। जीवन काकाक मन मे लगले दोसर विचार जगलेन। जगिते मन विचार जगिते विसवास सेहो जगलेन। विसवास इ जगलेन जे जहिना चाह पीबै काल कहने छेलियनि जे दुनू गोरे (पति-पत्नी) संगे-संग एकठाम बैसि चाह पीब। जखन एकरसताक प्रतल चाहक पद्धतिक ने पान भेल। जखन इनको (पत्नियो कें) नीक लगै बात छनि तखन जँ पान मे कटौती करती, माने हमरा जे लगौती आ अपना जे नइ लगौती, तइ मे हमर कोन दोख। किअए ने हमही छाती पर चढ़ि फटकारि क' कहबनि जे 'थेंह अहाँ इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा (अधिकार) छोड़ि क' भागि रहल छी। जखन अपने सँ हक-हिस्सा छोड़ि दिअ' पड़ा जाएत तखन दोख केकर। अपन सुतरल विचार पबन सँ जीवन काकाक मन कलिएलनि। कलिआइते मनक विचार के मनी मे रस सँ रसरसबैत गुड़ चाउर फकै लगला। मुदा बाजि किछु ने रहल छथि। पान मे चून लगबै सँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा क' तकला जे किछु बाजि रहल अछि कि नहि। ओना जीवन काकाक मन मे मनुआ (जाबति) भ' मुरझा गेलेन जे एकटा चूक अपनो अनकै भेल अछि। ओ इ जे जखन तकक जिनगी मे (माने पति-पत्नीक) आदेश दइत (दैत) रहलएनि जे अमुक काज करू, अमुक काज नइ करू। मुदा अपना विचार मे केना एहेन विचार करितथि कि

पृ०- ११

अविलम्बि (ऐनेन) जे अपने ई बात बुझै लागितथि जे अमुक काज करैक अछि आ अमुक काज नइ करैक अछि। ई त चिन्तनक अतल तल मे भेटत जे अखन तक छुटल रहल। खैर जे होइ मुदा पाछु उनटि देखै लागब त फेर संबंध पछुआ जाएत। तैं नीक हैत जे विचारक (ज्ञानक) उत्स केना मन मे (पत्नीक मन मे) रोपि दियनि जे स्वयं ओ पत्नीक रूप मे ठाढ़ भ' चलि जाथी। अगर पति अपना कें पतित्वक (पतित्वक) रूप धड़ि (धारण करैत) पकड़ि चलैथ आ पत्नी जँ अपन पत्नीत्वक रूपक धड़ि (धोड़) पकड़ि चलैथ त जिनगी कें दोषारोपण करै' हैत। जँ एक-दोसरक बीच दोषारोपण नइ हैत तखन दुषित मन केना बनत। आ जँ दुषित मन नहि बनत त जिनगी दुषित भ' दुखित केना हैत। मन कलशलेल। कलैशते जीवन काका बजला- 'चाह-पान मे दिन बीता लेब, तखन त भेटत जिनगी मोटा उठाएब आ मोटाक विचार करब। कते काल भ' गेल कहना जे। किछु विचार करब अछि।'

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली- 'अ से पानक खर्च बढ़ि जाएत।'

जँ पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला- 'जाबे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताबे मुँह मे लाली केना औत। जाबे मुँह मे लाली नइ औत ताबे जिनगी कें जिनगी केना बुझबै।'

ओना जीवन काकाक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मंदिरक पुजारी जकाँ अपना कें समर्पित करैत माने अपना पराकाष्ठाक तियाग देखबैत बजली- 'अहीं ने हमर सब किछु छी। अहींक आश्रय मे ने हमहुँ बसब।'

पत्नीक सिनेह सँ कोकिल बदलैत बादल जकाँ पत्नीक रूपक विचारक रूप देख जीवन काका बजला- 'जाए दियौ, अहिना समैक तीत-मीठ सुआद बहि बुझि गमैलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आइ सँ त से नइ अछि। जिनगी मे किछु ऐहन काजक सँ संकल्पित हेबा अछि जे पति-पत्नीक पहचान बने।'

हँसैत कामिनी काकी बजली- 'तइ ले कोनो हाथ रोकै छी, सादिकाल त हाथ पकड़िये चलै चाहै छी किने, जेना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घर सँ विदा केने छला।'

समाप्त- '१३।५

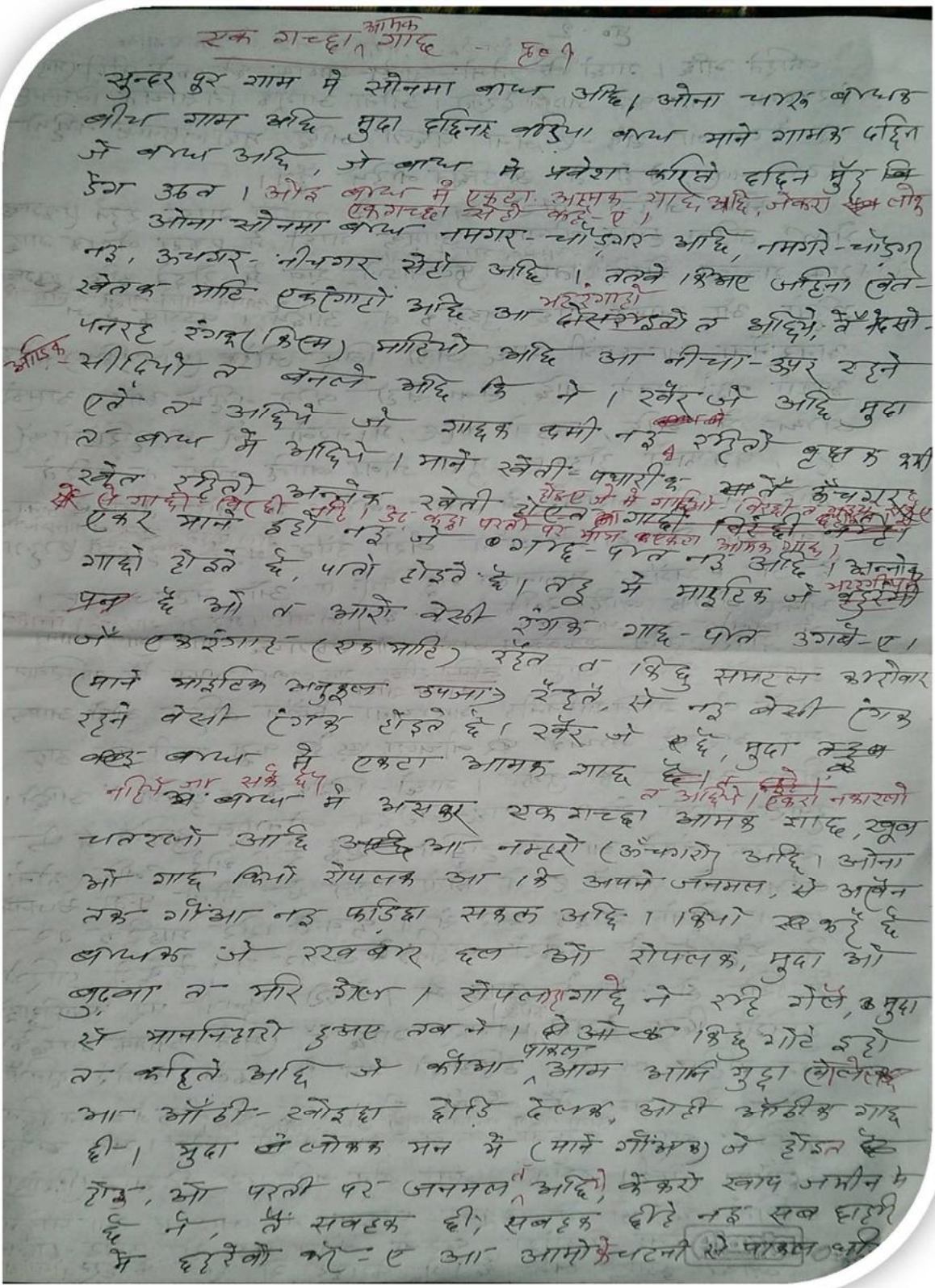

एक गाछक आमक गाछ

सुन्दर पुर गाम मे सोनमा बाध अछि, ओना चारू कातक
बीच गाम अछि मुदा दछिनहि बड़ेका बाध माने गामक दछिन
जे बाध अछि, जे बाध मे प्रवेश करिते दछिन मुँहे कि
डेग उठत। ओइ बाध मे एकटा आमक गाछ अछि, जेकरा लोक एकगाछहा सेहो कहै-ए।
ओना सोनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर
नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। ततबे किआए अछिना खेत-
खेतक माटि एकरंगाहो अछि आ अहरंगाहो त अछिये, तैँ कैसो-
पनरह रंगक (किस्म) माटियो अछि आ नीचा-ऊपर रहने
सीढ़ियो त बनले अछि कि ने। खैर जे अछि मुदा
एते त अछिये जे गाछक कमी नइ रहितो कृषक क्षेत्र
त बाध मे अछिये। माने खेती-पथारीक मातैँ कैचगरहु
खेत रहितो अनेक खेती होइए जे मे गाछिओ (बिरछो त अछिये)
एकर माने ईहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अनेक
गाछो होइते छै, पातो होइते छै। तइ मे माइटिक जे अरगरियारो
प्रन छै ओ त आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबै-ए।
जैँ एकरंगाह (एक माटि) रहैत त किछु समटल करौबार
(माने माइटिक अनुकूल उपजा) रहितै, से नइ बेसी रंगक
रहने बेसी रंगक होइते छै। खैर जे हुए, मुदा तइ
बाध मे एकटा आमक गाछ त अछिये। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकै छै।
बाध मे असकर एकगाछहा आमक गाछ, खूब
चतरलो अछि आ नम्हरो (ऊँचगरो) अछि। ओना
ओ गाछ किओ रोपलक आ कि अपने जनमल, से आइ धरि
तक गौँआ नइ फड़िछा सकल अछि। किओ कहै छै
बाबाक जे खवास छल ओ रोपलक, मुदा ओ
बुढ़वा त मरि गेल। रोपल गाछ ने रहि गेलै, मुदा
से मानिनिहारो हुअए तब ने। किछु गोटे इहो
त कहिते अछि जे कौआ पाकल आम आनि मुदा लैलक
आ ओही-खोइछा छोड़ि देलक, ओही ओहीक गाछ
छी। मुदा जे लोकक मन मे (माने गौँआक) जे होइत हो
होउ, ओ परती पर जनमल अछि, केकरो खाप जमीन मे
छै ने, तैँ सबहक छी; सबहक छीहे नइ सब हाटी
मे हरैबो करै-ए आ आमो चटनी ले फरबो करै

पृ० - २

करिते अछि। गाछो ~~कि कोनो सास सावक छै~~ सब रंग होइ-ए, मुदा से नइं, ओ आमक गाछ
देखलक आ कते पीढ़ी (मनुक्ख) कते आगुओ देखत। ओना आगुक निसचित बिसवास
नइ कैल जा सकै-ए, जेना पछला अछि, मुदा बिसवास नहियो
कैल जाए, सेहो ते अउचित नहिये हैत।

ओना जहिना साँसे बाध मे एकटा गाछ रहने एकगाछा
भेल, तहिना हमार बीघाक आमक गाछी मे एकटा बेलक गाछ
एक गछ्छा भेल, तहिना फुलवाड़ियो, सब मे होइते अछि। एकगाछा
रहितो ओ आमक गाछ बुड़हाक त अछिये। अपन चालि-बाइन छोड़ि देने अछि
अनरनेबा आ धात्री गाछ जकाँ बिनु जोड़ (प्रयोग क्रिया) जीबैक
आशो नहिये रखने अछि, सैह सेहो बात नहिये अछि। असकरे
बाध मे अछि, फड़बो करैए, मौजरबो करै-ए, हरिऐबो करै
ए, पतझाड़ो होइ-ए, मुदा जीबक बान्हि जीबो त करिते
अछि। नइ ते असकरे जेना बाध मे अछि तेना से अनार-
नेबा आ कि धात्री जँका बैशो उपैट गेल रहितै। सब गाछक ब्राह्मण लेखा
छै जे समैक मुकाबला नइ करै-ए ओ मेटा जाइ-ए।
मे बिलीन भऽ जाइ-ए। लि मटिया मेट भऽ जाइ छै। पंचतत्व
द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एकगाछा गाछ (माने आम)
अपना कें बुझैत। जहिना ~~भक्ति शील~~ शक्ति शील एकलव्य अपना कें शक्तिवान
बनबै ले शक्तिशालिनीक आराधना कैलैत तहिना ओहो आमक
गाछ असकरे बाधक बीचला उड़ेड़ परती पर ठाढ़
भेल अपना कें बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिये।
हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँ मे कि
सबहक बंशो आ बंशवृद्धियो एके रंग होइ अछि। कोनो
बीआ से जनमै ए तँ कोनो फल से, कोनो पत्ता सेँ जनमै
ए त कोनो गाछक जैर से। केकरो सिर माइटिक तर
मे रहै छै ते ककरो पाइनिक तर मे। ककरो डारिये
मे सिर होइ छै ते ~~ऊपर मे~~। केकरो फुनगी पर फुनगियाइले
दुनियाँ देख देखते अछि। बेचारा गाछ कें (माने आमक गाछ कें)
मन ठहियार लगलै। ठहिआइते मन मे उठलै अनेरे दुनियाँक
बोन मे मन कें बौआबै छी। तइ सँ नीक जे अपन दिन-
दुनियाँ बात ~~बुझबो करब आ करबो करब~~ बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन छहुर
छमैक गेलै। छमकते जेना तीन बड़ी पर डिसास (दिशांश)
लगितो छै, जे से पूब-पछिम भऽ जाइ-ए आ पछिम
पूब, तहिना दिशांश छुटबो करए जइ से उत्तर-दछिन
बौआइ डुआए लगै छै। जे केमहर से एलौं केमहर जेबै

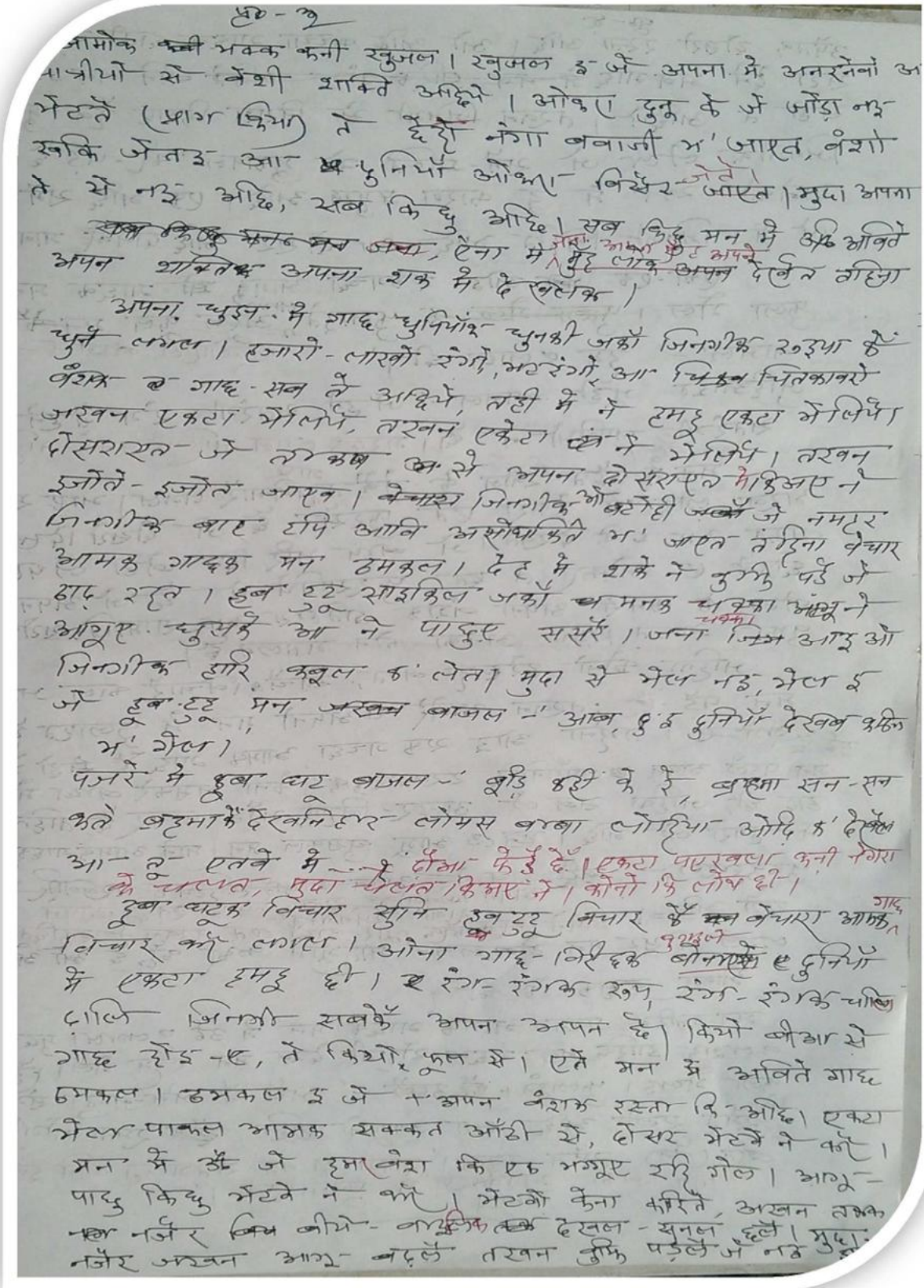

पृ० - ३

आमोक भक्क कनी खुजल। खुजल इ जे अपना मे अनरनेनो अ
मात्रीयो से वेशी शक्ति अछि। ओकए दुनू के जे जोड़ा नइ
भेटतै (प्राग क्रिया) ते हैदौ भंगा बवाजी भ' जाएत, वंशो
खकि जेतइ आ दुनियाँ ओंखा- बिखेर जेतै। जाएत। मुदा अपना
ते से नइ अछि, सब किछु अछि। सब किछु मन मे अछि आबितो
अपन शक्तिक अपना शक मे दे खेलक। ऐना मे मुँह लाक अपन देखैत रहिआ

अपना चुइन मे गाछ धुनियाँ चुनकी जकाँ जिनगीक रुइया कैं
चुनै लागल। हजारो-लाखो रंगो, भररंगो आ चितकाबरो
वैशक व गाछ-सब ते अछिये, तही मे ने हमहु एकटा भेलियै।
दोसरायत जे तेकब अ से अपन दोसराएत भेइअए ने
इजोते-इजोत जाएत। बेचारा जिनगीक ओ बटोही जकाँ जे नमहर
जिनगीक बाट टपि आनि असोथकिते भ' जाएत तेहिना बेचार
आमक गाछक मन हमकल। देह मे शके ने कुनो पड़ई जे
ठाढ़ रहत। हुब टुटू साइकिल जकाँ मनक चक्का आगू ने
आगूए चुसके आ ने पाछुए ससरैं। जना जिम आगू ओ
जिनगीक हारि कबूल क' लेत। मुदा से भेल नइ, भेल ई
जे हुब-टुटू मन जखन बाजल - आंब, ई दुनियाँ देखबे करिके
भ' गेल।

पजरे मे हुब चटू बाजल - बुड़ि कहीं के ई, ब्रह्मा सन-सन
कते ब्रह्माकैं देखलिहर लोमस बाबा लोटिया ओदि क' देखैल
आ तू एतबे मे ... दौआ फेंकई छैं। एकटा पएरखला कनी लेगरा
के चलैत, मुदा चलैत किआए ने। कोनो कि लोच छी।

दुब चटूक विचार सुनि हुब टुटू बिचार कैं बेचारा आमक गाछ
विचार करै लागल। ओना गाछ-बिरीछक बोनगाछ दुइजन दुनियाँ
मे एकटा हमहु छी। इ रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि
ढालि जिनगी सबकैं अपन अपन छै। कियो बीआ से
गाछ होइ-ए, ते कियो फूल से। एते मन मे अबिते गाछ
हमकल। हमकल इ जे अपन वंशक रस्ता कि अछि। एकटा
भेल पाकल आमक सक्कत ऑठी से, दोसर भेटबे ने करै।
मन मे ऊ जे हमरा वंशा कि एक भग्गूए रहि गेल। आगू-
पाछु किछु भेटबे ने करै। भेटबो कैना करितै, अखन तक
नजैर बिच बीये-बाजिक देखल-सुनल छलै। मुदा
नजैर जखन आगू बढ़लै तखन कुछि पड़लै जे नहि मुदा

पृ- ८

तक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छाती से कलशक डारि सटा देने नव गाछ ~~मे नव डारिक संग पनिते~~ बनि नव जीवन सेहो त अछिये। तखन जिनगी से निराश किअए हैब। मुदा जिनगीक लेल जे समै-शक्ति से मुकाबला करे-पड़ै छै ओकर अनेको रूप मे दू कारण प्रमुख अछि। एक अछि समै शक्ति जे मे जिनगी निहित अछि आ दोसर अछि दानवी मानव बुद्धि।

एका-एक ~~[illegible]~~ ओइ एकगाच्छा आमक ~~सो~~ गाछक मन फुला गेल। ~~फुला गेल~~ फुलाइते ~~अइल फुल मनकेँ~~ अइलाएल बाजल - 'हम ए लाल छी।'

जुहिआइत जूही बाजल - 'जे हमें सतरंगी रंग देहले सतरंगी चालियो ने छै। मरदक लाल जहिया बनमे तहिया फुलवारि।'

मन मे उठैत खौंज के रोकैत गाछ विचारै लागल। भाए सात भरख लोक मे केकरा एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस ताकत आ बाकि देखत। जे भरि दिन बोझ छोड़बे ए ओकरा ते एते फुरसतियो ने छै जे अपना पसीना बोझ के कम से अपनो वंशक इतिहास आ सामाजिक सरोकार बुझा सकत। आ अनका कोन मतलब छै।

जहिना कोनो हरेलहा बात, सोचैत विचारैत काल अखन मन पड़ै-छै; तखन अनेरे अपनो मन मे फुलाएल हँसी उठैत छै। तहिना ओइ एक गच्छा आमक गाछकेँ सेहो भेल। मन पड़लै अपन लगौनिहार रखबार, जे केना असकरे बाध मे छोड़ि देलक। जहिना सब के अन्दर-बिहाड़ि, अंधड़-पाथर छै, तहिना ने हमरो ले अछि। सब आगू बुसकल मन (माने आमक गाछक) बुदबुदाएल - '~~अहाँ सब ने अपन आबादि साहित्यक रखबारि ओ एलो अछि~~। अपन जिनगीक सब रूपक रखैत अपने सर्वांग जिनगीक अपने ~~[illegible]~~ कौक चीर-फाड़ हएत तखन ने स्कुड़ित रहि जगले दोसर मन टोकलक - 'मातृभूमि केहन कहै, छै ओ ओझराएल छी ओकर रक्षक के छी?'

मन उत्तरित प्रश्न आमक गाछक मन मे उठै लागल। मुदा कलशक डारिक नव गाछक रौशनी देख मन रहँस गेलै। रहँसिते फुला गेलइ। फुलाइते उठलै - 'अहीं सँ जीव-जन्तुक संग रमैत एलौं अछि आ आगुओ एहिना रमता जोगी बनि (बनि) रमैत रहब।' एकगाच्छा नइ सतगाच्छा बनि इन्द्र-धनुष जका आकाश मे फुलाएल।

समाप्त

कथा - चरिवाह - चैरवाह - चरवाह पे-9

~~और भोरे अपन गाम बड़द कें घर सँ निकालि, बाहरक थैर मे~~ भोरे बड़द कें ~~निकालि~~ घर सँ निकालि थैर मे बान्हि गाए कें घरसँ निकालिते रही। कि नागेसर भाए कें दहिन सँ उत्तर मुँहें अबैत देखलएनि। ओना नजरि ~~प~~ गाए पर छल तेँ नागेसर ~~भाइक कें नीक जकाँ~~ भाए पर अनचे नजरि पड़ल जहिना चेहराक रंग-रूप नीक जकाँ नहि देख पेलौं मुदा नागेसर भाए कें त देखबे केलिएनि। हाथ सँ गाएओ कें खूँटा मे बान्हैत रही आ मुँह सँ नागेसरो भाए कें कहलएनि - 'भाए, कते (कतए) सँ भोरे-भोर अबै छी,? ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~

ओना चारि-पाँच बर्ख नागेसर भाए जेठ छथि, तेँ सामाजिक लोक लाजे भाए कहै छिअनि। ने ओ अपन परिवारक छथि माने वंशगत परिवारक आ ने ~~ल~~ लतड़ल लत्ती जकाँ दियादे वादक छथि मुदा समाजक बीच जे धारा प्रवाहित अछि तइ हिसाबे भाए कहै छिअनि। सामाजिक धारा ई अछि जे उमेरक हिसाब सँ आनो-आन कें, माने जे अपन वंशगत परिवारक नहिओ रहै छथि हुनको लोक बाबा, काका, भैया इत्यादि कहिते छथि। तही हिसाब सँ उमेरे हुनका भाए कहै छिअनि। गाइयक डोरी बान्हि आगू बढ़लौं ~~कि~~ तावे नागेसरो भाए रस्ता पर सँ उतड़ि दरबज्जा लग पहुँच गेला। लग पहुँचते नागेसर भाइयक चेहरा पर नीक जकाँ नजरि पड़ल। नजरि पड़िते बुझि पड़ल जे असली मन पानि मन पड़ पड़ल छनि। किअए तँ जेहिना मेघ जकाँ घोघ लटकल देखलएनि। मिरमिराइते नागेसर भाए बजला - 'ओहिना गाम मे घिढ़िआइ छी।'

नागेसर भाएक गपक कोनो अरथे ने लागल। तइ पर मुँहो लटकल छलनि आ चेहरोक रंग उड़ल-उड़ल सन छलनि जइ सँ अनेको प्रश्न मन मे उठि गेल। मुदा एक त भोरक समय, पच-कुच नहियो बाजल जा सकै-ए आ दोसर दरबज्जा पर छथि। हुनकर बात कें टहलबैत बजलौं - 'बैसै चौकी पर

पृ०-2

(धावज्जक चौकी पर) बैसि तमाकू खाउ, पद्धति दुनियाँदारीक गप-सप। 'हँतइ।'

ओना ओरे-तर नागेसर भाएक मन मन्दुआएल रहैत करानि मुदा विचार कें पेटे मे दाबि कें रखने छैला। जँ आन ठाम आन गोटे एना रहितथि तखन त प्रभावशाली भाषण कैत अपन प्रभाव सँ प्रभावित कऽ लेने रहितथि (रै हतैथ) मुदा अहिना हम हुनका चिन्है छिअनि, तहिना ओहो हमरा चिन्हते छथि तँ वाणी कें समेटि मन मे रखने छैला। नागेसर भाएक चेहरा सँ अनेको रूप टपकि (टपैक) रहल छलनि, जेना मुँह किछु लटकल छनि, ओरे-ओर कत' छिछिआएल छथि, तइ पर सँ पैंइसठि (पैंसैंट) बरखक टपान टपल गामक एकटा प्रबुद्ध जन छथिये। गामक असी सँ नबे प्रतिशत लोक हुनका आदरक नजरि (नजैर) सँ देखैत छनि जेकर जीवंत रूप छनि जे नवतुरिया धिया-पुता मे कियो ओझहा बाबा, तँ कियो भगत बाबा त कियो गुनी बाबा कहैत छनि। तइ संग ओइ सँ उपरका लोक माने, चेष्टगर लोक, सेहो कियो भगत काका त कियो गुनी काका सेहो कहैत छनि। अनिजाति त सहजे बताह भेल छथि। जइ सँ कतेक जे नीक नाम रखने छनि, से कहै छनि। तहिना तइ सँ उपरक माने उमरदार आदमी (लोक) सेहो भगत भाए त गुनी भाए सेहो कहैत (कैहते) छनि। मुदा हम तइ सब सँ अलग सोझे भाए कहै छिअनि, उमेरक लेहाज सँ।

नागेश्वर भाएक रूप-रंग देख अनेको प्रश्न मन मे उठि रहल छल जे पुछिऐनि मुँह किअए लटकल अछि आ ठोर सँ फुफड़ी किअए उड़ि-ए। मुदा अनेरे किअए फूस-फुस मे फूसा-फूसा संग अपनो सार्थक समय कें निरर्थक बनाबी। करैब जे टोकबै किअए कें लिखनि तइ मे हुनी नजरि (नजैर) मिलानी भ' गेल। नजैर

पृ०- ३

मिलानी ई भेल जे जहिना गाइयक डोरी पकड़ने रस्ता दिस तकलौं तहिना चरपयाएल नागेसभाएक मन सेहो चरपटाएत देखलिऐनि (देखलऐनि) जे जरू से भोर दुआरि मन मे आबि गेल जे भरिसक तमाकू दुआरे हस्तभेद नीक नइ भ' रहल छनि तेँ कछमछाइ छथि, तेँ कहल-एनि, तमाकू खा लिअ।' जँ कोनो मुसीबत मे पड़ल छथि ते अपने नेँ मुँह खोलता। ओना मुसीबतो नीक-बेजाए दुनू होइ-ए दुनू (माने मुसीबत) के अपन-अपन भाँजि छइ। जे नीककृति ले मुसीबत पड़लनि ओकर महत अलग भेल, आ जँ अधला कृतिक मुसीबत छी त ओकर महत अलग भेल। आँखि मूनि सभक मुसीबत कैँ एक्के कसौटी पर तौल बाजब ओ त आँखिमुना गुण भेल। ओना आँखि मुनो गुण सेहो दू रंगक अछिये। एकटा अछि नीक कैँ आँखि मूनि मानि आँखि मूनि चलब आ दोसर भेल अधला कैँ नीक मानि आँखि मूनि मानब आ चलब कानून।

ओना सँपकट्टा वा घुघुनरि कट्टा जेँका भीतरे-भीतर नागेसर भाए कछमछाइते छेला, तेँ तुनऽ जे बफरि कैँ बाजी मुदा चालीस सालक पँछला जिनगी दुनू गोरे कैँ एते दूरी बनाइये चुकल अछि ए जे जहिना विषुवत रेखा टपला पछाति लोक कुहू-ए जे हम उत्तरी ध्रुवक यात्रा पर छी आ दछिनी ध्रुवक। तइ बीचक लोक त बुझिये ने पबैए जे दुनियाक दुटा छोरो अछि आ दू टा धुरियो अछि आ अपने त कोन छोर पकैड चलि रहल छी। बड़ीकालक पछाति, तइ बीच एकबेर तमाकू खा थुकैर सेहो फेक चुकल छलौं आ दोसरो जुमक तैयारी मे थोपड़ी द' तमाकुलक गरदी कैँ उड़ा चुकल छलौं, नागेसरभाए बजला –' आब जीव कठिन भ' गेल। सौंसे दुनिया

पृष्ठ-४

बेर उजड़ि गेल।'

आब जीब कठिन भ' गेल, नागेसर भाएक ई विचार अपनो नीक लागल जे अपनो जीब त कठिन भइये गेल अछि, मुदा दुनियाँ "एके बेर दुनियाँ उजड़ि गेल"। एकर कोनो माने लगबै छने केल। तइ मे अपने उजड़ब माने अपन परिवारक उजड़ब आ दुनिया उजड़ब दुनू दू भेल। दुनिया ते सदिकाल उजड़ैत उजड़ैत रहै-ए आ बनिते रहै-ए, मुदा अपन जिनगी त से नइ छी जे सदिकाल बनत आ सदि काल उजड़त। ओकरा त अपन आधार छै, जेकरा चारू संग बाटे बनल छै। बजलौं- 'भाए ई कि कहलियै जे एकेबेर दुनिया उजड़ि गेल? जँ दुनियेँ उजड़ि जाएत तखन रहब केतऽ?'

जहिना हृदयबेधी बाण लगने लोकक मन थरथरा जाइ-ए हृदय हलमलित हुअए लगै-ए तहिना नागेसर भाए के सेहो हुअए लगलनि। मन थरथरा लगलनि जइ सँ मुँहक बोली बन्न भ' गेल छेलनि। मुदा जाबे अपने मुँहे अपन बेथा नइ बजता ताबे बुझब केना। तइ मे ओहन लालबुझक्कड़ नहियेँ छी भुतलग्गू जेकाँ अनेरे बड़बड़ा लागब। मन मे भेल जे दोहरा कँ फेर पुछियनि मुदा लगलै इहो भेल जे नइ सुनने रहितथि (रहथिन) तखन ने पुछब उचित होएत, मुदा जखन लग मे बैसल छथि तखन नइ सुनलनि सेहो केना मानल जाएत। भ सकै-ए जे जँ सब शब्द नहियो सुनने रहितथि तखन उनटा के तँ पुछले जा सकै ए। सेहो नहिये पुछलनि। तखन किअए ने बाजि रहल छथि? मन मे इहो हुअए जे भ' सकै-ए कोनो ऐहेन काज है भेल हेतनि जइ सँ जिनगी त प्रभावित होएत हेतनि मुदा लाजक संकोचे नइ बजैत होथि।

चालिस-पेंतालीस बर्खे सँ नागेसर भाए चरिबाहक काज कैत आबि रहल छथि। चालीस कि पेंइतालीस वर्ख तँ डायरी मे लिखि कँ नइ रखने छी जे निश्चित कहब मुदा अनुमान सँ कहि रहल छी। किअए त जखन उठैत जुआनी नागेसर भाएक छलनि तहिये सँ देखैत आबि रहल छी नागेसर भाए गामक एक नम्बर चरि

कथा - चटिवाह - चटवाह - पृ०-५

छथि, केहनो सापक काटल बीख कें चाटिये सँ उतारि दैत छथि। तहु मे केओ ऐहनो जँ सपकटिया भेल तेहनो ओ खबरि (जानकारी) होइते अपनो वा आनोक काज कें छोड़ि दौड़ल जाइ छलाह। जाति-पाँजि, दियाद-वाद किछु नै मानै छेलखिन। अपना कें उपकारी कहि उपकार कें पहुँचिये जाइ छथि। चलतियो ऐहेन जे तीन-तीन, चारि-चारि टा सापकटलाहक नम्बर लागि जाइ छलनि।

ओना अइ गाम मे बिसहाराका गहबर छल तइ गामक लोक कें चटिवाह बनब असान छल। किअए त दसमी मे (दुर्गापूजा) जखन दसो दुआरि सबहक खुजि जाइ-ए तखन बिसहाराक गहबरक भगत (भगता, पुजेगरी) सेहो दसमीक पहिले दिन सँ गहबर मे भगतै करै लगै छेला, रंग-रंगक डाली पहुँचते छलनि, केकरो धिया-पूता नइ होइ छल तेकर डाली, त केको घर मे डाइन-जोगिनक उपद्रव बढ़ि गेल, तेकर डाली त केको धिया-पूता बहुवारि भ' गेल तेकर डाली पहुँचते छलनि आ साँझ पहर जखन गोसाइ खेलाइ छेला माने देवता देह पर अबै छलनि, तखन फुल-अच्छत (अक्षत) भूभूत सँ ओकर गुहारि करिते छला। जहिया मरला माने भगत (पुजेगरी) मरला तहिया सँ भगतैओ बन्न भेल आ गहबरो खसल। खैर जे भेल। गामोक लोक (जे चटिवाइ के बनै चाहै छल) आ आनो अड़ोस-पड़ोसक गामक लोक आबि-आबि चाटी धरै छल आ जेकर चाटी उठल माने आगू धसकि चटिवाहि कें छोड़ै उठल, ओ चटिवाह बनै छल। नागेसर भाए चनौरा गहबर सँ सीख छेला। इलाका मे सबसँ जगता-जोर गहबर चनौरा गहबर कें बुझल जाइ छल। महेंथानाथ छेला। ओना छोट-मोट (ग्रामीण स्तरक) स्वास्थ्य केन्द्र सेहो बनौने छेला। जइ मे डॉक्टर (एम०बी०बी०एस०) तँ नहि छल मुदा एकटा नर्स जरूर

छै रहै छैली। ओना ओहो तेहेन ट्रेंड (ट्रेनिंग केल) नहिये छैली मुदा पित्ती डॉक्टर के रहने बहुत-किछु सीख लेने छैलीहै। मरीज जी मरीजे जी छैलाह। किआह नइ केने छैला। ई दीगर भेल जे अपने ऐनाम मरीज जी ओकरा (नर्सके) रहैक लेनस्था केने छैला। आन गामक बेचारी नर्स, तैं डेराक (रहैक) जरूरत रहबे छनि। तइ पर सँ मउनथानाक अगवास मे डेरा भेटि गेलनि। मुदा ऐहेन कहियो ने भेलैन जे कुत्ताक बीरन जैंका लसरि (लसेर) लगलनि।

अनहरिया परनक तृतीया (तिरतिया) इजोरिया (चान) जैंका गाम मे चान (कुइयाक) जरूर उगि चुकल छल मुदा छोट रहने (कम समयक प्रकाश) गाम अन्हारक अन्हार मे पड़ै जाइ छल। जइ सँ जिनगीक सब स्वागताक रस्ताक दुआर जरूरतक रास्ता बाधित छलै मुदा केतौ लोक पहुँच आएल छल तैं ओकरा मन-चपेट नइ छैलइ सेहो त नहियें मानल जा सकै-ए। सैं त छलैहै, तैं अपन विचार सेहो छलैहैआ विचारक विसवसनीयता विचारो विश्वास नीय (विसवसनीय) सेहो छलैहै। ओही जिनगीक जुग छल जइ मे ओझा-गुणी, चटिबाह, डानि-जोगिन सब-हक उतपति (उतपैत) भेल छल।

अपना सबहक इलाका केहेन अछि (भौगोलिक दृष्टिसँ) आ केहेन छल से त सब भोगिये रहल छी जे गामक फेदार मोरंगक दफेदार बनिले अछि। एक दिस कोशी धारक बाढ़िक पाइनिक विभीषिका जइ मे नेपालक पहाड़ो आ जंगलो झाड़ सँ बाढ़ि मे साप भसि-भसि आबियैजाइ छल। अठैन सतासी ईस्वीक (माने १९८७) बाढ़िक विभीषिका जेकाँ पहिनो भेल हुअए, ते भेल हुअए मुदा तीन-चारि जेनरेशन सँ नहि भेल छल, जइ मे सापक उपद्रव नीक बहुत बेसी छल। तइ सँ पहिने सपकटियाक संख्या बहुत बेसी छल। वैज्ञानिक ढंग, वैज्ञानिक ढंगक माने भेल जाँचल-परिखल ढंग, जे विसवसनीय अछियैं।

पृष्ठ-6

तेहन बहुत रास अभाव छल। ओना दुनियाक आन-आन किछु देश अगुआएलो, आर किछु पछुआएल सेहो छलै, मुदा अपना सब हजारो बरखक गुलामी सँ लगले निकलल छलौं, तैं अभावे-अभाव सब कथुक अभाव छल।

दोसर उपरान्त सापक भुमकम मे भेल। धरती डोलने बिल सब दबाएल जइ सँ बिल मे रहैबला साप नष्ट भेल। ओना सापोक वंशवृद्धि अलग-अलग अछि। किछु साप बच्चा दइ ए तँ किछु साप अन्डा दइ-ए। तइ संग प्रकृति प्रदत्त सेहो अछि। अगता बरखाक मौसम मे सापक पतौरा धरती पर अकास सँ खसै-ए जइ मे सैयक-सय साप निकलै-ए। नवे-बेरानबेक शीतलहरी, बिनु विषैला सँ विषैला साप खासकए गहुमन), कैं तेना उपटौलक जे बीछा गेल। तइ संग अस्पतालो सब मे आ प्राइवेटो रूप मे सापक बीखक इलाज हुअए लागल जइ सँ सपकटिया (माने सापक काटल) मृत्युक दर क्रमशः आजुक आर्थिको दृष्टि सँ आ जरूरतोक दृष्टि सँ लोक सजग भेने कैल अछि जइ सँ सापक कौन बात जे दुधुएँ कटलाह डॉक्टर ऐठाम पहुँचै काल अछि। सापे जकाँ पाँखिबला फँनगा-फँनगी सेहो जनमारा अछिये मुदा तेहू सँ लोक कैं आफियत भेटिये रहल अछि।

समय आगू बढ़ल, नागेसर भाए सन-सन कते लोकक हाथक काज छीनाएल। जखन हाथक काजे छीना गेल तखन इ हाथ कात क' की, आ नइ कात तँ खाएत कि अहीं-चौबट्टीक मोनि मे नागेसर भाए खसला अछि। खसला पद्धति सुमारक होइ छनि, जे जइ समाज मे पेटक संग बिचारो चलैत छल, से जिनगियो आ उनटि (उनेट) कँ पुनह-बिलैट गेल, आब कते रहब? सुमारक होइ छनि जे जइ जिनगी मे भैया, काका, बाबा बनि जीबै छलौं तइ ठाम कौंचिगक (प्राइवेट इस्कूल) मे जे छौड़ा सब ओ सेहो-सब तेना कें ताना मारै ए जे दे

पृ० ८

झनझुना कैं तुनतुना-तनतना जाइ-ए मुदा कलेकि। आब कि हमर ओ उमेर अछि छौड़ा सब सें मुँह लगाबीक। सुमारक हेंइ छनि जे जइ हाथक चारी बले छोंओ ओहुन जिनगी बना चलैत आबि रहल छौं, तइठाम कोनो पूछ नहि। जइहँतरें तर नागेसर भाएक मर्म भीम जेकाँ पिघलि (पिघैस-पिघैल) जरि रहल छनि मुदा मनुमे एते शक्ति नहि जुटा पेब रहल छन्हि जे अपन जिनगीक हार केजीत दिस बढ़ौता। तकरा अवसरे नीके-नीक जिनगीक बीच नै जीबैत आबि रहल छी तहन बीच रस्ता पर ओहुन मौनि कैना फुटि गेल जे कुरूके नै देलौं। झौंकमे झोकाएत नागेसर भाए बजला- 'रस्ते पर मोनि फुटि गेल।

ओना रस्ता पर मौनि फुटबक एक माने भेल जे बाढ़िक समय रहैन होइ छै जे धारक प्रबाह मैं रस्तावें टिट-टि रहिते धारक मेंड सेहो बनै-ए जइ सैं मोनि फुटै छै। दोसर होइ-ए जे चढ़ान सँ निचान माने उपरक जमीन सँ नीचरस जमीन मे धारक चौड़ी सँ जे उरवाछ बनै-ए ओहि बढ़ैत -बढ़ैत मोनि बनै-ए जे नम्हरो-गहीरो बनै-ए आ कुवरो आवर बनिते अछि। मुदा ऐठाम त नागेसर भाए जिनगीक गप (विचार) कऽ रहला अछि, खेत-पथारक रस्ताक मोनि जेकाँ ओ मोनि थोड़े हएत, तैं किअए ने नागेसरे भाए सँ बुझि ली। बजलौं- 'कि मोनि कहलियै भाए?'

हमर बात सुनिते नागेसर भाए कैं मन मे जेना खौंत फेंकलकनि तहिना बजला- 'अपन मनक मोनि सेहो फुटल अछि आ गामक जे छौड़ा-माड़िक विचार सुनै छी तै बुझि पड़ै-ए जे अपनो सें बेसी ओकरो सबहक मोति फुटल छै। कि करबह?'

नागेसर भाएक जिनगी ओहने बुढ़िया-बुढ़वा माछ जेकाँ भऽ गेल छनि जहिना सौंअरी महाषि यमुना (जमुन) नदीक जल मैं तपस्या करैत नदी माछक गति देखलौनि जइ सँ जहिना विराग उत्पन (उतपन) भेलनि तहिना तै नै नागेसरो भाए

कथा - परिवार - घरबार - पृ०-V

सैहो भ' रहल छनि। फेर लगलै मन मे उठल जे सौभरी ऋषि जेँका नागेसर भाए जलसमाधि छोड़ि नेने छथि। जे विचार सँ वैरागपन औतनि। हिनका ते, माने नागेसर भाए कें, गरदनि मे बड़का ढ़ोल बान्हि देबनि तइओ बकार नइ फुटतनि। मन छलकि (छलैक) गेल जइ सँ विचारक धारा एकाएक धड़धड़ाएत निच्चा खसै लगल। - मुदा तइओ खसैत-खसैत मन बजिते गेल जे जहिया सँ अहाँ कें (माने नागेसर भाए कें) मनाही कैल एलौ जे मनुख बनि जखन जन्म लेलौं तखन मनुखक रूप धारण करब तखने ने मानव कहाएब, से भरि दिन गुरुआइ कैत रहि गेलौं आ आन कनैं छी।' मन कें मारि बजलौं -' भाए, आब अहाँ के कोन मतलब ऐ दुनिया दारी से अछि, नै रहब ओइ टोल ने सुनब ओकर बोल', बेटा कैँ सँ खरचा लिअ आ दरबज्जाक ओसारक चौकी बैसी रस्ता दिस तकैत बाजु 'सीताराम, सीताराम राधाकृष्ण राधाकृष्ण, करु।

इमर बात सुनिते नागेसर भाएक मन जेना फुटि कैं छिड़िया गेलनि तहिना बजला -' बौआ, तोरा से लाथ कि, दुनू बेटो मुँह फुला कैं अपन-अपन बहु-बेटा ल' क' जतै नौकरी कैं -ए तत चल गेल अछि। दुनू परानी बुढ़ा-बुढ़िया घर मे छी।'

बजलौं -' बेटा किअए मुँह फुलौने अछि?'

नागेसर भाएक बेइमान मन इमानक धरती पकड़ि लेलकनि, जइ सँ विचार मे बदलाव आबि गेलनि। बजला - बौआ, इमान-धरम से बाजै छी-, दुनू बेटाक परोछक बात छी, जेठका बेटा साइंस (विज्ञान) पढ़ने ने खोट-कमा भइये गेल। बेर-बेर ओ मनाही कैलक जे अहाँ झूठ-फूसक धोधा छोरु, मनुख छी मनुख जेकाँ रहू, मुदा----?

पृ०-१०

मुदा कहि नागेसर भाए चुप भ' गेला। मन मानि गेल जे वैह लग
अपन दोरव कबूल नइ कौं चाहै छथि, बजलौ-' ई कहै जेठका बेटा
(बेटा) अपन जेठपन देखौलक, ~~ते~~ तैं फुलि रहल मुदा छोटका किअए
~~केलक ह~~' फुलल अछि?'

नागेसर भाए बजला -' जेठका ओकरो तेना कैं दुइर केलकै
जे ओकरो ओहिना दुरि भ' गेल। हमरु अडि ~~[illegible]~~ गेलौ,
आमदनियो छल आ समाज मे पूछो त छलैहे।'

बजलौ -' अच्छा आब छोड़ु माया जाल कैं, बेटा सँ खचा
दिया दइ छी। शान्ति सँ रहु।'

समाप्त
६।६।०१८ ई०

कथा – भगैत – भगैतिया – पृ०-१

तीस वर्खक पछाति गोपालपुर गाम पहुँचले मन पड़ला दुखन भगत। कोशी धारक बीच ओ गाम बसल अछि। ऐहेन शंका नइ करब जे धारक बीच गाम केना बसल अछि। धारक पेट मे ते पानि रहै छै तइ बीच घरो केना बनत आ बिनु घरे गाम केना बसत। सब कि, सोंभरिये ऋषि जकाँ नइ ने छथि जे जलक भीतर समाधि योने रहता। धारक बीचक माने भेल जे गोपालपुर गामक अपन सीमा-चौहद्दीक निर्धारित जमीनक बीच अछि मुदा धारक ते कोनो सींग-नाङरि छैक नहि जेमहर मन भेलइ तेमहर बिदा भेल। भलें नामक संग गुण-धर्म किअए ने जोड़ धारक रहै रहए मुदा जेइ गामक देने मुँहे बनौत तइ गामक माटि ओहिना छोड़ि देतइ, ओ त ओकर गुण-धर्म के प्रभावित करबे करत किने। खैर जे कौं। पहिने जे कोशी धार बहैत छल माने तीस वर्ख पहिने, ओ गाम सँ माने गोपालपुर सँ पुब भऽ उत्तरे-दछिने बहैत छल। साले-साल पछिम मुँहे कटनिया करैत घुसकै लागल। गामक (गोपालपुरक) जीवन (माल-जाल, मनुखक) दूभर हुअए लागल, मुदा गामक लोक कैं छोसर चारे कि? ओना किछु गोरे परिवार संग गाम छोड़ि नेपाल मे बासि गेला, किछु नोकरी करैत शहर गेला ओ ओतइ रहैत घर बना लेलनि। मुदा गामो त गाम छी, कतबो लोक मिथिला छोड़ि बाहर बिदेश तक किअए ने बसल हुअए मुदा मिथिलाक जनसंख्या ओइसँ मेटा थोड़े गेल, ओ त तेहेन माटि-पानिक पाबनि अछि जे आन देश मे दर्जन बिदुआन पैदा केला पर (बाल-बच्चा) पुरस्कार भेटैत-ए, मिथिला मे ओहन-ओहनकें मानियो ने कहै छैत।

तीस वर्खक बीच गोपालपुर गाम एकैस बेर घरारी बदललक। जे धार गामक पुब बहैत छल ओ आबन गामक पछिम देने बहैत रहल अछि, मुदा पुरनो धार सभकें पेट त ओहिना बनल अछिये बरसात मे पानि सँ भरबे करै-ए, तैं कोशी धारक बीचक गाम भेल गोपालपुर।

पृष्ठ-2

तीस वर्खक बीच गोपालपुर नइ जाइक कारण कि भैया जेठाम जेबाक कारण अछि तेठाम नइ जेबाक कारण कत' सँ आयल। भाए, अहाँ सँ लाथ कि, तीस वर्ख पूर्व गोपालपुर सँ आवाजाही नीक जेकाँ छल। कम सँ कम साल मे एक बेर, नइ जँ परिवार मे बैसी काज भेल (ओहुन काज जइ मे नोत-हकारक चलनि अछि) तँ दुइयो बेर तीनियो बेर जाइ छलौं। नइ जाइक कारण भेल जे बादिक समय (बरसात मौसम) बहीनक सासु साप कटने मरि गेली ओही मे नोत पुरै गेल रही। तीन टा धार मे, ओहिन धार जे भुतिया भेल छल माने मरैन भगेल छल, डूबै लगलौं। तेसर बेर जखन बचलौं तखन मन करलक जँ अपने आँखि मुनइ जाएत तखन ऐहेन-ऐहेन संबंधक कौन बेगरता अछि। पारिवारिक संबंध अछि, बड़बढ़िया। सब जखन परिवार मे छीहे तखन अपन-अपन परिवारक रच्छा कौन ने दोसरोक काज। ओही बादिक डरे तीसँ साल सँ पधुअबैत आबि चुकल छल, तँ तीस वर्खक पछाति गोपालपुर गेल छेलौं। रस्ता कातै मे दुखन भगत कें देखलिऐन। दुनू आँखि सँ आन्हर दुखन भगत एकचारीक दरबज्जाक चौकी पर बैसल। नजरि पड़िते अपन मन टोकलक। मन टोकलक इ जे जइ गाम पहुँचबै ओइ गौँआ ने आगत बुझि टोकता।

आन्हर दुखन भगत, देखबे ने केलनि तँ टोकता कि। धोरबे-धोरबी मे दुनू गोरे बीयानक-बीयान बनले रहलौं। ओना कहब जे एहनो त बहुत लोक छथिये जे अपन पद-गरिमा कें निमाहैत अगुआ कें नहि टोकै चाहै छथि। भाए, जहिना-पसीन अपन अपन होइ-ए तहिना ने बिचारो अपन-अपन होइते अछि।

सूर्यास्तक समय भ' गेल छल। आइ सँ दस वर्ख पूर्व बहीन मरि गेल, मुदा परिवारो बचल छै आ गामो बँचल अछिये। ओना स्वतंत्र देशक जेते तेजी सँ उन्नैत कौंक चाहैत गाम कें छल तेते त नहिये भेल अछि मुदा किछु-किछु त भेबे केलए अछि। सड़क आ सड़क मे पुल (धारक) बनने गाम अबै-जा

सुविधा बनि गेने गाड़ी सवारीक अवाजात सेहो बनिये गेल अछि।

ओना तीस वर्ख पूर्व जे घर-घरारी बहीनक छल ओ आब नहियेँ अछि मुदा ओइ सँ नीक अखुनका अरुर बनि गेल छै। पुछैत-पुछैत पहुँचल छलौं। पहुँचते परिवारक कियो ने चीन्हलक। परिचय देत भेला पछाति चीन्हलक। चिन्हते हेरी आगत-भागत कौं लगल। कुशल-छेम पुछला भेला पछाति भाँज पा चढ़ल जे अपन परिचित एको गोरे नहि, सिवा दुखन भगत छोड़ि गाम मे कियो दोसर नहि अछि। ओना बहीनक परिवार जहिना लोक सँ सम्पन्न बुझि पड़ल तहिना गुजरो-बसत सँ। अपना हमरा सँ जेठ मसियौत बहीनक सासुर गोपालपुरधी। मौसी केँ एकोटा बेटा नहि दु टा बेटिये टा। मौसीओक आवाजाही अपना ऐठाम आ अपनो सबहक आवाजाही मौसी ऐठाम तहिये सँ छल जखन अपनो जन्मो ने भेल छल। जहिना मौसी कैं नैहर छुटि गेल छलनि तहिना अपनो मात्रिक आ माइयोक नैहर छुटिये गेल छल। किअए त नैहरक गाम सँ कमला नदी धारक दहिन छहिना मुँहथरि भद्दा पड़ने उपरि गेल। सब माने मामाक परिवार गाम सँ उपटि कलकत्ता मे कमेबो करै छथि। छथि आ भाड़ाक घर मे रहबो करै छथि।

जहिना माए मौसीके परिवार कैं नैहर जेकाँ बुझै छथि तहिना मौसियो बहीनक परिवार कैं नैहर बुझि नीक जेकाँ आना-जाही रखने छेली। जइ सँ अपनो सब मौसी गाम कैं मात्रिके बुझै छलौं। मौसी कैं दू टा लड़कियो (कन्ये) टा छलनि लड़का नहि छलनि। संजोग ऐहेन जे अपने दु भाउये छी बहीन नहि अछि। भर-दुतिया मे अरबधि (अरबैध) कैं जाइते छलौं। ओना अपना ऐठामक परम्परा मे एक बहीन कैं दोसर बहीन ऐठाम ऐवा-जेवाक बेवहारिक चलनि (चलैन) नहि अछि मुदा परिस्थिति त सब कथू कैं बदलै-चालि अछि। तही बदलल परिस्थिति मे मौसीक आवाजाही सेहो अपना ऐठाम भेलाक आ माइयो मौसी ऐठाम अबै-जाइ छथि

पृ०-४

मसियौत दुनू बहीनक विआह भेल। जेठ बहीन के गाम सँ सटले दोसर गाम मे भेल तैं आएब-जाएब असान छल मुदा दोसर बहीनक सासुर गोपालपुर भेल।

जलखै-चाह कैला पछाति मन गप-सप करैले उनिया लगल। केकरा सँ गप करब। मन तेना उनिया गेल जे किछु सोचैके ने लगैत छल। गप-सपक माने भेल जे बराबरी मे दुनू दिस सँ चलै-ए। एहन त सँ नहि अछि। जहिना बचइन भागिन-भागिनी अछि तहिना सियनगर मरदामरदी नहियेँ अछि। बच्चा सभ सँ गप-सप करैक मन नइ भेल। अबन पढ़ब-लिखब दिस धियांनो ने गेल। अखन खुशी-दुखक गप-सप करैक मन अछि। तइ ले ते ओहन संगी चाही। हारि-थाकि दुखन भगत लग बिदा भेलौं। तइ सँ पहिने आँज लगि गेल छल जे दुखन भगत दुनू आँखियेँ अन्हरा गेल छथि। एहेन मुशीबत मे जखनि पड़ल छथि, तेहन जँ हम अपन गाँआ-अनगाँआक बड़प्पन ताकै लागी, ई नीक नहि। दुखन भगत एकचारीक चौकी पर असकरे बैसल।

मन अछि तीस बर्ख पूर्वक दिन, जखन दुखन धामिक ओइ समय मे दुखन धामि सँ मानल जाइ छेला, एकाद दिन-राति दस गोरे दरबज्जा पर बसिते छेला खेनौ-पीबो करैत छला आ झालि-मिरदंग पर भगैतियो गबै छेला। आइ दुखन भगत, असगरे जिनगी सँ उतड़ि (खसि) एकचारीक जिनगीक बास कए रहल अछि। गाम-गाम बिजली भेलो पछाति गोपालपुर मे अखनो डिबिये-लालटेन अछि। सीसीक डिबिया के गरदनि मे ताड़ बानि चार सँ लटकल डिबियाक इजोत। फड़िके सँ बजलौं- धामि सहाएब, नमस्कार।

नमस्कारक उत्तर नहि दइते दुखन भगत बजला-
अहाँ के चिन्हलौं नहि?

दुखन भगतक विचार सँ भिसियौ भरि मन मे कुबाथ नहि भेल जे दरबज्जा पर आएल अभ्यागत कै एहेन बात विआह करैक बेचार केलौन। सब कि अछि अभ्यागत दानी नाव नहि ने छथि जे बिनु परिचय उदेनी दैत

कथा - भगैत - भगैतिया: क्र०-५

असीरवादी दए देता। अपन त देखल सुनल दुखन भगैत छथि जिनका जवानी-जुआनी नेने चमकैत छलनि जे। शरीर सँ अबल भ' गेल छथि मुदा मन त औइरो ने छनि जे धरमराजक भगैत गबैत-गबैत भालि-भिरदंग बनि जाइ छेला। एक्के पाँती मे बजलौं- फल्लाँ छी, गामक फल्लाँ छी।'

नाम सुनितो अन्हाएल आँखिये चौकी प ठाढ़ कै दुखन भगत भ' दुनू बाँहि पसारि छाती मिलबे चाहैलनि मुदा तइ बीच मनाही कैत बजलौं- ' अहाँ जत' बैसल छलौं, तत' बैसि रहु, हमहूँ चौकिये पर कात मे बैइसै छी।'

जहिना बजलौं- तहिना दुखन भगत अपना-जगह पर बैसि गेला। बगल मे हमहु बैसलौं। दुखन भगत पुछलनि- ' देश-कोसक हाल कहूँ।'

दुखन भगतक प्रश्न सुनि धुन्द भ' गेलौं जे अपने आन्हर भेल एकचारी मे असकरे बैसल काढ़ि कारि रहल छथि तखनो देश-कोसक हाल-चाल पुछलनि। विचार कैं मोड़ैत बजलौं- ' यार, कि कहब देश-कोसक हाल, परिवारे मे तेना ओझरा गेल छी जे किम्हरो तकैक पलखतियो ने होइ-ए।'

हमर विचार जेना दुखन भगत कै नीक लगलनि तहिना बजला- ' सबहक त येह हाल अछि।'

गर मेटल बात कैं आगू बढ़बैत, ओना अपनो बुझल अछि जे दुखन धामि कैं जखन पाँच टा धिया-पूता भ' गेल छलनि, तखन पत्नी मरि गेलनि। चालीस-पेइतालीस वर्खक उमेर तहिया दुखन धामिक रहनि। कि बोलक टाँस, आ भगैतिक सुर छलनि कंठ मे, केकरो मोहितपर शक्ति छलनि। बीस-बाइस वर्खक एकटा लड़की फनींद (फनौद) कैं दुखन धामिक संग बियाह ए कथी परतरफी भ गेलनि जे पाँचो बेटा-बेटीक निमरजना हम अपन कोखिक बेटा-बेटी जेकाँ करबै। दुनूक बियाह भेलनि।

पृ० - ६६

ओना अपना मैं मन मे छल जे दुखन भगत सँ भगौतिक संबंध मे कुनी मुदा से भेल नहि। कोसिते दुखनभगतक समदाही स्त्री, (माने दोसर बिआही) समदाही ऐ दुआरे कहलौं जे जखन रूपनी अपन परिवारक विचार सँ छिटकि (छिटैक) दुखन भगत पर आसक्ति अनुरक्त भ' गेली, तखन भगौतियो समाज आ गामोक समाज संबंध स्थापित करौलनि तैं समदाही स्त्री। मुदा रूपनीक विचार से नहि छलनि, ओ स्वयंवरी बिआह मानि अपना कैं बियौती स्त्री मानै छथि। खैर जे अछि ओ दुखन भगत आ रूपनीक बीचक अछि। तइ सँ हमरा कोन मतलब, छिपली मे दु कप चाह नेने रूपनी एकचारी मे पहुँच बजली- 'पानि खाइ छी कि सिगरेट पीबै छी?'

रूपनी हाव-भाव आ बेवहार देख अपन मन सीक पर लटैक गेल। एक दिन देखी जे ओ बोस धरती पर ठेंठे ओकरा जैं घरक चारक मे लटकल सीक पर रखि दियौ ते ओ अनेरे ने धरती सँ उठि अकास छुबि लइए आ दोसर दिन दुखन भगतक दशा देखै छी जे अहू जुग मे दुनू आँखि मरा कानि कानि रहल छथि। अपने त सर्व भक्षी छीहे। [illegible] चाहो पीबै छी, कौफियो पीबै छी, सिगरेटो पीबै छी आ बीड़ियो त पीनिते छी। तइ संग तमाकुलो खाइ छी आ भाँगो गांजा त पीविये लइ छी। तैं अनेरे कुया कैं कि बजितौं। सरदरे बजलौं- 'घरवारी कैं जे सब- जुड़तनि, सब खाइ-पीबै छी।'

ओना दुखन भगत सेहो सबरसिया लोक, मुदा जिनगी टुटने बेचारे एकरसिया भ' गेला। चाह टा पीबै छथि। चारि घोंट चाह पीविते दुखन भगतक मन कलशलनि। कलेशिते बजला- 'यार, दुनियाँ मे जैं केकरो पत्नी अछि त [illegible] त हमर रूपनी अछि।'

पृ०- ६

पत्नीक प्रशंसा २

दुखन भगतक पत्नीक प्रशंसा सुनि बजलौ- यार, मुदा मानि लेलौं जे अहाँक जोड़ा घरवाली दोसर कें नहि छै मुदा अपनौ आँखि मे इजोत देना ओते से आन घरवाली आनि देत।'

एतबे बात सुनि जहिना दुखन भगतक मन मे उत्साह जगलनि जे शरीर सँ पूर्ण स्वस्थ छी, आँखिक चलैत अथबल भ' गेलौं, तहिना पत्नीक मन मे सेहो जगलनि जे आबन धरि जे कुम्हें छी छलौं जे बन्न आँखि मे इजोत नइ अबै-ए, से बात नहि अछि। पति कें मानै दुखन भगत कें अगुअबैत पत्नी बजली- 'हम त मोंगी- मेहरि भेलौं, नइ कुम्हें छी, जँ जिनका सन लोकक आँखिक इलाज होइत होए त करा दिऔ, जावे जीव गुण गबैत रहब।' जेना जे खर्च पड़तनि तेकर ओरियान हम कएल

पत्नीक विचार सुनि मन मे खुशीक एक नव रूपक दर्शन भेल। मुदा तेकए समेटि कें मनें मे चौपेत रखनि बजलौ - यार, अहाँक मेरिया मे कहै सब जीवैं छथि ई जेना अपन परिवार मे मृत्युक घटना भेने मन पीड़ाजाइ छै तहिना दुखन भगतक भेल। बजला - कियो ने जीवै-ए। हमही टा जीवै छे, जहिना कोनो गाछक डारि-पात कटि गेने गाछ ठूठ भ' जाइ-ए तहिना ठूठ भेल पड़ल अंतिम दिन गनि रहल छी।'

ओना दुखन भगत बौधिक क्षेत्र मे अगुआएल जरुर छथि से छथि मुदा संगीत कला में। जीवन-क्रियाक बोध ओते नइ छनि जते सँ जीवन सुचारु ढंग सँ चलै-ए। ओना मन आ शरीर दुनू दू छी। मनक दुनियाँ अलग अछि आ शरीरक दुनियाँ अलग अछि। जहिना मनक दुनिया अगम अछि तहिना शरीरोक दुनियाँ अथाह अछिये। लाखो रंगक रोगक आक्रमण जहिना शरीर मे होइ-ए तहिना मनो मे होइते अछि। मुदा जते पियास अपने लगल अछि ततबे पानि खगता ने अछि आ कि समुद्र उपदेक मौँज का

पृ०-८

अपन जे जीवन अछि ओ कैना दौड़ैत अंतिम साँस धरि चलत ततबे स्वगता ने अपनें अछि। तइ ले जेहेन जीवन धारित (धारण) कैने छी- तेहेन अनुकूल ने अपन धारणा बना धारित करैत चलब। तइ मे दुखन भगत एक भग्गु छैला। संगीत कला खासकए भगैतिक गायन मे त दुखन भगत सिद्ध हस्त छैला मुदा शरीर क्रिया मे अनाड़ीक अनाड़िये रहला जेकर परिणाम भेलनि जे सन्तरि बर्खेक (उमेरक) पद्धति आन्हर भ' गेला, जे पाँच बर्खे सँ धीयाबोर काटि रहल छथि।

एक त दुरक सफर कैने गेल छेलौं, तइ पर यतियो बेसी भेल जाइ छल तैं सब विचार कैँ मोड़ैत बजलौं- यार, अखन आँखिक इलाजक भार लेलौं, तखन पान-सात दिन मे फेर अबै छी, परिचिते डॉक्टर सब छथि तैं अहाँ बुझि लिअ जे बीचक जे दिन अछि ततबे दिन आन्हर छी। अखन थकलो छी आ आँखी सँ देखै भसिआइ-ए।'

जहिना दुखन भगत तहिना स्वपनी विचार सँ प्रभावित भेला। प्रभाव मे आबि दुखन भगत बजला- यार, अखन भगैतिक विषय मे पुछलौं, तखन पहिने यैह कहि दइ छी। हमर मात्रिक धरमपुर अछि। धरमपुर परगनो छी आ गामो अछि। ओतै सँ हम हाइ स्कूल तक पढ़बो कैलौं आ भगैत सेहो सीखलौं। मामा हमर पार्टी (भगैतिया पार्टी) चलबै छेला।

बीचे मे बजा गेल- 'ओ केहेन भगैतिया छेला?'

दुखन बजला- 'ओ त सोलहो आना रमता भगैत छेला। जहिना अपना सब इलाका मे रामलीला पार्टी कृष्णलीला रास गामे-गाम होइ छल तहिना भगैतिया पार्टी भगैत सेहो होइ छल। ओहू मे कते रंगक छल मुदा ओते पहाड़ धुनैक कोन स्वगता छलनि, खाली धरम राजे टाक गबै छेला। सात दिनक इनकर भाँज छलनि। दस गोरेक पार्टी छलनि, झाड़ि-मिरदंगक संग गबै छेला। एक धुन, एक लय, एक स्वर मे चलै

कथा- भगैत — पृ०- ५

बजलौ -' कते दूर धरि औ घूमै छेला।

दुखन भगत बजला —' अपन इलाका त छलिहेँ। दछिन मे गंगा किदहर, पूब मे कमाख्या आ उत्तर मे सप्तकोशी तक इनका लोक कमाला भगैतिया रूप मे जनै छथिन।'

बीचे मे बजा गेल -' पछबरिया घाटक सीमा नइ कहलियैइ'

पछिम सुनि दुखन भगत मुस्की मारलनि। मुसकुराइत बजला- पछिम मे कमला धारक इलाका मे कमला गीत चर्ल छल, ए जहिना धरमराजक भगैत कालि- मिलैग पर आठ-दस गोरे मिलि गबै छथि तहिना कमला सेहो भगैत सेहो होइ-ए, ओइह इ इनका सबहक पछबरिया सीमा छलनि।'

ओना आरो बहुत-बात कुकैक छल मुदा मानस भ' गेने बहीनक ऐठाम सँ तते इकबाहि भेल जे आगुक बात बाकिये रहि गेल। ओना अपनो मन सकपकान कुआरै छटपटाइत रहै जे कखन बिछान पर जाएब। बजलौ- यार, अरबैन दुहौ दिअ।'

दुखन भगत बजला -' आगुक गप कालि हेतइ।'

बजलौ -' कालि भोरे चलि जाएब। एको दिन गाम छोड़ै छी ते तते बिहैत होइ-ए जे कि कहब!'

जिज्ञासा करैत बजला - से कि, से कि, यार?'

बजलौ -' जनिते छी जे खेत-पथार अपना रहने गिरहस्थी करै छी। बाड़ी- झाड़ी सेहो लगौने छी। एको दिन जँ सून रहल ते तते ने उजाड़ भ' जाइ-ए जे कते दिनक केलहा पानि मे चलि जाइ-ए।'

दुखन भगत —' से कि?'

अपसोच करैत बजलौ -' यार, जहिना नील गाइयक उपद्रव अछि तहिना सुगरक सेहो अछि, तइ संग गाम मे तते ने बानर आबि गेल अछि, जे दिन- रातिक ओगरबाहि लगि गेल अछि। तेँ नइ रहब।'

तृप्ति (तिरपित) पियासल बच्चा जहिना माइयक हाथ मे गिला देख होइ-ए तहिना कुनू परानी दुखन आँखिक इलाज भेला। समाप्त १०।०१८

कथा - झूठ सपना - पृ० -१

मिथिलाक रूप-रंगक भीतर भवनगर गाम, जइ गाम मे सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखा।

मिथिला त मिथिला छी तइ मे गामक मिथिला आ गामो मे भवनगर गाम। अदौक गाम अवतार किअए त त्रेता जुग मे जखन राम धनुष तोड़ै ऐला तखन भवनगरक देखिनिहारो आ स्वागत गीत गौनिहारि मे चारि गोटे भवनगर छेली। तेँ भवनगरक लोक कैँ आत्मगौरव छइहे।

जहिना सइयो नदीक बीच बसल मिथिला, तहिना साइयो रंगक माटि-पानि सँ सजल सेहो अछिये। कहब जे माटियो त माटि भेल आ पानियो त पाइनिये भेल। मुदा से नइ अछि, अछि इ जे धरतीक माइटियो सइयो रंगक गुण-धर्म सँ युक्त अछि। जेकर जीवैत-जागैत नमुना अछि जे अन्नो- फलो, फूलो आ पातोक बढ़बाढ़ि मे सहयोगी बनि सहयोगो करैए आ असहयोगी बनि असहयोगो त करिते अछि। जैँ से नइ अछि त एके गामक सब माटि मे एके रंग सब वस्तु किअए नै उपजै-ए। कोनो माटि कोनो वस्तु (अन्न फल इत्यादि) कैँ उमकबै ए आ कोनो कैँ बैंकएलुतो त दुबकेले अछि। तहिना पाइनिक सेहो अछि गाम-गामक त बात छोड़ू जे एको गामक पानि एकरंग नहि अछि। ए जइ इनार वा चापाकलक पानि पीबै छी, बगलेक दोसर इनार आ कि चापेकलक पानि पीबे त सर्दी-बोखार लगि जाइ-ए। खैर जे अछि, छी त सबमिथिलेक माटि-पानि।

जहिना आन गाममे बाध-बोनक लहलही रहै-ए तहिना भवनगर मे सेहो रहिते अछि। अपन-अपन गामक सबकेँ अपन-अपन लहलही आनैक कारण अपन-अपन छनि। तहिना एहनो गाम त अछिये जइ मे लहलही देखल। कहै छै जे दहदही मे देखो केँ आवनो देखाएते अछि। तहिन जइ-जइ मे सेहो जडिते आनि रहल अछि आ अखनो जडिते अछि। खैर जे अछि सबकेँ अपन-अपन समस्यो अछि आ अपना-अपना ढंगे कल्याणकारी बाट पकैड़ चलनिहार सेहो अछिये। जाँ से नइ हैत तँ कोनो गाम आँकि के अपना भरे ठाढ़ हएत (हैत)। जखन गामक समाज ठाढ़ हएत तखन नै गाम ठाढ़ हएत। जेकर गाम अप्पन कैह दिऔ अपन घर। अनेतौ त डेरेवला नै कहाएब।

पृ० २

भवनगरबला कें गामक प्राकृतिक कारण दोसर छनि। दोसर कारण छनि जे अदौंक गाम भवनगर रहने ओहिना एकदिस अनकर बरबारी भरबला बाधक बधबला (हरबनार) अखनो खाद-पानिक घर बना बास करितो अछि आ जहियो सँ गाम मेल तहियो सँ पुस्त दर पुस्त ओहिना रहैत रहने आबिये रहल अछि, आबनो अछिये। तेँ ।कि मिथिला मे ओहन घर-दुआर माने रहबलहु नहि अछि जे-मे जेनाम एक सनेर मे बैस हजार लोक पंक्ति बद्ध बैसि खा नहि सकैं छ। तेहनो त अछिये। मिथिला खैर, जे अछि, अछि तैं मिथिलेक माटि-पानि, भाषा, संस्कृतक बीचे नै तैं संचमंच सब विचारियो रहने केल छथि आ जे सत लगैं छनि से करितो छथि। ओना भवनगर कें आन गामबला सब अनेको नाम देने छथि, कोनो गामबला कहै छथि धनहा गाम, त कोनो कहै छथि फलहा गाम, कोनो कहै छथि कोड़ि-कुमराक तरकारी गाम त कोइ कहै छथि चौरहा गाम। ओना रंग-बिरंगक नाओ सँ भवनगरबला चिन्तित नहि अछि, तेकर कारण ई जे गाम त जुगानुकूल (युगानुकूल) बढ़बो करए आ घटबो त करिते अछिये, जे तइमे गाम कें (भवनगर कें) एते त प्रतिष्ठा भेटिये चुकल अछि जे विद्वानक गाम, डॉक्टर गाम, प्रोफेसरक गाम, मास्टरक गाम, किसानीक गाम, चपरासीक गाम इतिहासक पन्ना मे नइ कहाएल अछि सेहो बात नहिये अछि। तैं सब किछु अंगेजल गामबला छोट-मोट मान-अपमान कें पाइनिक बुलबुला (नरबा पाइनिक) जेँका बुझै ए जे जहिना अकास सँ खसल तहिना धरती मे सोखा जाएत। तइ लै अनेरें महाकालीक आराधना छोड़ि बातक बतंगर करै मे लागब नीक नहि बुझि ध्यियाने सँ काते रहैं-छथि।

तैं कि ओ (भवनगरबला) अपन उपर लगौल अपमान-उपनाम सबहक सफाइ नइ दियै चाहै छथि सेहो बात नहियें अछि। सबहक सफाइ सार्वजनिक रूप मे दियै चाहै

पृ०-३

हृदयखोलि छाती तानि भवनगरबला सब सार्वजनिक रूप में कहै छथि जे धनहा गाम भवनगर छैहे। से ओहिना नइ ने भेल अछि पंडितक विद्वानक गाम रहने विद्वत् जन गीता कें पुजक पाठ नहि बुझि आंगिक क्रिया बुझि अंग्रेज भेने छथि जइ सँ एते विश्वास त छथिहे जे आधुनिक अर्जुन कें कृष्ण भइ कहइ सखिन जे कर्मक फल ओहने होइ छै जेहेन कतौ कर्म रहल। जखने कर्म धर्म मे अनै-ए तखने अर्जुन सन अर्जन (अरजन) शक्ति आबिये जाइ-ए। तैं जँ आन गाम वला सब जे धनहा गाम कहै छथि त एते बधाइक पात्र त छथिये जे अहिना अयोध्याक शासक दरबार मे बधैया गीत- गौनिहार छेलाह।

दोसर भेल फलहा गाम। एक त विद्वानक गाम भवनगर सब दिन सँ रहल, तइ पर जनक जी सन-सन हर जोतिनिहार सब दिन सँ रहले आएल अछि। केना नइ जोतत? मिथिला कि जर्मनी, इंग्लैंड सन देश जेकाँ लोहे- लक्कड़ पर ठाढ़ अछि, ओ त अपन माटि- पानि, नदी- नाला, बाध-बोन, झरना - पहाड़, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सँ तेना भरल अछि जे अपने- आप मे सघन बन सेहो बनल अछि, आ भरल- पुरल सागर सेहो बनले अछि, तेँ जँ कियो फलहा गाम कहै छथि त ओ जरूर देखल-सुनल बुझल- गमल बाजि रहला अछि, तैँ हुनका धन्यवाद कहिए देबैन हुनका फलबाद देब बेसी नीक हएत।

तेसर भेल कोइर- कुजराक, तीमन- तरकारीक गाम। भाए ओहिना नइ ने लोक कहै छथि, अपन अनुभव सँ कहै छथि कि जे जाबे धरती कें कोड़ल-कमाएल नइ जाएत ताबे तीमन केना तरकारी बनै-ए आ तरकारी केना तीमन बनै-ए से थोड़े बुझतै।

चारिम भेल- चोरबा गाम। जे कियो चोरबा गाम कहै छथि ओहो कोनो खिसिया कें नइ कहै छथि, जँ खिसिया कें कहितथि (कहितथि) त दोसर रूप होएत मुदा से नहि ओ सोलहो आना देखल- बुझल बात कहै छथि तैँ ओ सबसँ बेसी बधाइयोक अ…

पृष्ठ-४

धनवादोक पात्र छथिये। ततबे नइ जँ इमनदारी सँ देखल जाए
त ओहू सँ (माने बधाइओ- धननाद) बेसीक पात्र ओ छथि
किअए त ओ भवनगरवलाक सब किरदानी आइये सँ
नहि सब दिने सँ देखैत आबि रहल छथि जे केना भवनगर
वला अनकर पुस्तकालय देखैत- देखैत पसिनगर किताब
चोरा कँ बैग मे राखि लइ छथि, तँ जँ ओ कहै छथि
ते कौनो अपराध नहिये कौं छथि। तहिना ओ आइसक
भवनगरवलाक चालि बुझै छथि सेहो कात नहिये ओहि
सब दिन सँ देखैतो आ सुनैतो आबिये रहल छथि जे
केना अनतै जा-जा ज्ञान- सब आनि-आनि ओकर
चोरी नइ कौं छथि। तहिना आन गाम सँ बुरि सब
सेहो चोरा- चोरा अनबे कौं छथि। ऽ त भेल, कलाए बन सबहक एक नम्बर
चोरक सबहक सूची, दोसर नम्बर फुलवारीक मालीकँ लिअ।
देरवारक माली जरवन आने-आन एज दवाजक फुलवारी सँ
ललचकर फूल सबहक बीजो आ गाछी जे किछु देखाइओ कँ आ किछु
तुकाइयो कँ अनितो रहलो अछि आ अरवनो आनि
सेहो बात नहिये अछि, तँ जँ कियो चोरवा गाम भव-
नगरवला कँ कहै छथि ते भवनगरवला कँ मन मे
मिसियो भरि दुरव किअए हेतनि। + स्पष्ट छुनका सबहक बुझव छीन
जे जँ गोबर खतोक फुलाएल कमलक फूल छी, तइओ ओ कमले ने भेल।
परिवारक बात त छी नहि, गामक बात छी, सुनीता
सुचिता, सुशीला आ सुलेखाक जनम एके मुहूर्त एके
दिन भेल। कहब जे, जनम भगवानक देल छियनि तँ
ओ असंभव नहि भेल मुदा चारूक नामक पहिल अक्षर 'स'
सँ एक केना भेल? केना सौंसे गामक दाय-माए कँ
ऐहेन एकरूपता सुझलनि जे चारू गोरेक नामक सबहक नामो
लगा देलनि। मुदा किछु छथि ते भवनगरक दाय-
माए छथि, किछै तँ पोथी-पुराण सँ हटि कँ थोरे चलतीह।
भाए, रस्ता दिश, कियो बिदा हएव आ इ बुझबे ने रहत जे
कत जाएब तरवन डेग केम्हर मुँहे उठत। मुदा सँ थोड़
भवनगरक दाय- माय छथि, ओ प्रौढ़, परिपक्व दाय-
माए छथि, किने, तेँ समयकेँ दु भाग मे बाँटि,
शुक्ल- कृष्ण दु पक्ष केने छथि। शुक्ल पक्ष मे जन्म भेल

कथा- झूठ सपना - पृ० ५
चारू गोरेक नामकरण 'स' अक्षर सँ कैलैन।
शरीर जहिना अनेको गुणो-धर्मक आ अवगुणोक धाम छी तहिना
मनो धाम छियै। अही धामक बीचक गाम भवनगर। चारू बालक
माने सुनिता, सुचिता, सुशीला आ सुलेखा, गाम भवनगर।
बच्चाक बीच जहिना गुण-अवगुण अंकुरावस्था मे रहै-ए तहिना भवनगर
क चारू बालाक सेहो सहल। मिथिला गाम त भवनगर छीहे, जहिना एक-
दिशि नीतिशास्त्रक बोन अछि त दोसर दिस अनीतिशास्त्रक झाड़
सेहो अछिये। खैर जे अछि, एक त ओहुना अपना सबहक
दुर्भाग रहल जे हजारो बरखक गुलामीक शिक्षा रहलो जड़ सँ
शरीरो आ जिनगियोक खून-पसेना सँ मांसपेशियो तक खून-मांस सब चुसा-चबा गेले अछि।
पढ़ाइ-लिखाइक जहिना एक दिशि (दिस) दुनियाँक शीर्ष पर मिथिला अछि
तहिना ओ समटल रहने, आम जनक बीच सँ हजारो
कोस दुर रहवे कैल अछि। जँ आँकड़ो हिसाब देखब
त बुझि पड़त जे पढ़ै-लिखै मे अदहा सँ कम आबनो छीहे
तेँ मिथिला पछुआ गेल सेहो कैना कहल जाएत। एक
सँ एक योद्धा पौरुषक (पुरुषक) पैदा मिथिलाक माटि-पानि, आइये
नहि सब दिन सँ करैत आनि रहल अछि।
आएल अछि त कहा भरि चास-बास मे कियो योद्धा ओहन
जिनगी वन मे रहि जीवन भरि जिनगी भरि। ज्ञान बँटैत बिलहैत रहला अछि। तेँ
जँ आइयो मिथिलाक धरती आ मिथिलावासी कैँ हिस्सा लगा
देखब त ओइ हिसाबे खेत-पथार (माने भूमियेँ) बैसी अछि। ते ठाम
जँ उत्तर-प्रदेश, पंजाब, सन आन प्रदेश, मिथिलांचलक
सँ बाहर जे क्षेत्र बिहार राज्यक अन्तर्गत अछि, तेहु
सब राज्य सँ खाइ-पीबैक अनेको वस्तु
आबि रहल अछि, इहो त अपने नै देखै पड़त। मानो त मान
छी सबहक छी मुँह स्वमान नै अपन भेल, इहो देखबे नै।
स्कूलक (विद्यालयक) अभाव, आर्थिक तंगी संग चार
धूर सँ भरल क्षेत्र देखू आइये नहि
आइये भोगी
(तहीक लोकिनी बात भेल हिसारत कैँ कियो नै देखल) पाहिने किछु
कम छल आबन किछु बेसी भ' गेल अछि, तेँ कहब जे
मिथिला क्षेत्र मे लोकक बढ़वारि
कम अछि सेहो बात नहिये अछि। इहलो हथिसार तहओ

नौ (नअ) घरक सौंगह अछिये। केतबो लोक मिथिलाक धरती सँ किअए पड़ाजाए, तैं घरबी पुरान कें इएत, सेहो बात नहिये अछि। तैं ने बच्चा रोकैक आपरेशन धुर-झाड़ चलिये रहल अछि।

एक ठाम रहने चारू बच्चा पहिने बहीनक संबंध बिझौलक, पद्धति सन अपना मे बहीना बनि जोलि। तो जिनगी भरि बहीन जेकाँ निमाहैक निमंत्रण स्वीकार केलक। एतबा एक (गरदा माटि) चिक्कन माटि कें परौदा (घर-अंगना) बना अपन-अपन अंगना घरक घरवासो केलक आ घरवासक भोजो केलक। माटिये-माटि सब किछु खाइ-पीबै सँ ल' क' सब किछु रहै।

समय बीतल, परिवारक अंग बनैक संग-संग, अंग बनब भेल परिवाररूपी गाड़ीक, भले ओ साइकिलक चालु-ए जेकाँ किअए ने हुअए, गामक देवालयक दीपक-बाइरब, सब दिन कें बे लगल। ओमुका जेकाँ समय नहि छल, पुजाक फूल पहुँचबैं, जेना दुर्गापूजा मे समाजक (गामक) बाल-बोध सब भोरे फूल लोढ़ि कें भगवती स्थान पहुँचबते अछि, तो धरि ओ अपना कें पूजा कैक अधिकारी नइ बुझै-ए, ओ बुझै-ए नरक निवारन चतुर्दशीक उपास सँ ल' क' रामनवमी, कृष्णाष्टमीक उपासक संग सत्‌नारायण भगवानक उपास करब शुरू कै-ए, जइ सँ पुजाक अधिकारी स्वत: बनि जाइ-ए। उपासक उपरान्त ओ पहिने देव-पूजन करत पद्धति अपने जल ग्रहण करत। नारीक विशेष गुण मिथिलांचलक नारी मे रहल आबि रहल अछि, जे पतिक विचारानुकूल संगीक, मुदा आगूक कोनो रूपे बद्‌ल तोहू दिस त देखै पड़त।

बीतिये आगू बाल-विवाह एकर शुरू भेले छल, दस-बारह बरखक बीच चौरूक विआह भ' गेल। जे जते अगुआ कें गाम छोड़लक ओ ओते बेसी कनबो केलक आ कानबो सुनलक। मुदा जे सबसँ पछुआएल ओ कनबे ने केला। केहेन गरदनि जोड़ि कमेत; भाए त भाइए छथि, हँसू कि कानू भाए भाइये जेकाँ रहती। तैं संस्बी-पड़िपाक संग ने कानल, आ ने कानब सुनलक तैं हँसिये-हँसी मे उड़ि गेल। कतै गेल सँ अपने टा बुझलका।

पृष्ठ-6

समय आगू बढ़ल। तीस वर्ष पश्चाति एक-दोसरसँ मोबाइल मेने सम्पर्क भेल। तइ बीच के कत' माने चारू गोरे, रहल से अपने-अपने टा बुझलक। पाँच मे सँ कियो ने बुझलक। के कुते आगि पजरल। सबहक मन कहै, माने अपन-अपन कहै, जे हमही टा जीवै छी, बाकी के कत' हेरा-फेर भेल तेकर कोनो पतो ने अछि।

चारूक बीच सम्पर्क-सूत्र बनने, नैहर कें पहिल बेर धरती पर बच्चा मे चारू जिनगी बहुत बहुत दिन सँ जेना बनल छल जैका जीवैत बनबक संकल्प मेने छल, तेँ गामक बनल। रामनवमी दिनक दिन भेंट होइक ऐहमारे बनल जे गाम मे ऐबेरक उत्सव मे कम्पीटिशन अछि, तेँ देखै-सुनै ओकर गाम सेहो रहबे करत।

संजोगवश, चारू गोरे रामनवमी दिन चारू दिससँ पहुँचल। गामक उत्सुकता तेहेन हल-होरी चढ़िल गेल जे कोशी-कमला चारू कातसँ बाढ़िक पानि उछलैत गामे फैसि जाइ-ए आ तखनका जेहेन मन लोकक होइ छै तेहेन त नहि, मुदा राम-रमैयाक धुनक बाढ़ि ऐने गामक कोसी-कमला बनि गेल छल, तइ बीच अपन-अपन दुख-सुख चारू सेहो बिसरिये गेल किअए त सबहक नैहरक गाम ने भवनगर छी।

उत्सव समाप्त भेल। चारू अपन-अपन ठौर धड़ल। प्रातक (रामनवमीक मेलाक परातक) समय सभ एकठाम बैसि अपन-अपन अतीतक जिनगीक गप-सप भेल। भवनगरक गाम, छोट! सब अपन-अतीत-भविसक विचार केनिहार संग अछिये, तेँ वातावरण मे ओहन विचार बहुत रहल छल, तेँ चारूक मन सेहो वातावरण मे मद्-मद्र भेले छल। आन गाम जेँका भवनगर थोड़े अछि जे बाल विद्यालय मे बच्चो सबके सिखौल जाइ-ए, ओआ सत बाजब धरम छी, मुदा सिखौनिहार अपने भरि दिन मे कते निमाहै-छथि से आन कें बुझेब। कोन रखगता छै, मुदा अपनो नइ रखगता छथि, सेहो बात त नहिये अछि।

चारू एकठाम भेल, जिनगीक अगिला-पछिला सीमा सटि कें एकठाम भेल बाकी तीस वर्षक, जे बिसरि गेल छलै, भेल तेकर ठेकान करै मे बड़ समय लागत। देखते छियै जे जे-

पृष्ठ-८

परिवार देखै भरि दिन रोड पर जिनगी बितबै-ए पढ़लो-लिखल नहि छी जिनगीक अनुभवी रहितो अपन-बाल बच्चा के बुझबै-सुझबै जो कते समय वेब रहल अछि, किओ सोचनीय विचार नहि अछि। धनक भरपाइ कें मे त सब जुरल छी, मुदा मनक भरपाइ कें मे किआए फुरल छी; से के एकठाम होएते सुलेखा बाजलि- ओहिना अपना सब बच्चा मे बाजल रही जे 'भरि जिनगी बहिन जेँका रहब, से मुदा रह निमहैत आबि रहल अछि।

सुलेखा पर सुनीता आँखि गुरेड़ै लागलि। मुदा सुचिता आँखिये इशारा सँ हँसी देलनि। सुचिताक आँखिक हँसी सँ सुनीता विहुँसैत बजली- 'बहिन, हँ से त अपना-अपना भागक कामे निमहइये गेल मुदा---।

मुदा सुनि सुशीला बजली- 'दीदी, अखन सुलेखेक विचार मानि लियौं। किये- अपना भागक कर्मे जीवै-ए आ कि कैसे आनक कर्मे। सब अपन-अपन राम-धाम कें सुमरैत समय बिताइये रहल अछि।'

किअए सुनीता सुचिता दिस ताकैत आ कि सुलेखा दिस अपन विचार कें अपना मने मे गोड़ि, आगू जिनगी देखै लागलि।

सुलेखाक मोबाइल टनटनाएल। मोबाइल सँ गप-सप केला पछाति सुलेखा बाजलि- 'हमरा इमरजेंसी मे गेल आइ छी'।

चारू गोरे केँ चारि दिस भगेल। भवनगरक जे अखन धरि गढ़ैत रहल अछि, ओ बाल-बोधक भव सदृश्य रहल अछि, जेकाए सियनगर होइ मे किछु नहि किछु समय लागबे करत।

समाप्त
१५।११।२०१८

कथा - याददाश्त - पृ० १

असीन इजोरियाक चारिम चान जेकाँ जीवानन मास्टर सहाएबक रूप आइ भोरे-भोर देखलहुँ देखलयनि। देखते मन तिरपित भ' गेल। तिरपितो कैना ने होएत, जइ समाज मे माए-बापक बुढ़ियो हुरि रहल अछि, तउ सँ बुढ़ि समापत भ' रहल अछि, तइ समाज मे जे पेइसाठि (पैंसठि) वरखक अनस्था मे बेटा कहि देखकति जे जहिना अपने अहिल पढ़ाइ छोड़ली माने इस्कूल कओलेज सँ तेकर अगिले हाइ स्कूल मे पढ़ौनी शुरु केलाँ जे काल साठि वरखक अवस्था मे ओ काज (पढ़ौनी) हाथ सँ छीना गेल, आब अहाँ बुते भ' कं इंजीनियर बनल छोड़ि हएत, मुदा अकाजक लोककेँ त ई दुनिया रसपान करबै नइ अछि, तैँ जे काज हाथ सँ छीना गेल ओइह काज अपन परिवार मे बाल-बच्चाक बीच करू। चारि टा पोता-पोती अछिये। मारे रास अपनो पेन्शन भेटै अछि खूब उड़ाउ-पुड़ाउ, फगुआ खेलू आ दिवालियो मनाउ। मास्टर सहाएब केँ देखते प्रणाम कौंत करैलएति- काका, भगवान केकरो परिवार देखरिबेन त अहाँ के देखलनि। तैँ सुख-सुविधाक विषय मे किछु पुछला मुदा कुशल-छेम नहियो पुछब से उचित हएत तैँ पुछै छी, चैन सँ रहै छी कि ने?

मास्टर सहाएब डोरी धारक पेट मे पड़ि गेल छथि, दुनू दिस जहिना धारक पानिक पन पनिलकुओँ पनि डुमी जलडुमी उ रहै आगू मे छनिहें। तैं मन मानिये ने रहल छलनि जे चैन सँ रहै छी कि बेचैन सँ, मुदा लोको कि ने जेकरा अपने लेहाज नइ छै। एक रूपे त ओहो त ओहेन लाज छीहे छिपा केँ रखै-ए तहिना लाजो ने खुलि केँ कहै-ए जे झूठ बनबाइ छोड़ि दे हम तोरे घर बास करब। ओना मास्टर सहाएबक आगू मे हम बचकन छीहे। मुदा प्रश्न त बचकनक नहि चैस्टकनक अछि, माने अपन जीवन अपन लोक अपन सोच- अपन विचार कते दूर धरि अछि। ओना जीवानन काका केँ जहिना दुनियाँ केँ भौगोलिक रूप मे देख रहला अछि तहिना सेवा निवृत्तिक पद्धति जे अध्ययनक विषय

पृ०-२

बदललनि तखन अपन दुनिया (मनक दुनिया) सेहो सोझा मे अबै लगलनि। असमर्थ असमनजस मने बजला - 'बौआ, जे चलनसारि बेवहार अछि तइ मे बचैन छी मुदा अपन शीतल दुनियाँ जखन देखै छी तखन बेचैन भ' जाइ छी तेँ कि करब? अपन जिनगी आम जेँका पकलो अछि आ काँचो त छैहे अछिये।'

जीवानन्द काका बी०ए० पासकेला पछाति हाइ स्कूल मे भूगोलक शिक्षक बनला। एकदिशि अध्ययनशील लोक, दोसर दिशि परिवारो समटल तेँ अथा सँ बेसी दरमाहा अपने पढ़ै-लिखै मे लगौलनि। दुनियाक भूगोल कैँ चाटि गेला। ओना एके विषयक पढ़ौनी जीवानन्द काका करैत रहलाह। स्कूल मे बेसी विद्यार्थी जइ सँ सेकशन मे बँटल किलास रहने एके विषय पढ़बै मे अपन डयूटी पुरि जाइ छलनि। ओना भूगोलक संग-संग आनो विषय सब पढ़ि कैँ बी०ए० पास केने छेला, मुदा अभ्यास छुटने आन-आन विषय मन सँ हेराए त गेलनि, जे अन्तोअन्त तर पड़ि हेरा गेल छनि। ओना जीवानन्द काका अपन जिनगी कैँ समेटि सब दिन सँ बितबैत ऐला अछि। पुछलएनि - 'काका, अहाँ शिक्षक छी तैँ डाक बचन ओँका बोल अछिये मुदा हम त से नइ छी, परिवारिक छी तैँ परिवारेक कोन ने जानै चाहब।'

विचारक दुनियाक ढलान सँ ढलकैत जीवानन्द काका बजला - 'बौआ, परिवार देख मन मे बहुत खुशी होइ-ए जे खाइ-पीबै छी, मौज-मस्ती सँ जीब रहल छी।'

जीवानन्द काकाक विचार मौज पर चढ़ने ने केल जे कि मौज मस्ती कहै छथि। बजलौ - 'से कि, काका?'

जीवानन्द काका बजला - 'अपने जे वंश बनेलौ माने शिक्षक वंश, ओ आनन्दो दनदनाएत आगू बढ़ि रहल अछि।' अपनो शिक्षक जिनगी बितेलौ, दुनू बेटो सेहो भेल।'

बजैक अभ्यासी लोक जीवानन्द काका सब दिन सँ रहने केला तैँ कि बाजि दइ छथि से मौजे पर नै चढ़ैए। तइ मे बजला जे अपनो शिक्षक छेलौ आ बेटो शिक्षक भेल, बेट

पृ०-२

मुदा ओ तरमुँहा भेलाह। के उपरमुँहा से बुझने ने केलौं। अपने जीवानन काका हाइस्कूल मे शिक्षक छेला बेटा कॉलेजक शिक्षक भेलाति कि लोअर प्राइमरीक सँ माँज पर चढ़बे ने केला।

कमरसारिक काजे आएत रही तँ भोरे-भोर जीवानन काका सँ भेंट भेल छल। गप-सपक क्रम मे जीवानन काकाक ~~बेटा~~ परिवारक माँज लागल जे दुनू बेटा कइकौं लगवैत रहै। आ जहिना अपन कमाइ पढ़ै-लिखै मे लगवैत एलौं, तहिना परिवारक बच्चा कैँ पढ़वैत एलौं तहिना मात्र-खाए-पीबै कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरकें कोनो भार अहीं उपर नहि। जे रोगी कैं मन भावे से वैद कमावे। पढ़ै-लिखैक तेहेन लत जीवानन काका कैँ लागि गेल छलनि जे किताब किनैक पाइ कैँ ओ धरमक काज बुझैं छेला तैं सुदि-सवाइक माँज नजरि पर कहियो चढ़बे ने केलनि। अध्ययनक दिशा बदलने माने ई जे जे जीवानन काका भूगोलक विषय शिक्षा मे समयो आ टको खर्च केलनि ओ बदलि कैं धर्मशास्त्रक विषय शिक्षा दिशि आबि गेलनि। तैं वेद-पुराण, उपनिषद, सँ लऽ कऽ तुलसीकृतक ~~संग~~ ~~चन्दा काका~~ रामायणिक संग ~~चन्दा~~ आ चन्दो झा आ लालो बदासक रामायण तक कीन अपन बैसार घर ~~सजौलनि सजवैत आबि रहल छथि~~ सजवैत आबि रहल छथि।

ओना रही कमरसारिक (कमरसारि भेल बड़ही ऐठाम) ~~काजक~~ रास्ता मे, दुर्गापूजा आबि गेल अछि अखनें सँ ने हँसुआ चलकलनी लै पीजा कैँ रखब। गामोक ठाकुर (बरही) के आब ठाकुरे रहल ओ त महाठाकुर बनि गेल। माने ई जे जइ बरही ऐठाम बीस टा हँसु धार कौं पहुँच गेल, तेकरा भरि दिनक (माने आठ घंटाक) काज लागि गेलइ। हँसुआ कैँ पहिने भाथी-लऽ मे आगि सुनगा ओकरा ताव (ताव माने ओहन आगिक ताप बनाएब जइ मे लोहाक हँसु काज कौं जोगर बनै जाए) बनबै पड़ै छैलै, तइ मे हँसु राखि भाथी चलबै पड़ैत रहै छलै। जखन कहुँ आगि मे चीप अगिल काज (माने रेती सँ रेतैं ओकरा, जइ सँ पुरान हँसुक पुर

पृष्ठ-४

चार मरि जाइ छलै) चार बनबैक होइ छलै। एक-एक हाँसु के रेतैमे दस सँ पनरह मिनट लगै छलै। तइठाम आब ओ बिजली चालित रेती बना लेलकै, जइ सँ आब ओकरा मात्र हाथक काज मात्र चार कुटब रहि गेल छै ओना ओ बाजल जे मशीन त एकरो आबि गेल अछि, काज लागबै मे आएत। ताबे जीवानन्द लगि माथ सहाएब लगा गप-सप करू। अपनो त कजेक समय मे ने पलखैत (पलखति) भेट गेल। बुझल्यै छानगैचारि टा हाँसुक काज करैत मे अलखबे बेर भाइ जाइ छनि। भाए, ऐ मे हमर कोनो गल्ती नइ अछि। समाज मे रहै छी, समाजक जे हेन चालि-ढालि अछि जे जहिना ज्ञान पर अज्ञानक शासन अछि, तहिना मे अपनो अछि। माने इ जे कोन परिवारक पुरुख ऐहेन छथि जे अपनै जीवन-सूत्र धरिको घरवालीक हाथ मे धीया-पुता नइ सुमझा देने छथि। एक देखि-चारि भिक्षा प्रतिबंधित तइ पर नब बच्चा संसकारिक बनबैक काज बाल-बोधक खेल छी। परिवारक बीच ओँ सबसँ प्रमुख काज छी त ओ छी जे बाल-बच्चा कैँ सम्हारि मनुख मानव बनाबी) जीवानन्द काका वैचारिक धरतीक बीच जीवन-यापन केने तँ सामाजिक जीवनक धरतीक बोध बओते नइ भेलनि जतेक खगता छलनि। तँ मन मे आएल जे एक-एक बात जखन बिरिया कैँ पुछबनि तखन नजरि बीटिक जड़ि दीशि जे तनि खेता। बजला काका, बच्चाक सबहक जे पढ़बैक भार लेलौं, से कि आब ओ सब गुदानत। तँ बेटा-पुतोहू सँ कहा-बची कए लेलौं कि नइ?

जीवानन्द सुनि कैँ गुम भ' गेला। मन पड़लनि अपन केजरीवाल स्कूलक शिक्षणक टीचर। बिद्यार्थी सब कैँ छड़ी सँ मारि देलियै पढ़बैक ओ जुरि ने हमरा अछि, मुदा आइ त पद्धति बदलि गेल अछि, तेँ हम

कथा - याददास्त - पृ०-५

मुदा अतबेन धरिक जे परिवारक ममत्व, (जीवानन काकाक) देखलनि, ओहि अनुकूल जीवानन काका बजला - 'बौआ, परिवार मे जँ ऐना कहू बची क' क' काज करैत तखन विश्वास विसबासक जगह कतेक रहत।'

अपनहि (वैचारिक) विचारक हिसाबे जीवानन काका बजला। तँ (विचारकेँ) आगू बढ़बैत बजलौं- 'काका, बच्चा सब पढ़ै मे बढ़ियाँ अछि कि ने ?' हमर प्रश्न सुनि जीवानन काकाक मन जेना चनिएलनि। चनिआइते चैनक झलक अबै लगलनि बजला- बौआ ऐहेन सँ कि कहब। एक परिवारक चारि बच्चा छी। ५ टा अबोध अछि जे पढ़ाइक (पढ़ैक) जगह अबै धरि पहुँचि आइ-ए। मुदा ५ टा जे हमी चेतगर अछि तइमे एकटाक याददास्त नीक अछि, आ दोसरक कमजोर अछि सँ कहि जीवानन काका गुमकी साधि देलनि (गुम भ' गेला। गुम होएक कारण भेलनि जे)। एक त परिवार सृष्टिजन छी, तइपर जिनगी भरि शिक्षण काज सँ जुड़ल रहलौं। इस्कूल मे त दस गामक दस रंगक विद्यार्थी अबै छल, समय कम रहै छल, ठीक सँ ने बुझा पबै छेलियै, आ ने अपने बुझि पबै छेलौं, समय बीतैत-बीतैत बीत गेल। ऐठाम त से नहि अछि परिवारक बच्चा छी। अगिला पीढ़ीक तैयार करैक जिम्मा हमरा पर अछि। मन कड़ुआ लगलनि। जहिना धार मे कड़ुआरिक चालि सँ नाव कोनो घाट सँ अघाट दिशि जाइ-ए आ कोनो अघाट सँ घाट दिशि अबै-ए मुदा नाविक (खेवा) त मात्र कड़ुआरि चलबै-ए, तैं कि ओ इ नइ बुझै-ए जे नाव कोन अघाट दिस गेल आ कोन घाट दिशि आएत ओ त जरूर बुझबै करै-ए। मुदा तैं कि ओ अपन काज छोड़ि दइ-ए। ओ त अपन गनतब (गणतव्य) स्थान पहुँचला पछातिये छोड़ै-ए।

जीवानन काकाक गुमकी त्यधैत देख अपन मन गुम्हरै लगल। मन मे उठल जे आइ Ajanta Officer आसीन मासक इजोरिक पक्षक (परबक)

चारिम दिनक चान अस्त उगत, मुदा ओइ चान जखन चैत मासक इजोरियाक रहै-ए, वा अखाढ़ मासक इजोरियाक रहै-ए वा माघक रहै-ए, कि जइ दिनक बीच एकै उत्सवक माहौल रहितो, चानक रूप परिवर्तित भऽए जाइ-ए। चैतक चान जहिना वायुमंडल मे ठेंठ गरदा बालु सँ अन्हरा जाइ-ए तहिना नै अखाढ़ेक मेघक बदलीहुन सँ झँपाइये गेल रहै-ए। तहिना कि माघक चान अबंच रहै-ए। ओहो त शीतक लहरि सँ अपन रूप जमुना धारक कालिंदी तीर जेँका रूप पकड़िये लइ-ए, किने? उगैत-डुबैत जीवानन काका रूप एकाएक बदललनि। बदलैक कारण भेलनि जे जे पुतोहु, बच्चा, विद्यार्थी, शिक्षक बाबा जीवानन काका आ तेकर इन्सपेक्टरी कऽ देल, ओइ रे पहिने लोटामे पानि भरि गिलासक संग पहुँचा गेल छलनि ओइ रे चाहो नै सेहो पहुँचलनि। भाए परिवार छी, कि नै ए अपन-अपन काजक भार अपना उपर मे अछि मुदा दोसरक, परिवारक आन-आनक, इन्सपेक्टरी जँ नहि कएल जाएत तखन श्रम (काजक श्रम) भसैक कें घरसँक जेनाक संभावना सेहो भऽए जाइ-ए।

चाह पीबैत जीवानन काका बजला- बौआ, तोरा सँ लाथ कि, जेकरा पढ़ै छी, ओकर याददास्त कमजोर छै, मुदा ओकरो त मजगूत बनाइले जा सकै-ए। सैह परियास करै चाहै छी। मुदा---?

मुदा कहि जीवानन काका फेर चुप भऽ गेलाह। इनका मुँह दिशि ताकी त कोनो थाह नै बुझि पड़ै। मनमे उभार जे एकाएक अधडरेर पर किआए रुकि गेला। ऐहेन त ने भेलनि जे जहिना कोनो औरत मकानक छत पर सँ निच्चा अबै काल आ निच्चे सँ उपर जाइ काल बीचक जे बीचक छऽराबै (मोड़) अछि तेठाम जा बिसरि जाइ छथि जे उपर सँ निच्चा अबै

छेलौं आ कि निच्चा सँ उपर जाइ छलौं। फेर दुआर जे जड़िला बाट चलैत बटोही बाटक अगिला कदारि देख अटकि जाइ-ए तहिना ते ने भेलनि। मुदा से नइ केलौं। मुरदाक मुँह दिशि सँ नहि खोंचारि पएर दिशि सँ खोचारैत बजलौं -' काका, चारु बड़ सुनर बनल अछि।'

पुतोहुक प्रशंसा सुनैत जीवानन काका बजला- लुरिक त देवी छथि पुतोहु मुदा मुँहक जे झनकाहि छथि तइ सँ हुनकर सब देविपन---?'

देवीपन कहि जीवानन काका फेरि मुँह मोड़ि लेलनि। मोड़ैत मुँह देखन ए बेर मुँहे दिशि सँ खोरना चलैलौं। 'काका, अहाँ ते तेहेन मोड़ पर आनि अपन विचार कैं छोड़ि दइ छिऐ जे मन मे ओ भौतिया जाइए। तैं कनी---।'

हमर इशारा जीवानन काका बुझि गेला। बच्चाक बात अपना उपर लइत जीवानन काका जहिना समाज मे धीया-पुताक कैल गल्ती कैं माए-बाप अपन उपर लइत (लैत) दोखी माने छथि तेना जीवानन काका नइ केलनि अपन विचार छनि। जइ अनुकूल बुझै छथि जे बच्चाक गल्ती कैं प्रायश्चित (परायश्चित) प्राइसचित) हेबा चाही नहि कि ओकर गल्ती के अपना सिर ओढ़ि छोड़ि देबा चाही। तइ बीच पुतोहु पान नेने सेहो पहुँचलीह। पान देख जीवानन काका मन एते फुल्ला गेलनि जे ओ हमरा केजरीवाल इंग्लिश स्कूलक विद्यार्थी आ अपनें शिक्षक बनि गेला। बजला -' बौआ, अपन यादास्त त सब दिन सँ नीक रहल मुदा ओहो आब डोल- पत्ता कौ-ए।'

जीवानन काकाक विचारक गहीरपन देख बजलौं- 'से कि काका?'

(हिय) हीय खोलि जीवानन काका बजै लगला

बौआ, सब दिन भूगोलक शिक्षको रहलौं आ अपनो विद्यार्थिये रहलौं। दुनिया कें भूगोलक नजरिये देखैत-सुनैत रहलौं।

सह दहुत बजलौं – 'से तें अहाँ मधुमाछी जेँका जहिना धातिफूलक रस लेलियै तहिना मोछो त देबे केलियै छि ने?'

जीवानन काका मन मधु सुनि मधुआ गेलनि। जइ सँ हृदय पघिलै लगलनि बजला – 'बौआ, पाँच साल सँ भूगोल पढ़एब छुटि गेल अछि। आब अपनो ने पढ़ै छी। जेकर भूगोल छियै से अपन जानए।'

'जेकर भूगोल छियै, से अपन जानए' सुनि मन मुस्कुराएल। जे भाव जीवानन काका बुझि गेला, तैं बोलती बन्न कैने रहला, मुदा किछु बजलौं नहि। ओ आगू बजलाह – 'बौआ, नारायणी नदीक विषय भूगोल मे पढ़ने छी। महादुष्ट नदी अछि। जहिना कमला-कोसी अछि जे गामक-गाम कें उपटैत रहै-ए तहिना नारायण नदी सेहो अछि। अखनो ओहिना मन मे झक-झक करै-ए। मुदा बुझलौं हेन जे नारायणी नदी पवित्र पावनिक जलधार (पनधार) छी जे जइ मे नर-नारायण मिलि स्नान करै छथि, से पढ़ि जेना अपन यादास्त चौपट बुझि पड़ै-ए। केकरा कहबै।'

समाप्त

१५।१०।०१८

कथा - एकरबा बानर - पृ०-१

आसिनक दुर्गापूजाक संगे, कोजगरो भ' गेल। कातिक तेसर दिन बीतरहल अछि। ओना गामक लोक सब बजैं छथि जे जुग उनैट गेल। से बजैं छथि दू टा चीज देख कें, पहिल जे तेरहम मास, जे कातिक मानल जाइ-ए से अगहन (अग्रहन) भ' गेल, माने कतिका धान भेनें, आ दोसर जे हैदराबादी किसमक ओलउ उपर भेनें। कहइ छथि जे सुआदे खतम भ' गेल। जखन ओल मे कबकबिये नहि तखन ओ ओल कैना भेल? सनइक नामक पाछु ओकर गुण-धर्म अछि। तहि संगे ओलक बढ़बारि (देशी) अधा सेर छी प्रतिवर्ष अछि। जे तीन सालक पद्धति भूमि सँ उखारब ते डेढो सेर हेत कि नइ। तैठाम जैं तीनिये मास मे छ किलोक ओल बाढ़ि कें भ' जाए, ते जुग उनहब भेल कि नहि। पाँच बजे भोरक समय, जिनसर नइ भेल छल, रविनाथ भाए, 'रोड' पर 'क' नहि घुमै छथि; बाधे-बोने घुमैं छथि, तही रुटिंगक (कार्यक्रमक) हिसाब से पछबरिया बाध दिस घुमैं निकलला। सड़कक बगल मे गाछी-बिरछीक क्षेत्र अछि, तैका पछिम बाध अछि। बाधक माने भेल खेती-पथारी कैवला आ बोनक माने भेल गाछी-बिरछी।

बाधक बीच एकटा कट्ठा डेढ़ेक परती अछि और परतीक बीच एकटा कहिया-कतक साहोरक गाछ अछि। बर-पीपर जेकाँ ने छतडल-चतड़ल अछि आ ने ताड़क गाछ जेकाँ ठुराहसाहै अछि। सब सिरखारे त बरे-पीपर जेकाँ अछि मुदा पहाड़ी क्षेत्रक लोक जेकाँ घुटमुटाह त अछिये। मुदा तैं कि आन गाछ सब सँ कम रुआबी अछि सेहो बात नहिये अछि। कोरियने जेकाँ ओकरो (माने साहोरक गाछ कें) एतें दाबी त छइहे जे ठेंका कें हम अपना उपर नहि खसै देब, तेहेन छलाक त छैहे। जुग-जुग सँ जे बोल सब, सब कुकैत-बजैत आबि रहल अछि, से झुठ कैना हैत। कहलो जे जाइते अछि जे अपने केने गायक घी, अपने केने महीसिक घी होइते अछि। इ त निर्भर करैत अछि घीक चाहे केनिहार कैहेन अछि। जैं गाइक घी पसंद होइत छथि तँ गाएक घी कें पसिन करता, नइ त महीसिक। ओही साहोरक गाछ लग पहुँच रविनाथ भाए बीच दिस नजरि उठा कें देखलैन त, सतरंगी रंग कहिऔ आ कि धानी रंग, मे बाधा नेहाएल-सोनाएल बुझि पड़लैन।

पृष्ठ 2

गामक सालोंभरिक बेरा पार, होएत देख रविनाथ भाएक मन खुशी सँ झूमि उठलैन जे साल भरि भोजनक अभाव गामक मे नहि नई रहैत। किआए ने मन खुशी सँ झूमतैन, जे गामक मनुष्य एक दिन खपने उनतीस दिनक मध्यक परवाहि केने बिना आईका मे जीवैत छैक। ते गाम साल भरि त बहुत भेल, आइ दिखावे केला साल सँ पहिने गाढ़ी दिस भेल। एकरा बानर एकराहुते निकसल, ओकरा सबहक माने बानर सबहक निकलैए कि हिसाब छै से त ओकर सब जानत मुदा रविनाथ भाए देखलैन जे एकटा जुआएल, पकठाएल, अनठाएल मोटगर डटगर बानर गाढ़ी दिस सँ बाध दिस आबि रहल अछि। असकर बानर (एकैटा) कें देखिते रविनाथ भाएक मन हनुमान जी पर चलि गेलैन। ओहो बेचारे असकरे जीवन भरि राक्षस सब कें खेहारैत रहला। भरि त्रेता जुग रहि गेला। जहिना नारद बीणा स्वर्ग सँ नर्क आ देवलोक सँ मर्त्यलोक सदिकाल टहलैत रहै छेला तहिना रविनाथ भाएक मन एकडायरे बानर जेँका टेकार मनुक्ख पर सेहो गेलैन। असकरक जिनगी, असकरे लोक खेत-पथार, बोन-झार सँ कमा कें लौत आ। कि चुल्हि लग बैसि भानस करत। से नइ कात ते खाएत केना आ नइ खाएत जे कालिह कमाएत केना। नइ कमाएत त अबैये ले किआए धड़फड़ाएल। एबे लौत ते पाछु कें अबैत, जखन लोक खा-पी नेने रहैत। तहीं बीच देखलैन जे ओ एकरना बानर असकरे खेत सबहक धान निङ्घारैत एकटा खेतक ऊँचगर आड़ि पर बैसि धान खाए लागल। कनी कालक पछाति बानरक जेर करीब तीस टा पतिआनी लगा बाधक खेत सब मे बैसल। कर्णपुर मे कहियो बानरक बसेरा नहि भेल छल। आइये नहि सब दिन सँ कर्णपुर गाढ़ी-कलम सघन रहल अछि मुदा बानरक बसेरा नहि भेल छल। कहब जे कर्णपुर गामक मौसम बानरक अनुकूल कि नइ अछि सेहो बात नहिये अछि। एके इलाका मे किछु गाम एहेन अछि, जे गाम मे बानर सब दिन सँ रहल अछि। मुदा कर्णपुर मे बानरक बसेरा कहियो ने भेल छल। एकाएक कतऽ सँ एते बानर गाम मे आबि गेल। कहने खुशी जे रविनाथ भाए मन पड़ि गेलैन दू मास पहिलुका बात, जे एकेटा बानर गामक गाढ़ी मे आनि छोड़ि देलकै। अछि ओकरे बानरक झुण्ड बनि, बाध-बोन मे उपद्रव करै-ए।

पृष्ठ-3

एक त बानर चरि-चकिया गाड़ीक अन्तिम प्रोडक्ट छी, माने चौपाया जानवरक आदि
आन-आन गाड़ी सवारीक अनुभव कें नीक बनबैत प्रोडक्ट भेल अछि।
अइ दुआरें आन-आन चरि-चकिया सँ एते सुरक्षित त अछिये
जे जँ कोनो गाड़ि पर बैसि खेत मे जाने वा आने जजात खाएत रहैत आ अइ
जँ कते-कते हवि जाएब ते ओ घुरिये केने देखत मुदा
जँ ओकरा कोनो उपद्रव आबै तखन ओहो तँ राम-लछुमन
एक महावीर भक्त त्रेते जुग सँ आबि रहल अछि। तहू मे हनुमान
बाबा सन बाबा छथिये जिनका बिनु घरेवालीक परिवार
छनि।

ओना साहोरे गामक निच्चा मे बैसि रविनाथ भाए
हिसाब जोड़ि रहल छला जे जहिये हिसाबे बानरक आगमन गाम
मे भेल अछि तइ हिसाबे साल भरि मे खाएत
कते आ उपद्रव सँ नोकसान (दुइर) कते करत। जखनकि नान्हि-नान्हि
टा मुस-बानरक हिसाबे-उपजाक छवम भाग खा जाइ-ए, तखन ओ कोन बनाए। तहू मे
गाय-महीस जेकाँ दूध ने दूधे दैत अछि, खस्सी-बकरी
जेकाँ मांसे दैत आ बड़द जेकाँ हर-गाड़ी खींचत
आ ने घोड़ा-हाथी जेकाँ सवारियेक काज करत। पाँच टा
नीलगाय किसनपुरक बोन मे अछि से ते गामक खेती-पथारी
रोकि देलक; रोकब भेल जे तते उपद्रव करै-ए जे किसान
खेती करब छोड़ि देलैन, तहिना सिन्दुरपुरा गामक खेती
बारह-चौदह टा बोनैया सुगर खाइ देने अछि। कोनो गरे रवि
नाथ भाए कें हिसाब बैसबैत ने बैसलैन। मुदा लगले मन मे उठि गेलैन
जे अनेरे कोन जानवर सबहक ओकरी मे ओकरा लगलौं। अपने
जिनगी तेहेन पहाड़ बनि गेल अछि जे पाड़ करब पारे ने लगि रहल
अछि आ गामक बोनक बाधक भार हमरा बुते उठत। ओ त
उठत ओकरे बुते ने जेकर भार छियैं।

रविनाथ भाए बाबा साहेब भीम रावक अंध भक्त
श्रवण कुमार जेकाँ छथि। जहिना भीम सहाएबक जिनगी एकटा खुल्ला दस्तावेज
अछि तेहिने दस्तावेज जनबै पाछु आनो लगाने छथि। ओहुना भीम सहाएबक मन मे कि दर्शन, अपन शक्ति कि दर्शन, तइ अनुकूल
आजीवन-धारण देने छेला। संविधान सभा मे भीम
सहाएब एक-एक जन कें भोटक बोटक पति आनी ते आनि के रखि
देलैन। मुदा जीवन त ओइ सँ हजारो कोस दूर अछि, जेकर
पाड़ करब सबकें अपन-अपन दायित्व अछि।
ओना रंग-रंगक चश्मा सँ भीम सहाएब कें देखल
जाइ छथि, आ ओइ अनुकूल हरीक अपन दियो निर्धा
रित कइये लइ छथि। मुदा रविनाथ भाए मे सेहो

पृष्ठ-४

रहै छथि। माता-पिताकेँ जहिना भार बना श्रवणकुमार तीर्थ यात्रा करौं विदा भेला, तहिना रविनाथ भाए सेहो अपना केँ बुझैं छथि।

बाध सँ दिस सँ टहलि (टहल) कँ रविनाथ भाए दरबज्जा पर पएर देलनि कि पत्नी (सुचिता) बुझि गेली जे जते काल मे अपने हाथ-पएर (माने रविनाथ भाए) धोता तते काल मे अपनो चाह बनि जाएत। अपनेक जिम्मा बुझि अपन सीमाक काज मे उचित जुटि गेली। ओना बाध मे देखल बातमरकेँ मन मे रहबे करैन जे गाम मे नव उपद्रव बढ़ि गेल अछि।

दरबज्जा पर बैसिते रविनाथ भाए कँ बैसिते सुचिता चाह नेने पहुँचली। पाइनिक कोनो रकाता मन मे उठबे ने केलैन जे पानियोक अनिरुचि (ऐनर्जेस)। किअए त एते बुझले छनि जे काल पर हाथो-पएर धो लइ छथि आ यदि छौंक पानियो कटै पर पीन लइ छथि। हाथ मे चाह लइत अपन शुभ सन्देश पत्नी केँ रविनाथ भाए सुनबे चाहलैन। शुभ संदेश गाम मे बानरक आगमन मन मे रहबे करैन। मुदा मुँह सँ बकार निकलै सँ पहिने तेकार लाशि गेलैन। तेकर छ लगलैन जे बानर कहि पत्नी केँ कहैएनि आ कि हनुमान जीकेँ। किअए त ई मनमौजी बात अछि जे जे मन फुड़ए से बाजू। ओहि रविनाथ भाएक दशा ओहि मूर्तिकार जेकाँ भ' गेलैन जे जे मूर्तिकार मूर्तिक निर्माणक हाथ रहबे छथि, ओकरे हाथ ने मूर्ति निरमि (मैम) निर्माणकर्ता सेहो बनबे-ए। जीह-जाति (जी जाति) रविनाथ भाए बजला- 'आइ नव जीवनक दर्शन भेल हेँ।'

धुकद होएत सुचिता कुदकुदेली- 'नव जीवनक दर्शन भेल, मर-र ई कि भेल।' बेजाइ सँ मन मे ने कोनो जिज्ञासा जगलैक आ ने कोनो विचारक आशे फुटलैन। मुदा गपक सिलसिला केँ सिलसिलेवार आगू बढ़बैत सुचिता बजली- 'से कि?'

रविनाथ भाए बजला- 'पछबारि आगाकेँ बाध-बोन दिस टहलै गेल छलौं। बीच बाध मे साहोरक गाछ लगाओल छइ ओ बाध दिस छियासँ लगलौ त संतरंगी रंग मे रंगल बाध बुझि पड़ल। मनेमन छिया-छिया छियासि रहल छलौं कि....।'

कथा - एकटा बानर - पृ० ५

'कि' कहि रविनाथ भाए चुप भ' गेला। जानि कें चुप भेला कि टूटल साइकिल जेँका एकाएक रुकैत बेकार भ' गेलैन, से त रविनाथ भाए जनता। मुदा सुचिता कें बुझि पड़लैन जे ओहिसक कोनो असाध्य व्याधि मन मे नेने ते छउरि गेलैन। होइते रहिता अछि जे असाध्य रोगक किछो नाम नहि लिखए चाहैत अछि अहिना पारखी डौक्टर हड्डी (देहक हड्डी) सँ सरल मुइल खून वा सड़ल पस (खूने पस बनै-ए) के निकालै ले उपरके खूनक चमड़ा कें नइ दर नइ हटबैत हड्डी लग पहुँच ओकरा निकालि स्वस्थ शरीरक निर्माण करै-ए तहिना सुचिता जानै-ले-चाहै छेली मुदा पतिक निसमित होएत मन कें उपरक नइ हटबैत बजली - 'ऐना जे बीचे....'।

पत्नीक बात सुनि रविनाथ भाए कें अनासुरती मन मे उठलैन जे नीक हैत पहिने बाथक रंग देखा दिअनि आ पछाति भंग देखाए देबैन। रंग-भंगक आ कि रंग मे भंग, आ कि भंग मे रंग, से आबन नहि, आबन एतबे बजला - 'ऐबेरक बाथक जे रंग चढ़ल अछि, ओ अगामो कें रंगि रंग चढ़ा देत।'

रविनाथ भाएक विचार सुचिता नीक जेँका नइ बुझली। जइ सँ मन भीतरे-भीतर औनाए लगलैन। औनाएक कारण भेलैन जे पमरिया तेसर जेकाँ सब मे 'हँ जी' करब नीक नहि, मुदा। बिनु बुझल बात बजबो कैना कबे। से लगले मन मे भेलैन जे ऐहाम कि किछो आन अछि जे कोनो बात बजै मे चड़ी-चोखा होएत। बजली - (सुचिता बजली) 'ऐना जे रंगरेज - अंगरेज जेँका अध्या बजै-बनबै छी आ आधा छिपाड़ जेकाँ छिपा लइ छी, तइ से काज नइ चलत। जखन अपना कें पुरुख बुझै छी त पुरुखपना बातो रखू।'

पत्नीक बात सुनि रविनाथ भाएक मन मे भेलैन जे आ, ई कि भ गेलैन। ई त ओहिने भेलैन जे किछो उपन्यास पढ़निहार पहिलेके पृष्ट पढ़ला पर एते निड्डसि (बिड्डासि) जाइ उत्तेजित भ' जाइ छथि जे दोसरे पृष्ट मे रिजल्ट देखै चाहै छथि, तेहने भ' ने ते पत्नियो भ' गेली। भाए जखन पति-पत्निक बीच जिनगी भरिक एकरारनामा भेल अछि तखन जँ बुढ़ाढ़ियो मे विआहेक रस लेब तखन बुढ़ाढ़ीक रस मुइला पछातिओ भेटत। रसमय जिनगी

काम्यमयी दुनियाँ मे रमणैत-रमकैत चलै, यैह ने भेल पुरुखपनक जिनगी। तहूठाम जे मरदुआर बनि अपन दरबाजाकें मरदुआर बनाएब त साकू-पट्टर कें चून-तमाकुल, चाह-पान आ भाँग-चौंट कत' सऽ हैत। अपन बुढ़िआएल-बुढ़िआएल मन कें समेटि (समेट) रविनाथ भाए बजला- 'बाधक सतरंगक रंग कें अबैन हटबै छी, मेला-ठेला मे तँ सतरंगक कि सहस्ररंगक सँ रंगल रहै-ए, तइ से अपना दुनू गोरे कें कौन मतलब?'

पतिक लहकल बात सुचिता नहि बुझि पेली। बुझबो केना करैथ, जे घाट पर लहकी खेलेनिहार अछि से ने बुझत। आ जे से नहि अछि! पतिक पावन घाट मे भसैत सुचिता बजली- 'ठीके कीने। कौन-मतलब अछि अनका दुनियाँ सँ, रामचन्द्र भगवान दुइये परानी राजगद्दी से बोन आ बोन से रजगद्दी देखलैन आ कि हमहूँ-अहाँ देखलौं हेन।'

पतिक टोकारा मे सुचिता ढेहा भाँसि गेली। बजली- 'अनेरे कोनक दुनियाँदारीक लपौड़ी मे पड़ैत रहब, ने हमरा दोसर पति हएत आ ने अहाँ के दोसर पत्नी। तँए बीच मे ने दुनू गोरे लड़ैत रहब, झगड़ैत रहब, आ संग मिलि घाट-घाट चलैत रहब।'

अनुकूल वातावरण देख रविनाथ भाए बजला- 'बाधक परती पर ठाढ़ भ' बाध हियासैत रही कि एकटा बानर ढेका पर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मुड़ी उठा-उठा देखै लगलौं जे एकेटा अछि कि जोड़ो छै।'

बीचे मे सुचिता बजली- 'जोड़ो हेबे करतै। ओहिना नइ ने अखन दिन मे टहटहौआ सोहो रहै-ए आ बरखो होएत रहै-ए, ओइ दुनूक विआहक लगन छी। ओइ लगन मे दोनो बानर अछुत रहै-ए।'

ओना रविनाथ भाइक मन मे जगलैन जे एकटा लगन भेने एकोटा बानर अँ अछुत नइ रहत, तखन ते मनुख कें ले जे सालो भरि- कोट-कचहरी से मंदिर धरि रहै-ए तखन तँ मनुख मे छुत केना रहै-ए, आबे छुत नइ रहै-ए तावे छुटि केना जाइ-ए, ओ त सहजे बानर छी। कनी काल चुप रहि रविनाथ भाए बजला- बड़ी-काल तक जखन ओकरा दिस तकैत रहलौं, तइ बीच ओ बानर गाछी-दिस सँ निकैल बाधक आड़िये-धुड़े टपैत एकटा खेतक ऊँचका मेंड़ पर बैसि घास खाए लागल, तावे तक तकैत-देखैत रहलौं। ओ बानर असकरे

पृ० - 6

जैंका रहै।'

मुस्की दइत सुचिता बजली- 'अहाँ के ते लोक एकरबे बानर कहै-ए।'

पत्नीक मुँह सँ एकार बानर सुनिते रविनाथ भाइक मन हनुमान जी पर टेक गेलैन। ओहो त एकाग्रे रूप, जिनगी भरि धारण केने रहि गेला। मुदा जहिना सइयो कोस उपरक पानिक कैँ धरती पर खसै मे मिनटो नइ लगै-ए तहिना रविनाथ भाइक मन अकास सँ धरती पर उतड़लैन। मन सँ बाधक देखल बानर इटि गेलैन। किअए ते ने आनन असकरे बाध मे छथि, जे बानरक उपद्रवक चिन्ता होइतैन आ ने कतौ आन ठाम। तइ ठाम जँ पत्नी बजली जे लोक सब एकरबा बानर कहै-ए, तँ जरूर किछु बात अछि। ओना जँ ओ, माने पत्नी रहितैथ, बड़ गिरिथानि देखी त छुपे रहितैथ, नइ जँ मनुख रहितैथ ते तरबने तेकर जबाब दितैथ, से सब किछु ने केलैन, आ हमरा सुनसान मे, माने असकर मे, सोझर सुना रहली अछि। मन कनी-कनी तिरिंग-भिरिंग सेहो हुअए लगलैन। मुदा लगले मन मे उठलैन जे सब घरवालीक दाब-चाप सब घरवाल सुनिते छथि, तँए अपनो किअए ने पत्नीक मुँहक सुनल 'एकरबा बानर' हटा ली। मुदा लगले मे फेर उठलैन जे, जँ कोनो मुँह सँ कोनो बात निकलै-ए, ओ त ओकरो मुँहक ने भेल। भ' सकै-ए जे जँ अपनो मने बाजल होथि आ हनुमाने जी जकाँ कोनो ऐहन रूप देखने होथि आ हनुमानजीक नाम बदलि देल बानर कहि देने होथि। किअए त उदाहरणो त ओहुने ने देल जाइ-ए जे करीबक होय। तँए बिनु पत्नीक हनुमान जीक उदाहरण केना दितैथ तँ इनके बनरपनक रूप कैँ अनुचित बानर बजली अछि। रहिता होइ छै। तइ ले अनेरे कतेक समुद्र उपद्रव। पति-पत्नीक बीचक रस्सा-कस्सी मे।

मुस्की मे टुसकी दैत रविनाथ भाए बजला- 'लोक हमरा एकरबा बानर किअए कहत?'

सुचिता कैँ जना कानक सुनल सइयो आवाज कान मे झनझना लगलैन जइ सँ, पतिक विचार कैँ रस्ते मे रोकैत बजली- 'घुरौक लोक त कहिते अछि। पुरन बाबा जखन मरल रहैथ, इनकर जे क्रिया-कर्म ओहीत सँ मने हइत छिने।'

पुरनबाबाक मृत्युक नाओ सुनिते रविनाथ भाए बीचे मे

पृष्ठ-८

टपैक उठला- 'श्राद्ध-कर्म मे किओ नइ पुछलैन. तेकरा अपने अधला कहाँ कुकुरो, काजक भारो माने जस-अजस, त नइ ने पड़ल।'

पतिक विचार सुनि खौंझाइत कहैत सुचिता बजली- अपन दोख अपने मुँहे के कबूल करै-ए जे अहाँ करबै। मुदा अहीं कहू जे जखन पचास घरक दियादी अछि, जइ मे सब कैं सब मैथन-गुणक मे केश कटबै छथि, अहाँ नइ कटबै छी जेकर बदला मे ओही सब एकरा बानर कहि दियादियो छोड़ाए लेलैन।

ओना दियादी सुनि रविनाथ भाए मुस मने विचारै लगला- जे जखन दियादी छोड़ैल जाइ-ए तखन लगोलो त जाइये सकै-ए। तइ बीच ऐतबे ने अछि जे लोक वंशागत माने छथि। मुदा मनुखक वंशक त सब ओना से बात नहि अछि, दियादिक अधिकांशतः युवक बेसी अपन दियादीक नियम मे सुधार केलैन जे वृद्धक मृत्यु स्वाभाविक अछि, जखन कि जवान-जहानक दुखद, तैं स्वभाविक मृत्यु मे केश कटाएब जरूरी नहि अछि, इमहूँ तसैह ने केलौं, तखन जौं ओ सब माने सब दियाद, एकरा बानर कहै छथि तै अपन मुँह दुइर करै छथि। कहइत हँसी रविनाथ भाए बजला- 'जाए दियौ ओ सब घरक दियाद-बाद भेला, गामक समाजक लोक नइ ने कहै-छथि।'

एक त ओहुना पति-पत्नीक बीच बजै-सुनै मे कोनो बाधा-रुकावट नहिये अछि, मुस्तैदाम जौं वेदान्ती बात मे पत्नी चढ़न्त होथि तखन जेहेन बोल मुँह सँ निकलै-ए, ओही स्वर मे सुचिता बजली- 'गामे टा कहै छियै, दस गामक लोक कहै-ए जे सौंसे गाम मे सब अपन-अपन डेढ़िया पर पसीद आ सौनी साध कुँ संगे रोपलैक, आ अहाँ। कि केलियै।'

रविनाथो भाए कैं ओना मुँहे मे बरी जकैत रहैन, तहिना चोहै पत्नी कैं कहला- 'अइ दिन कहने रही जे पहिने उ फड़िछोट मे हुअए जे पहिनो एहन परम्परा छलु कि आइये शुरू भेल।' जखन से नहि भेल, तखन ....।

ओना सुचिता पतिक विचार सँ कने सहमली। मुदा गामक लोकक बोल तते बेसी कान मे पड़ि गेल छेलैन जे काने झड़झड़ा य' गेल छलैन। मुदा तइओ ... कहैत बजली- समाजो त समाज छी कि ने, सबकेँ मिलि कऽ चलै...

कथा - एकरंगा बानर - पृष्ठ-५

कि ने ?

अहिना किछु कटे पर सँ कारि किछो बजै-ए तहिना रविनाथ भाए बजला 'ऐ मे दू राय कहाँ अछि। मुदा गाम-समाजक सब एकठाम बैसि वा एकविचारक रास्ता बना चलता तखनै ने?'

गामक समाज पर नजैर खिरैत सुचिता बाजलि - गामक लोक कैं एते फुर्सति छै जे सब एकठाम बैसि विचार करत। कियो आठ बजे तक सुतनिहार अछि त कियो तीन बजे भोरे सँ काज मे लागि जाइ छथि, तखन एकठाम कैना बैस सकैत छथि।

पत्नीक विचार मे सह दैत सही जगह पर ठाढ़ होएत रविनाथ भाए बजला - 'से त हमहूँ देखै छी जे जे बाप (पिता) भरि दिन गाड़ी-सवारीक भीड़ मे रोड छाप बपहारि (बपहारि) जेहू बेटा लेकै छथि ओह बेटा कैं ने संग-संग खुआ-पीआ पबै छथि आ ने दिन-दिनक क्रिया-कलाप सँ जुड़ि पबै छथि।'

रविनाथ भाएक प्रश्नक उत्तर अपना मे नहि पेब सुचिता छुरछुर बिलाइक नाच जेँका नचैत बजली - 'एहिना पुरुख सब गप्पो आ काजो मे जिद्द रोपि बलउमकी सब दिन सँ करैत ऐला हैन आ अखनो करै छथि।'

हराएत-भोथिआएत पत्नी कैं देख रविनाथ भाए बजला - 'पहिने सुनियौ, तखन बुझियौ, पछाति विचारियौ, तखन जँ जरूरी बुझि पड़ै त बजियौ। से नइ करब आ केकरो मुँहे सुनब जे कौआ कान नेने पड़ाएल (उड़ल) जाइ-ए, आ अपन कान देखि नइ देखि औकर पाछु दौड़ब नीक हएत।'

कोनो समस्याक समाधान जखन 'हैं' नइ लग पहुँच जाइ आ लोकमतिया कैं निर्णय करब असान भ' जाइ-ए, असानक माने बिनु सोचल-विचारल, तहिना सुचिता कैं सेहो भेलैन। बजली - अच्छा अहीं कहु जे जखन सौंसे गौआँ अपन डेढ़िया पर पसीढ़-सैनी रोपलैन आ अहाँ नइ रोपलौं, तखन अहीं कहू जे समाज अहाँ कैं छोड़लक आ कि अहीं समाज सँ फुट भेलियै।'

ओना सुचिता पत्नीक प्रश्न बेतुकार उत्तर रविनाथ भाए मन मे उठलैन, उठैत ई जे कहिऐनि, जे पसीढ़-सैनी रोपने रोग-बियाधि व्यक्तिक संग परिवारो आ परिवारक संग समाजोक रोग-बियाधि मेटा देत। ~~रोग-बियाधि मेटा जेतइ, तखन किअए ने सरकारियो योजना मे दुनूक बीच लगौल~~ सरकारी डेक्टर अस्पतालक खर्चा ओही योजना मे बीने लागि देल जाइ-ए। मुदा पत्नी कैं अपन अधीनस्थ बुझि विचार

पृष्ठ-१०

रविनाथ बजला – 'जखन आइक युग, माने एकैसमी शताब्दी मे ~~[illegible]~~ अपना सब छी, तखन आइक मनुक्ख बनि संसार मे जीवैक अछि, तइ मे जँ रानी सरंगाक। रिहसा सुनै मे दिन राति बीता देब, तखन केना दुनियाँ कैँ देख पाएब, जइ मे रहैक अछि।'

रविनाथ भाएक विचार सुनि सुचिता सहमली। जहिना सब पत्नी पति ~~[illegible]~~ लग हारला पछातियो जीतले कुँछ छथि तहिना सुचिता कैं सेहो भेलैन। मुस्की दैत बजली- 'सर्वाधिक पुरुख लबर-दौरें ~~सेहो छथि~~। रहल अछि।'

ओना रविनाथ भाएक मन मे भीमकायाक विचार जागि गेलैन जे इतिहास नइ जानत ओ इतिहास रचत केना। मुदा फेर मन उनैट पत्नीक साहचर्य पर पहुँच गेलैन। ~~[illegible]~~ साहचर्य पहुँचते मन ~~[illegible]~~ धड़ती पर ~~खसि पड़लैन~~ औंधरा गेलैन। बजला– 'केतबो लबड़दौर पुरुख हैत तइओ पुरुखे रहत कि ने?'

रविनाथ भाएक ~~विचार~~ बात सुनि सुचिता गरमेली नहि मनेःमन मुस्की भरि रहलैन।

समाप्त
७/१२/०१८

कथा- विचारभेद - पृ०-१

वाजिबपुर मिथिलाक प्रमुख गाम सब दिन सँ रहल आ आबनो अछियै। ओना मिथिलाक बीच आइये नहि सब दिन सँ माटि-पाइनक बिलहा बाँट होएत आबि रहल अछि आ आबनो होइते अछि, कहियो कोसीक पानि धकिया कमलाक पानि बढ़ैत छइ ए तँ कहियो कमला धकिया पाइनिक संग-संग माटियो कैं काटि कैं बाँटि दइ-ए आ नाम राखि दइ-ए पनिकुहा-कोसिकन्हा खैर जेते जे अछि सें अपन-अपन भोक्ता। मुदा आइ वाजिबपुर गाम मे दुर्गा पुजा आराधनाक बैसार छी तइ मे सामिल हैवा लेल गौंआ सब आमंत्रित छथि। जे तीन बजे बैसकाक समयक प्रतीक्षा कइये रहल छथि।

ओना वाजिबपुर गामक अपन इतिहासो छै, आदि सँ भूतक संग वर्तमानो त छइहे। कोसी-कमलाक बीच बसल वाजिबपुर ऊँचरस जमीनक गाम छी। तैं बाढ़ि सँ प्रभावित आइ धरि नहि भेल अछि, ओना गोटे बर्ख जँ पहाड़ी इलाका (नेपाल सँ उत्तर जइ पहाड़-समूह बीचक रकबा हजारो किलोमीटरक बीच अछि) मे हिमक हिमाएल बेसी वरखेः भेल आ कि हिमगिरी बेसी गलल तइ सँ सेहो पड़ल बढ़बारि सेहो भइये जाइए। जइ सँ मिथिलांचलक बीच बहैत धार सब उछलबो करैत अछि जइ सँ पाइनिक उपद्रव सेहो बढ़िते अछि जइ सँ गामक-गाम केर घरो-घरारी आ खेतो-पथारक घरक संग माटियो नष्ट होइते अछि। से सब समस्या वाजिबपुर कैं आबन धरि नहि भोगए पड़ल अछि। तैं कहब जे सरकारी बैंक सँ ऋण मुक्त वाजिबपुर भ गेल सेहो बात नहियै अछि। जहिना-दाही-आर्थिक ऋण भेटै-ए तहिना वाजिबपुर कैं साले-साल त नहि मुदा अन्दाज मे रखू जे गंडा मे एक बेर, सौदियाही (तीन) ऋण भेटिते अछि। आइ सँ वर्खेक गाम मिथिलाक वाजिबपुर अछि जेकर मालिक पुर्वजक आइ सय मे दु सय सौदी त बजरूर देखबो केलैन आ भोगबो त करबे केलैन तेकर ओरियान माने सौदीक बीच जीवन-धारण केना बचाय रहत, सेहो नहि केलैन सेहो बात त नहियै अछि मुदा ओ Ajanta Officer त अविकसित साधनक बीचक जिनगीक

पृष्ठ-2

बीतल बात भेल अछि। जे डी०ए०भी० आ कि खिचड़ी खोंढ़े स्कूलेंक नतुरिया बच्चा केना बुझत। मुदा जँ ओकरा अपन समाजोक अपन सामाजिक अपना ऐना आ, आ माता-पिता अपन पारिवारिक ऐना (अएना) आमु मे देखैत त किअए ने बुझत।

खेला-धूला पद्धति माने दिनक दू बजे; गोवरधन आए ओछाइन पर नहि जा माने आराम करै लै, खुशीलाल ऐठाम बिदा होएत पत्नी कें कहला - 'गाम मे समाजक बैसार दुर्गापूजाक लै हएत, से कनी बुझने अबै छी।'

एक त ओहुना जगत-जननी दुर्गा मान्य छथिहे तखन माइक हृदय (मातृत्व माने पत्नीयो) त सहजे मनमस्त त छथिहे अछि, तैं पतिक बात सँ पत्नी (लडुदारक) मने-मन मुंगबा मोन मनमे फोड़ै लगली। तैं बजली किछु ने, आँखिक इशारा सँ एतबे पति (गोबरधन) कें कहली जे हमरो हिस्सा नै छुटे। जहिना कोनो बच्चा कें पहिल दिन कोनो नव विद्यालयक प्रवेश दिन खुशनुमा होइ-ए तहिना गाम मे सामाजिक रूप मे जँ कोनो सामुहिक उत्सव होइ-ए त गामो खुशनुमा भइये जाइ-ए।

खुशीलाल आ गोबरधनक घर आएक अगले-बगल, कहाँ भरिक दूरी कहब जे एतबो दूर जाइ-लै पति के माने मर्द कें जाइलै पत्नी सँ परमीशन काज पड़ै-ए। बात ठीके जे जँ एहनो- एहनो छोट-छीन काज लै पति-पत्नी सँ आ कि पत्निये पति सँ जेवा लै (सामिल हेवा लै) आमु मे आवेदन दाखिल करत उ ठीक बात ऐछ माने मे नहि मेल जे ऐहेन व्यक्ति जीवन मे केना पुरतोल (पुरॅल) जाएत। मुदा से बात नहि अछि बात अछि बाजितपुर मे पूर्ण सामाजिक रूपक बीच संबंध स्थापित धार्मिक परिवेश मे काबा। नीक बात, मुदा धार्मिक रूप कि आ केहेन से आवन नहि, आवन एतबे जे समाज मे धार्मिक अनुष्ठानक बैसार छी।

ओछाइन पर पड़ल गोबरधन कें देखिते खुशीलाल बैसैत बाजल - 'भैया, आइ दुर्गापूजाक बैसार छी। से चलबइ कि ने।'

सोझ मतिया गोबरधन आए, चौकी पर लग मे बैसैत

पृ०-२

बाजला- 'बौआ, अपना दुनू गोरे ते एक जतिया दियादे आ पड़ोसियो भेलियै, ते तोंरे से ने पुछबह।'

गोवरधन आएक बात सुनि खुशीलालक मन मे भीतर जमल खुशी मे बढ़ोत्तरी भेल। ओना आबन धरिक जे संबंध खुशीलाल परिवारक आ गोवर्धन आएक परिवारक रहल ओइ अनुकूल ऐहन खुशीक कोनो मेहत नहि अछि, मुदा खुशीक कनेक इ रूप खुशीलालक मन मे जगल जे गामक एक-एक परिवार जन मे जँ सामाजिक चेतनशीलताक रूप जगै-ए त ओ खुशीक बात भैये गेल।

ओना खुशीलाल इहो मने-मन बुझि रहल अछि जे गोवर्धन भाए सोझमतिया लोक छथि, तैं ई नहि जानि रहला अछि जे एक त अविकासित तेहेन उजारो बनैक गुलामी सँ लादल समाजक उपज अपना सबहुँ छी तैं केहेन फल-फूल फलाइ-फड़ै जोकर छी। खुशी आएल खुशीलाल बाजल- भैया, आब तूँ सब चौथापन मे आएल जाइ छह तखनो जँ धरम-करम नइ क' लेबह आ बीचे मे मरि-हरि जेबह, तखन इ त जिनगी अकारथ मे चलि जेतह कि ने?

बिचारक बाढ़िक बिचड़ैत सिसकैत सिहकी लगिते गोवरधन भाए बजला- 'अखैन ते दुपहरे अछि, बैसार करबैन हएत (हेत)' ओना खुशीलालक मन मे बिचार उमकैत जे एक घंटा मात्र बैसार शुरू हैइ मे शेष रहल अछि, तैं बिचार आबने सँ जँ बिचारक दौड़ गोवर्धन भाएक मनमे शुरू क' दिअनि त ओ आरो बेसी अनुकूल रहत। तैं किअए ने इहो बात जना दिअनि जे भैया अपने सबहक केने गाम मे सम्पन्नता आबियो गेल अछि आ जे बिपण्णता अछि ओकरा मेटा सेहो सकै छी, तैं भारी-भारी माने नमहर-सँ नमहर, दुर्गुण मुकाबला करैक शक्ति सेहो आबि गेल अछि। मुदा आबन गोवर्धन भाए बैसन जोकर भेल भैसी सेहो आएत। घड़ी देखैत खुशीलाल बाजल- 'भैया, बैसार शुरू होइ मे एके घंटा बाकी अछि। तैयारो होइ मे समय लगबे करत तैं आब तैयारे हुअ।' गोवरधन आएक बिचारक वेग मे जेना बहैत बेग (धारा) मे साधु सँ जेहेन धकिआल जाइ-ए तेहेन ...

पृ०-४

~~अछिआ धारा बेगवत होएब~~ तहिना गोवरधन भाइक मन मे उत्कंठित
रूप पकड़ने सेहो बेगवत होइत अछि
भेलैत। बजला – 'बौआ खुशी, आ समाजेक बैसार छी, ओना अहिना
सब दिन समाजक बीच रहलौं तेइसे बर्गो (वर्ग) मे ने आएल
तैयार होइ मे किछए समय लागत। चलू हम तैयारे
छिअ।'

निरन्तर भेल खुशीलाल बजला – 'भैया, बीच मे चारि
पीब लगु छी। बैसारे छी, तइ मे समाजेक बैसार छी,
अगिला साल सँ सेहो तीन सालक अतिचारे पड़त, जे कहाँ कथी-कुटुमैतीक
गप ठीक भेल तखन बैसारक कोनो ठेकान अछि। जे कते काल चलत।'

एक त ओहुना गोबरधन भाइ, साँझ-भोर-चारि पीबै छथि
मुदा समाजक आग्रहो त अपन महत अछि। दुनू गोरेक
बीच गप-सप बजलो घुसैन कि बीचे मे खुशीलाल
क पत्नी, चाह ने ने आएल आगू मे रखि देलकैन।

एक त सोलहो आना (पूर्णसमाजक) पहिल उत्सवक बैसार
मे प्रवेश अछि खुशी गोवरधन भाइ, मन मे होइत तइ परसँ खुशीलालक आग्रह
(पत्नीक आगल चाह) देखि बजला – 'बौआ, हम त इनारक
बेंग भेलियइ, अपन नून-रोटी से कहियो उघड़ा भेल।'

ओना बाजिव पुरुक किसानक जिनगी आन गामक अड़ोस-पड़ोस
गामक किसानक जिनगी सँ सबतरहे अगुआएल अछि।
जे खुशीलालो देखा-कुकि रहल अछि, मुदा समाजक बीच अपना
कैं निर्बल (निर्बलक निसल) निर्मल बना सम्मिलित नइ भएल, ताबीच
एकरूपता केना औत। जे केकरा देखब आ अपना सँ ऊपरो समाज
अछि आ निच्चो त अछिए। जे केकरा देखब आ केकरा अनदेखी करब।
जिनगीक यैह दुनू दिशा दुनियाँ कैं विभाजित केने
अछि। मुदा जे अछि ओ दुनिया मे अछि दुनियाबला
(विभाजित नहि, ओहुना विभाजित केने अछि जे दु तरहक मनुख बना, दु दुनियाँ बना देने अछि।)
अपन कुकरइ। गोवरधन भाइक विचार कैं चुटकी चुटकी अबैत
(चुटकी अबैक माने भेल चुटकी बिकला कटैत) खुशीलाल बाजल – 'भाए
सहाएब, जखनैं अहाँ अपना कैं इनारक बेंग कहै
छी, तखनैं बाकी कि रहैत छी।'

~~बीचे मे~~ ~~भेल~~ अपन उपर आक्षेप देख गोवरधन
भाए बीचे मे बजला – 'से कि बौआ?'

बात-चीतक क्रम मे दु तरहे विचारक धाराक बीच विचार
उठैए, एक नइ कुकने, दोसर विचार कैं रोकक खियाल

कथा - विचार भेद - पृ०- ४ - विचारान्तर | सुशीलाल छोड़ संबंत

विचार कैं स्पष्ट कैत बाजला भाए सहाएब, पतालक लोगक माने भेल (गह्राइ सँ) शरीर मे जा कऽ दुनियाँ देखब। मुदा....'

अपन स्नुजैत भक्त कैं देखिते गोबर्धन भाए बजला,-'बौआ हमरा बातक कोनो दुख नइ करियह। मौगी-मेहरि (मेहर) मुँहे सुनि कैं सीखिने छी, तैं बजा गेल।'

चुस्की लइत खुशीलाल बाजल -' भाए सहाएब, यैह मौगी सब ते अपन असमिया (माने कमरुपिया) रूप बना मरद सब कैं भेड़ा- भेड़ी बना बाघ-बोन मे अनेर चरै लेल छोड़ि दइ-ए।'

गोबर्धन भाए रस कँ चोहैत बजला - से सैरपो (सरिपँउ) हौ खुशीलाल, ?'

गोबर्धन भाएक रसिआएल मन कैं असिआइ सँ समटैत खुशीलाल बाजल -' भाए सहाएब, एक बेर जे दुनू गोरे निकलब आ किछो देखलेत तैं कहत जे ई दुनू गोरे बुधिबिचड़ी कऽ नैने हैत, तैं कनी- आगू पाछु भऽ कैं बढ़ी।'

सैह भेल, गोबर्धन भाए, बैसार स्थल दिस आगू बढ़ला। गोबर्धन भाए कैं लग सँ हटिते खुशीलालक मन आजुक समाज सँ लऽ कऽ आदिक समाज (अपन गामक) चाड़ि ऑर दौड़ गेल। दुर्गापूजा गाम- गाम होइते अछि, बाजिबपुर मे सेहो हैत। गाम मे धार्मिक नींव पर पूजा हएत, नीक बात। अरबन बाजिबपुर मे अनेको धर्म स्थल अछिये। कतौ धुजा फहरा, कतौ मूर्तिक रूप मे। कतौ गाछ-बिरीछ मे फाटल- पुरान कपड़ा बान्हि, त कतौ बिनु धुजेक। कोनो- कोनो ओहनो स्थानो अछिये, जेठाम लोक (समाजक) एक ठाम बैसि रामोलीला आ कृष्णो लीला (रास) देखते आबि रहल अछि। धरमक पोथी सँ सेहो सब घर मे रहितो सब रंग सेहो अछिये एके नाहि अनेको रंगक (साम्प्रदायिक रंग चढ़ल) अछि। कोनो घर गीता- भागवत सँ सजल अछि, त कोनो घर कबीर- मंसूर आ बीजक सँ सजल अछि। तहिना अनेको रंगक विचार किछो बुद्धदेवक हृदय सँ जुड़ल तँ किछो जैन महावीर सँ जुड़ल, त किछो मार्क्स- लेनिन सँ जुड़ल त किछो हिटलर- मुसोलिनी सँ जुड़ल सेहो अछिये। आठ सँ बरखे पूर्व अहिंसा

Ajanta Officer

सँ गामक वास शुरू भेल, तउ सँ पहिने सँ कहियो अनेको इंगक धर्मो आ धार्मिक सम्प्रदायो चलित आबि रहल अछि। जहिना सिद्ध-सम्प्रदायक सिद्धक भ्रमण सँ प्रभाव पड़ल, तहिना नाथ सम्प्रदायक प्रभाव नइ पड़ल सेहो बात नहिये अछि। तउ मे जखन वाजिदपुर कैं बसब सइये-डेढ़ सय वर्ख माने चारिये पीढ़ी बीतल छल कि एक संग कबीर तुलसी, सुरदास इत्यादि-इत्यादि अनेको मठमान्य अपन प्रभाव गाम-गाम सेहो देबै केलैन। जेकर असरि (असैर) वाजिदपुर मे नइ भेल, सेहो केना नइ कहल जाएत। मुदा सब कथुक बावजूदो आइयो सुत्रवत् समाजक जीवंतता नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। आगि लगला पर (गाम मे कोनो घर मे) जाति-धर्म सब एकबइ भ' जाइ-ए, तैं कि बिआह-दानक गोत्र-सूत्र बउबइ नइ कौ-ए सेहो केना नइ कहल जाएत। आब कहब जे रस्सा-कस्सी आ डोरा-डोरी केना एकबइ हएत। समाजकैं ने अपन शक्तिक आभास भ' रहल छनि आ ने अपन जिनगी समतल बनबैक दिशा। समाज माने मनुष्य ओहन शक्तिमान अछि जे अपना कैं उद्धारो क' सकै-ए आ अत्याचारो त करिते अछि।

आन गाम जेकाँ वाजिदपुर मे सामाजिक बैसारक रूप बदलल-बदलल सन छल। आन गाम मे बैसारे समय मे माने सामाजिक बैसारक समय, मे कियो टेका खोलैत सुलबाहिक बहन्ना बनौ नइ उपस्थित हेता त कियो मड़ैस कैं पाल खुआबै विदा होइ छथि। एते सचेत सतर्की वाजिदपुर वला सब मे छलनिहैं जे समाजकैं सिर प' चढ़ैत सामाजिक संकल्पित रूप कैं महत्व दइते छथि।

ओना आइ सँ चारि साल पूर्व गाममे कियो दुर्गापूजाक चर्च गपे-सप मे उठौलैन जे गाम मे पूजा हुअए। जइ गाम मे मास-मास दिन रामलीलाक भार गौआ उठा साले-साल देखै छथि, जइ गाम मे दर्जनो अष्टयाम कीर्तन चौबीस घंटा (दिन-रातिक) होइए जइ गाम मे एक पनरैदिया माने एक पक्ष भागवत कथा होइ-ए

पृष्ठ 6

तइ गाम मे दुर्गापूजा कोना आरम्भ भेल। ओहुना त दसमी मे माने शारदीय नवरात्रा मे घरे-घर पूजा होइते अछि। पाठ लोक करिते छथि। भेल त एतबे ने जे ओ सम्मिलित रूप मे माने सामूहिक रूप मे हुअए।

सम्पन्न गाम बाजितपुर ऐ दुआरे कहल जाएत अछि, जे चौबगली गाम सँ सब तरहेँ, जहिना किसानी जिनगी मे तहिना बौद्धिक जिनगी मे सेहो अगुआएल अछिये। जे बात बाजितपुर बसा नीक जेकाँ बुझै छथि। भेल त नहि रहा। हिसाबे गामक अगुआएल-पछुआएल अछि जे कते जमीन केहेन उपजा दइवला अछि आ ओकर रकबा कते अछि। तहिना गाम मे पढ़ल-लिखल माने शिक्षक हिसाब सँ कते कोन गाम मे अछि। छतीसो वर्ण सँ भरल जाइतिक वास भूमि छी बाजितपुर। कहब जे आबन धरि लोक छतीसे वर्णक चर्चा करै छथि तेकर तइ सँ बेसी जाति केना पड़ल। जइ बिचार मे छतीसे वर्ण पड़ल ओ बढ़िला भ' गेल, किअए त कैतौ फड़ैए से जे 'सवा लाखे..' पिढ़ि के कुँऔं बिभाजन रेखा दितथि त दोसर रंग होएत। खैर जे अछि।

बाजितपुर मे हिन्दूओ छथि, मुसलमानो छथि, तइ संग एहनो त छथिये जे दुनू दिस छथि। आठ सय बरखक नमहर जिनगी मे गाम अपनो चेहरा देख रहल अछि आ आनो-आन गामक सेहो देखिये रहल अछि। अनेक जाति, अनेक धर्म, अनेक विचार, अनेक रास्ता रहितो बिचारपुर मे जाति-धर्मक कहियो तना-तनी नइ भेल। नइ होइक मुल कारण भेल अछि समाजक बीच बेवहारिक जिनगीक संबंध।

आइ धरि जते लोक, नाच-तमाशा छोड़ि, एकठाम कोनो काजे एकत्रित भ' बैसला, तते आइ धरिक सामाजिक बैसार मे नइ भेल छल। तँए कहब जे बैसार भेने ने केँ सेहो बात नहिये अछि। कहियो ऐगला बौद्धिक पानिक आशा सँ धारक मुँह बन्हैत बैसार होइ-छल, त कहियो आपुसी घरक झगड़ाक। ओना टुकड़ा-टुकड़ी अनेको देवस्थानक पूजो-पाठ बैसार सेहो होइते छल। आबि रहल अछि।

तीन-चारि साल सँ दुर्गापूजाक गप-सपक चालि अबैत बिचार समाजक परिवेश केँ एक मुहरी बनाओल देने छल, तँए बैसार मे सहमत बनै मे देरी नहिये लगत, ई आशा सब समाजदार लोकक मन मे छलनिहेँ।

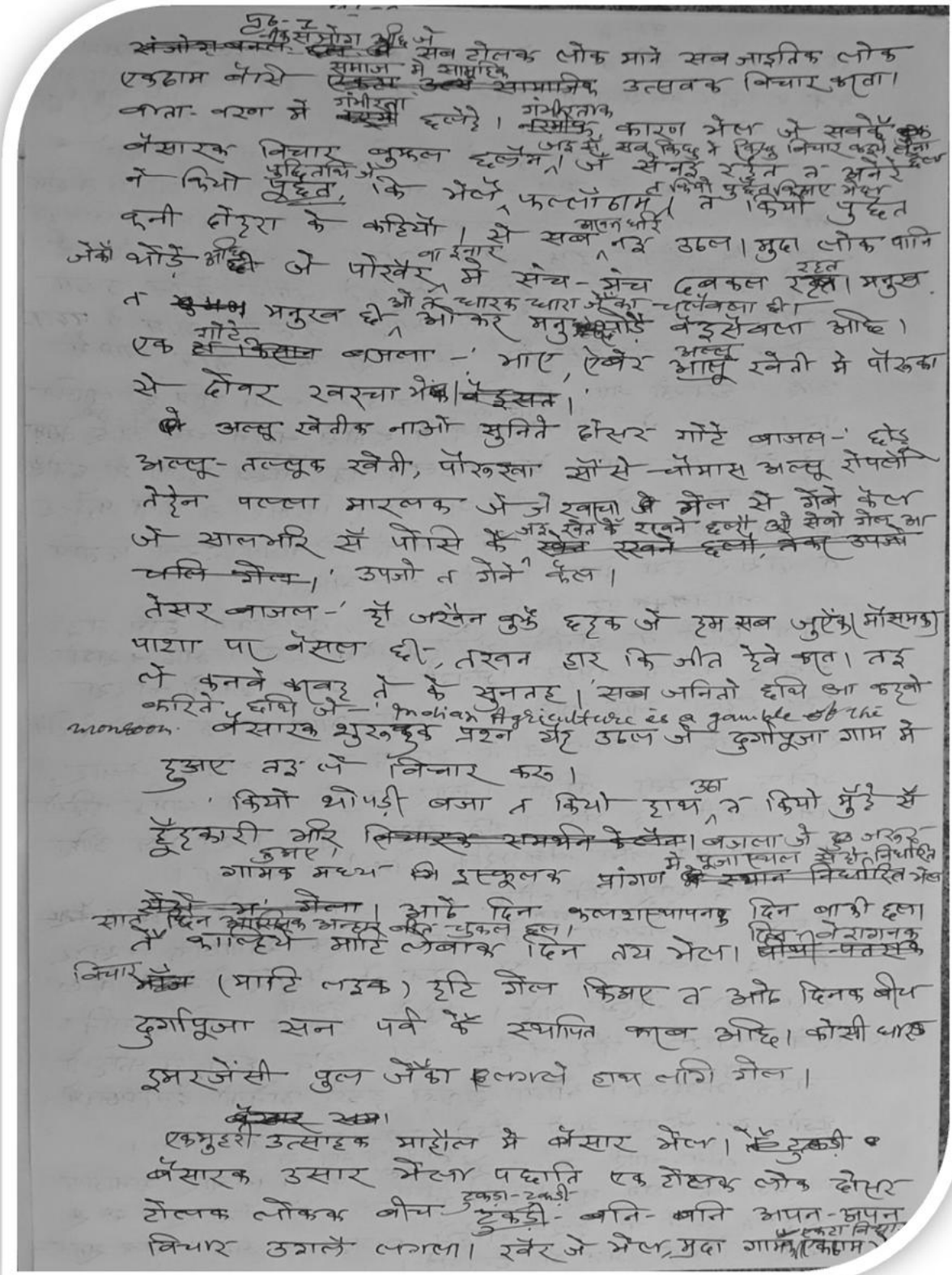

८६-७

संयोग अछि जे सब टोलक लोक माने सब जाइतिक लोक
एकठाम बैसि समाज मे सामूहिक सामाजिक उत्सवक विचार भवा।
वाता-वरण मे गंभीरता छलैक। गंभीरताक कारण भेल जे सबकेँ
बैसारक विचार बुझल छलैन। जइ सँ सब किछु मे किछु विचार कइये लेने छल
जे सेहो नइ रहैत त अनेरे ने कियो पुछैत, कि भेलै, फल्लाँठाम। त कियो पुछैत
कनी ठेहरा के कहियौ। से सब मालुम धरि नइ छल। मुदा लोक पानि
जेकाँ थोड़े अछि जे पोखैर वा इनार मे सेच-मेच छबकल रहैत। मनुख
त मनुख छी औ तें धारक धारा जेकाँ चलैबला छी।
एक गोटे बजला- 'भाए, ऐबेर अल्लु खेती मे पौरुका
से ठेवर खरचा भेल।'
अल्लु खेतीक नाओं सुनिते दोसर गोटे बाजल- 'छोड़
अल्लु-तल्लुक खेती, पौरुका सौंसे चौमास अल्लु रोपलौं
तेहेन पल्ला मारलक जे जे खाचा भेल से गेबे केलौं
जे सालभरि सँ पोसि कै जइ खेत कैँ रखने छलौं ओ सेहो गेल आ
उपजो त गेने केल।'
तेसर बाजल- 'हौ जखैन कुइँ छइक जे हम सब जुऐंक (मौसमक)
पाशा पर बैसल छी, तखन हार कि जीत हैबे करत। तइ
लें कनबे करबह तँ के सुनतह।' सब जनिते छथि आ कहबो
करिते छथि जे- 'Indian Agriculture is a gamble of the
monsoon.' बैसारक शुरुहक प्रश्न यैह छल जे दुर्गापूजा गाम मे
हुअए तइ ले विचार करू।
'कियो थोपड़ी बजा त कियो हाथ उठा त कियो मुँहे सँ
हूँहकारी भरि हुअए।' बजला जे गामक मध्य इस्कूलक प्रांगण मे पूजा स्थल सेहो निर्धारित भेल
आठे दिन कलशस्थापनक दिन बाकी छल।
सात दिन आसिनक अन्हार बीति चुकल छल।
तैँ काल्हिये माटि लेबाक दिन तय भेल। दिन गनेसागनक
विचार (माटि लइक) टुटि गेल किअए त आठ दिनक बीच
दुर्गापूजा सन पर्व कैँ स्थापित करब अछि। कोसी धारक
इमरजेंसी पुल जेकाँ फटाफट हाथ लागि गेल।

एकमुहरी उत्साहक माहौल मे बैसार भेल। बैसारक उसार भेला पछाति एक टोलक लोक दोसर
टोलक लोकक बीच टुकड़ा-टुकड़ी बनि-बनि अपन-अपन
विचार उगालै लगला। खैर जे भेल, मुदा गामक काम

कथा - विचार भेद - विचारान्तर - पृ०-5

आजुक राति, माने दुर्गापूजा बैसारक राति, सन सुन्दर राति कहियो बाजितपुरक नहि भेल छल। बेंट फुटा हँसुआ-खुरपी जँका कोनो कोनोचरक पछुआर मे फेकल रहै-ए त कोनो कोनचरक अगवास मे तहिना ने अपनो सबहक गाम अछि। जाति-जातिक बीच झगड़ा, झगड़ा किअए से अबन नहि, धर्म-धर्मक बीच झगड़ा, उ टोल-उ टोलक झगड़ा, ई सम्प्रदाय उ सम्प्रदायक बीच झगड़ा, तहू संग पड़ोसिया बीच परोसपतक झगड़ा, त परिवारोमे पारिवारिक झगड़ा, त दुनू परानी मे स्त्री-पुरुषक झगड़ा, बेटा-बेटी संग बाप-माए, बेटा-बेटीक झगड़ा, एकरे ने कहियौ कि खुरपी कहियौ, चाहे कि बेंट फुटा हँसुआ-खुरपी कहियौ, बराबरिये नरहर नोरि फुटा हँसुआ ने भेल। मुद्दा सँ नहि बाजित पुरक आजुक राति वृन्दावनक रासिआएल राति जँका भेल, स्त्री-पुरुष बीचक झगड़ा, भरि राति दुर्गापूजा क विचार मे मनरंजन करैत रहल तहिना एकबहु परिवार मे, जेकर माने भेल जे जइ परिवार मे पत्नी-पत्नीक बीच सौहार्दपूर्ण जीवन छनि, ओ परिवार सँ आगू बढ़ि टोल-पड़ोसक बीचक मतभेद कें हटबैत गप-सप मे राति बितौलनि।

ओ जेहू गामक समाज एकजुट्टी भ' धार्मिक क्रियाक सूत्र-पात केलैन, ई एक नव परिवेशक सूत्रपात भेल। जखने समाजक सब एकठाम, बैसि एक कदम आगू डेग बढ़ेबाक विचार मे सहमत, भेल पद्धति सम्मिलित हएत तखने समाजक दिशा निर्देश हएत। आइ धरिक जे एक-दोसराक आम हड़पैक जे प्रक्रिया रहल आ ओ हड़पनिहार कैना चुप-चाप बैसल रहि जाएत। ओहन विचारक लोकक बैसार सेहो भरि राति चलैत रहल। केकर अन्हार केकर इजोत माने केकर अन्हरिया (कृष्ण) परव (पक्ष) आ केकर इजोरिया (शुक्ल) परव, से के निर्णय करत। ओ त समाजे ने कएल सकै-ए। पुरानपंथीक मात्र साम्प्रदायिके नहि आर्थिको) मइनथाना सब एकठाम भ' दुर्गापूजाक बनबैक दोसर स्थान पर स्थापित कौ लै भोरहरबे, माने काल्हि समाजक बीच जे माटि लेबाक समय निर्धारित भेल छल, तइ सँ बहुत पहिने दु टा महींस आ गोटि-पड़रा मारौ लोक कैं संग कैने, मे माटि ल' स्थान

पृ०-९०

स्थापित क' लेलैन।

समाजसूत्र सँ अनभिज्ञ लोक, अपन विचारक दुहैत स्थान (दुर्गास्थान) आ दोसर स्थान कें सृजित देख विरोध स्वाभाविक छल। विरोध भेल। गामक समाज अड़ि कें अपन विचार पर ठाढ़ भेल। गाम मे दु टा स्थान (दुर्गास्थान) स्थापित भ' गेल। ओहि सँ पचास वर्ष बीतलोपरान्त अखनो ओहिना दु फाँक अछि। पीढ़ी बदैलल गेल मुदा विचार मेदक गिरह नहि खुजल।

समाप्त
४/१२/०१८

मा – अनचोकक अन्हार – पृ० 1

दु बजे राति, भोरक आगमन नइ भेल इल। जीवू काका ओछाइन सँ उठि लोटा-डोल नेने चापाकल (कल) पर पहुँच दु बेर हेन्डिल चलौलनि कि बिजली गुम भ' गेल। आदोक अन्हरिया पखक अन्हारक चतुर्दिशिक अन्हराएल-कजराएल अन्हार, एक हाथ हेन्डिल पर रहनि से त' जीवू काका अनुमान सँ बुझै छला जे चलौने (हाथ-चलौने) कल सँ पानि निकलत मुदा दोसर हाथ जे खाली रहनि से हेरा गेलनि, हेरा ई गेलनि जे इन्च-इन्च (ईंच-ईंच) नइ सुझने दोसर हाथे कल कि हएत। ने डोल देखै दैत आ ने लोटा, जँ रपा-टोइया कऽ उ' माने टघोरि कऽ, जँ तागतियो लेब तइयो ऐ समय सँ आगू हेना बढ़ब। रस्ते अन्हार सँ अन्हरा गेल अछि। जइ सँ रस्ता बाट मे रोड़ा बनि ठाढ़ अछि, कतौ ने कतौ ठेस लगबे कात आ ओंघरा कऽ खसबे करब। तैठेन अन्हार मे पड़ि गेल छी जे किछो खोजो पुछड़ि नइ कऽ औत।

दु बजे राति मे जीवू काका कें ओछाइन पर सँ उठै कऽ कारण अपन सोचक अनुकूल छनि। अपना ढंगे सोचै छथि अपना हाथे-पएरे चलैत जिनगी बितबै छथि। जइ सँ दोसराक खुशामदे किए करए एहेन (अर्थ) विश्वासक संग जीबैत रहल छथि। जिनगीक मुक्ति जे स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक कहल जाइ-ए। जेकरा राजनीतिक भाषा मे गद्दीक सुख कहल जाइ-ए। जीवू काका स्पष्ट सोच छनि जे खान-पानक जे नियम-कायदा अछि ओ अपना जगह पर भले नीक हुअए मुदा ओकर नीकपन सबठाम काज दैत रहै सेहो बात नहियें अछि। जखन गाड़ी-सवारी सँ चलैक चलैन जोड़ पकड़ि लेलक अछि तइ सँ हम हटल छी, से त' नहि छी गाड़ी छी कतौ, टायर-ट्यूब फुटत त' कतौ आगू-पाछुक सवारी (गाड़ी) सँ टकराएत, बत कतौ कोनो खाधिये मे खसि कें उनैट जाएत

[तेहाम अपन निर्णय-२ कायदाक जिनगीक कि सफल भेल।]
अपन ~~कोनो दोस्त भेल~~। मुदा मरल के? तें ऐहेन रस्ता
पकड़ि ~~चलबे~~ चलब सोचहो आना बिसबास अछि आदि [जखन जिनगीसँ बिसबास अदि तखन शतायु (सौ बरस) जिनगी कैनी सेहो]
अइ से इतो ने करो- [बीच मे] ओपचराएब अछि। ताहिना योग
तंत्र कैँ सेहो कुर्क छोपि। जे आदमी भरि दिन चिमनी पर
पजेवा अथवा खेत मे कोदारि पाड़ैत, ओत आ तखन जँ
ओ व्यायम कोँ लगत तखन देहक दशा कि हएत? सेहो
ओकर ने बुझतै जे [ओहन अछि।] [शतायु] सौ वर्ष (सय बरीस) जीबैक जिनगी क्रिया के ~~संदेश~~
तैं ई कहब जे ~~चारवाक जी को~~ [बृहस्पति सन गुरु चार्वाक कैँ नहि ६। सेर]
~~चढ़ सेहो, बिचार रहने जे हेन बिचार छवि~~ [चढ़ नहि छनि सेहो केना बहै नइ कहल जाएत। से त छनि हैं] तेहने बिचार
जीबूओ कमकाक छनि हैं ~~सेहो नहि~~ [अपना बिचारे मस्ती मे रहैत छथि।] ~~साफ~~ अपन सोच छनि [असपस्ट]
जे जेइ समाज मे श्रमशक्ति धुरा गेल आदि [आ लटकल रहल] माने [अदि]
श्रम चोरक बोड़ाय भ' गेल अछि, तेँ ~~जइ सँ~~ जइ सँ
घटैत-घटैत श्रमशक्ति ढ़ ~~चंद्र~~-तीन घंटा पर आबि गेल
अछि तइठाम सँ जते गुणा अपन शक्ति कैँ संयोगव
(संजोगव) ओतेक गुणाक वृद्धि ने जिनगी मे भेल। जेठाम
सय वर्ष (वर्ख), [जीबक] जीबि शब्द कितावक बोत भ' गेल अदि, वास्तविक [आरुदा]
जिनगी उखड़ि कैँ (देशक हिसावे माने आयुक गणना हिसाव
सँ) पचास-साठि वर्ख पर अँटकल आदि आ सय वर्खक
धुनि ~~सँ धुनियों- चुन चोट~~ [मे रहब तेठाम धुनिया कि धुनकी मे नइ कनत, तेठाम अपने ओ त धुनबे करता] छी। ओहिना नेइ ने बिदकपाति
खिसिया कैँ कहलनि जे 'आधा जीवन हम नीन गमौलौं।
ऐठाम आबि जीबू कोना अपना मनक ~~बात~~ बिचारक
बाट पकड़ि चौबीस घंटाक दिन-राति कैँ सोलह से
अठारह घंटाक अपन दिनचर्याक ~~~~ कोल्हु गड़ि अपन
जिनगीक ~~गाड़ी~~ रथ कैँ [रथी बनि] आगू मुँहे ससारि रहला अछि।
~~मने~~-मन मे एते त बिसवास बनल छनि जे कर्मक धुनि
छी, जे जते काल से तते पौत [पोते] आ जे जेहेन
काल से तेहेन पौत। [आ जे जेना पौत से तेना पोत।] अहीं दिनचर्याक ~~चलै~~ रथ

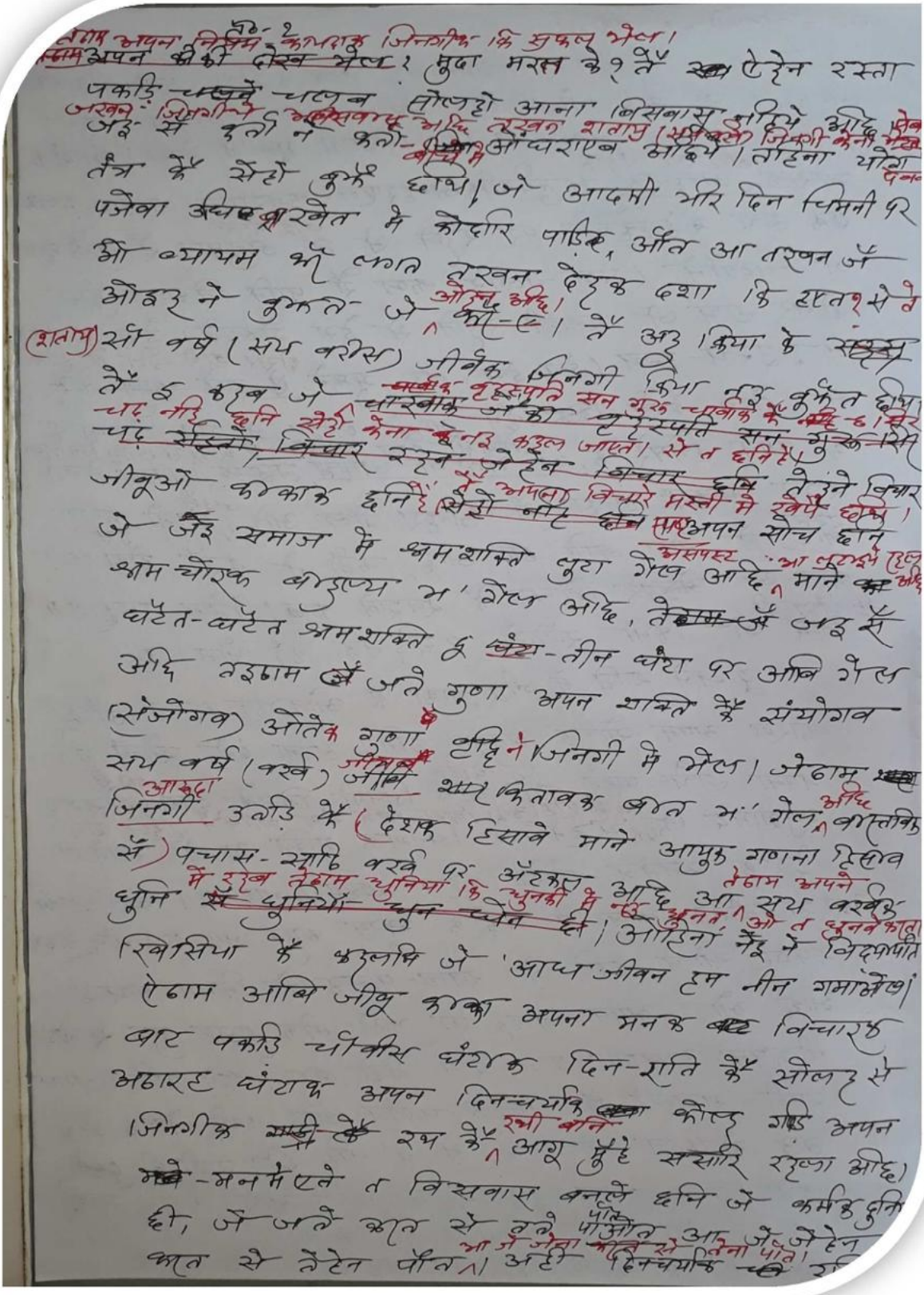

कल पर पानियो आनै आ मुँह- हाथ धोएक खियाल सँ जीवू काका गेल छैला। दरवज्जा, जेहाम जीवूकाका रहै छथि तखाम से सए गज माने डूं सय हाथक दूरी पर कल छनि। करीब जे चार्वाक सन जखन जीवू काका छथि तखन ऐहेन नेगरकट बिजली पर सोहथो आना आश्रित किअए भेला, जइ है ऐहेन फेर मे पड़ला। फेड मे पड़ैक कारण भैलनि एक दिस बिजलीक मते ओहाइन पर सँ उनटे रहथि। ओना बिजली पर आश्रितो छथि आ नहियो छथि। बिजलीक अतिरिक्त सेहो अपन इजोतक ओरियान केने छथि, मुदा से अनचोके मे छुटि गेलनि। फेर करीब जे जखन जीवू काका अपन जिनगी अपना हाथ मे नेने चलै छथि तखन ओहाइन पर सँ उनटा पद्धति भकुआएल किअए रहला? ओना जीवू काका ऐ बात कैं नीक जेकाँ बुझै छथि जे लोक भकुआइ-ए नीन टुटला पद्धति। 'नीनो त नीन छी, कोनो पकला पद्धति टुटै ए त कोनो आम जेकाँ कोनाएल डम्हाइले मे टुटै ए तँ कोनो सोलहनी काँचे मे टुटि जाइ-ए। जे जते काँच मे टुटल ओ ओते भूत बनि लगि भकुआने हटत किने। मुदा से जीवू काका कैं नहि भेलनि। जीवू काका जनै छथि जे रावणी जिनगीक सहोदरे भाए कुम्भकर्ण सेहो छी, बिना ओकरा मारने रावणी जिनगी रामी जिनगी नइ बनत, मुदा ओकरा जानो सँ मारि देने ते काजो नहियें चलत तैं ओकरा अधमरु करि कैं छोड़ि देइक अछि, से केने छथि।

एक हाथे कलक हेन्डिल पकड़ने, दोसर खाली हाथ अन्हार मे बौआएत, जीवू काकाक मनमे जेना अनचोके मे कजरिआएल इजोत छिटकलनि। कारिख से काजर बनै ए, आ काजर कैं लोक आँखि मे एहुमारे लगबै-ए जे आँखि मे एक चमक सेहो होइ-ए। जइ सँ जेकरा लगौला सँ आँखिक चमकी जगै-ए, तेहिना

पृ० ४

काका कें कुअरिआएल अन्हार मे सेंही भेलानि।

जीबू काकाक विचार मे कुअरिआएल चमकी जकाँ जेना भक्क खुजलनि। नइ सँ चलेँ जोकर रस्ता फड़िच बुझि पड़ै लगलनि। अपन कोठरी मे आबि अपन भोरक क्रिया-कलाप मे लागि गेला।

पौने तीन बजि गेल, भोरक चौंठ जगि गेल। अपन महीस काल्हि साँझे सँ ठाढ़ि गेल छल, मुदा अबैत अन्हार माने राति, कें देख महीस कें पाल दिअबै नइ गेलौं। मन मे-विचारि लेलौं जे जखने भोरक आगमन होएत तखने विदा होएब। सैह केलौं। महीस कें छोड़ लगा पीठ प चढ़ि ठेहैत-ठेहैत बौंत विदा भेलौं। जीबू काका जगले छथि, कोठरी सँ निकलि रस्ता प आबि पुछलनि-' हमरे जेकाँ तोरो कपार छह।'

जीबू काका बेसी काल चिक्कारी (अलंकारिक भाषा) मे बजै छथि, तैँ धाँए द' किछु ने बजलौं। एतबे कहलनि-' काका जेँ अहाँ सन कपार हमरो भ जाइत तँ अहीं जेकाँ ने हमहूं आबन ओछाइन पर बैसल (बैसल) रहितौं।'

जीबू काका अपन विचार कें समटैत बजला-' आइये रातिक बात सुनबै चाहैछह।' -चाह लिअ।

आब कहू जे ऐहन होए जे काज छोड़ि गप-सप सुनितौं, मुदो सँ जीबू काका के कहबानि केना। एतबे कहलएनि-' काका, अपना नाचे सब नचबो कें-ए आ अपने देखबो कें-ए।'

नहला पर दहला फेकैत जीबू काका बजला-' सबके सब नचबो कें-ए आ सबकें सब देखबो करिते अछि।'

कहलिएनि-' पाल दि खुआ अबै छी तखन निचेन सँ सब गप करब।' 'आबन जाए दिअ।'

गोष्ठी- १६-८-०१८

कथा - हारि केना मानब। पृ० - ९

शारदीय नवरात्रा (आसीनक दुर्गापूजा) चारि दिन पहिने समाप्त भ' गेल, काल्हि पुरनिमा (पूर्णिमा) छी। सुभ्यस्त समय रहने नवरात्रा धुम-धाम सँ सम्पन्न भेल। सूर्यास्त भ' गेल ब्रह्माजी गायित्री-जप शुरू ए दुआरे नहि कैने छेला जे इन्द्रासन सन सँ कौलुका भारक आदेशपत्र नहि आएल छलनि।

सूर्यास्त होइते, होइते किअए तइ सँ पहिने चान (चन्द्रमा) आकाश मे बिन ज्योतिष्योक रश्मियोक ओहिना उगल छल, ओहिना खरखरि आएल। ई, एते जरूर भेल जे सूर्यास्त होएते मनोकरंग आ रंगोक मन मे ब्रह्माजीके लालिमा बढ़ जरूर लगल छलनि। तइ मे आइ चतुरदशीक (चतुर्दशीक) चान छी। होइतो एहिना छै जे 'उगो चान कि लपकी पूआ'। यैह चान नै ओरक सीमा पर पहुँचते पुर्णिमाक (पूर्णिमाक) बनै लगत, आ साँझ होइते पूर्णिमाक (पुरनिमाक) रंग-रूप पकैड़ उगितेँ जगमगा जाएत। जे बरहो चान सँ, माने बारहो मासक चान सँ, अवल-धवल, शीतल, शीतचरक संग कोजगराक कौड़ी पाशा (पचीसी) पर बैसल जुआरी सभकेँ सेहो केकरो हैसेबो भात त केकरो कनैबो त जरूर कावे भात। खैर जे भात, ओकर रीति छियै जे मन फुड़ते, जेना मन फुड़ते तेना अपन भात। नड़टे नाचइ आ कि नांगट बनि नाचइ, से ओ जानय।

ब्रह्माजी ए दुआरे गायित्री-बंधन नहि कए पबै छेला जे अपन ब्रह्म मुहूर्तक हिसाब नहि मिलि रहल छलनि। ओ हिसाब छी, आजुक जिनगीक विसर्जन क्रियाक काल्हुक क्रिया मे जोड़ि एकसूत्रता बनाएब। तही बीच इन्द्रासनक सिपाही आबि, एकटा चिट्ठी हाथ मे थम्हा, नमस्कार करैत विदा भ' गेल। चिट्ठी उनटा जखन ब्रह्माजी देखलनि त पहिने हँसी लगलनि मुदा राज्यादेश (शासनक आदेश) मानि राजपत्रक फाइल मे रखलनि। फाइल केँ पुन: उनटा चिट्ठी निकालि पुन: पढ़लनि। लिखल अछि - 'ए ओहन मनुखक निर्माण करैक अछि, जे आजुक काल्हुक अनुकूल हुअए।'

आइक दिन केहेन छल आ काल्हि दिन केहेन बनत ई विचार असकरे मे ब्रह्माजीओक नीक लगै छनि। तेकर कारण ई नहि जे ब्रह्माजी विवेकवान नहि छथि भरल छथि। ठीक-ठीक (सोलह आना)

पृ०-2

मूल्यांकन करैक क्षमता मे कमी छलनि जइ सँ निर्णय करै मे बाधा होएतनि। मुदा एते त' मन मे शंका छलनिहेँ जे देवगण सब ऐहेन जाबिर अछिये जे धरती पर मनुक्खकेँ निरमै काल मुँह देलिऐ खाइ-पीबै ले, दाँत देलिऐ कटै ले, कंठ देलिऐ घोंटै ले, ठोर देलिऐ ओंठ टाट-फड़क ले, तखन जे बलजोरी ओकरा सब सँ अक्षर निकालि बजेबो केलक आ अपनो बाजब भुकब शुरू केलक, तइ मे हमर विचार रहल। तेँ नीक हएत जे मने चतुर्दशीक चान सेहो उगले अछि, इमानो केँ आ धरमो केँ जगा लियै, आ बुधियो-विवेक केँ जगा विचारि लेब नीक हएत। पाँच मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। हमरा मनुक्ख निरमबेक भार भेटल छैन आ कि ओइ मनुक्ख केँ बिगाड़ि करत' हएत, सेहो भार हमरे अछि। ओ अपन विधाता अपन पोथी-पतरा देखियो केँ आ लिखियो केँ करता।

सातो बारहो मासक रूपवान चान, बारहो मासक चन्द्रमाक रूप-रंग मे मौसमक अनुकूल प्रभावित रहैए। तइ मे सबसँ सुभस्त मौसम आसिनक चान केँ राति भेटैए। चारू गोटे, माने इमान, धरम, बुधि-विवेक, केँ समाद ब्रह्माजी पठा देलनि। जावे ओ चारू पहुँचला तइ बीच मे जे खाली समय भेटलनि तइ मे ऊँघेक गेलनि जे अनेरे विधाताक काजक भाँज मे पड़ि गेलौं। अपन काजक ने जबाब-देह छी आ कि दुनियाँक ठीकेदारी अछि। जखैन इनका (माने विधाता केँ) छुट्टी भेटलनि तखन ओ घर-कनियाँ कपार मे लिखैत रहला। आब कियो काज करै छुट्टी पबै-ए आ ओ छुट्टिये भेला पर काज करै छथि। ओहुन-ओहुन लोकक भार हमरा बुते उठत। लोको त' लोके छथि कि ने, खुशामद करि क' काजो करा लेता आ उनटा केँ बाजत इ काज फल्लाँ केँ हमरी। सिखौने दियै कि भोर जब एते। सिखनैक बुद्धि अपनो छैहे तखन

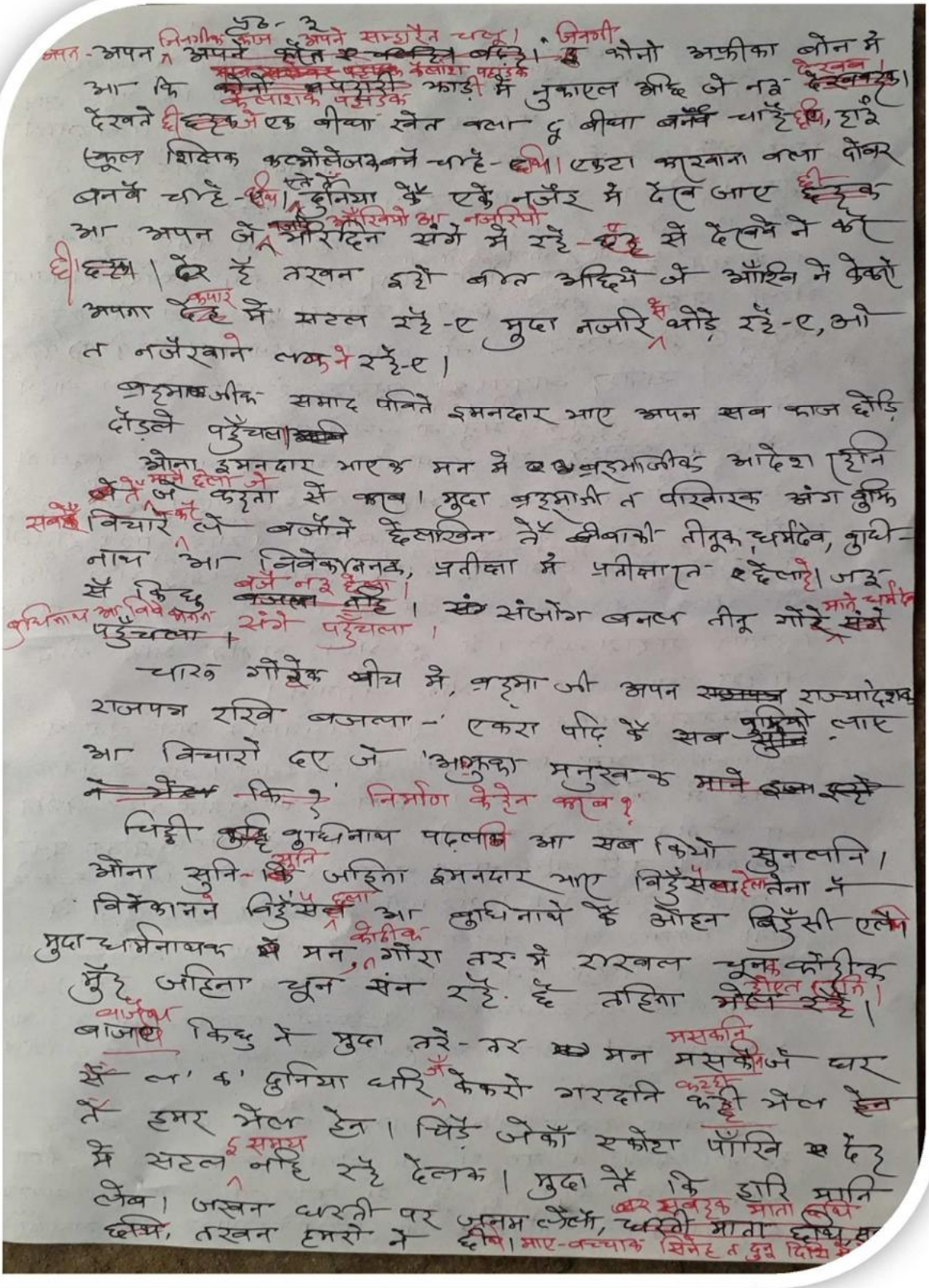

पृ०-३

अपन-अपन जिनगीक काज अपने सम्हारैत चलू। जिनगी कोनो अफ्रीका बोन मे आ कि कोनो कुल्हाड़िक पहुँचसँ बाहर झाड़ी मे नुकाएल अछि जे नइ देखब। देखते छी जे एक बीघा खेत बला ६ बीघा बनबै चाहै छथि, हाइ स्कूल शिक्षक कओलेजक बनै चाहै छथि। एकटा कारखाना बला दोबर बनबै चाहै छथि। एते दुनिया कें एकै नजैर मे देखल जाए छी आ अपन जे आँखिओ आ नजरिओ दिन संगे मे रहै-ए से देखबे ने करै छी। देखै छी तखन ईहो बात अछिये जे आँखि ने केकरो अपना कपार मे सटल रहै-ए मुदा नजरि से छोड़ै रहै-ए, ओ त नजैरखाने लग ने रहै-ए।

ब्रह्माजीक समाद पबिते इमनदार भाए अपन सब काज छोड़ि दौड़ले पहुँचला।

ओना इमनदार भाएक मन मे ब्रह्माजीक आदेश छेनि मानै छेला जे करता से काब। मुदा ब्रह्माजी त परिवारक अंग बुझि सबहक विचार लै कें बजौने छेलखिन तेँ बीबाकी तीनू, धर्मदेव, बुधीनाथ आ विवेकानन्द, प्रतीक्षा मे प्रतीक्षारत रहै छलाह। जइ सँ किछु बजैत नइ छेला। संजोग बनल तीनू गोटे माने धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन्द संगे पहुँचला।

चारू गोटेक बीच मे, ब्रह्मा जी अपन राज्यादेशक राजपत्र रखि बजला- 'एकरा पढ़ि कें सब बुझियो लिअ आ विचारो दिअ जे 'अहूँ मनुखक माने निर्माण केना करब?'

चिट्ठी बुधिनाथ पढ़लनि आ सब कियो सुनलनि। ओना सुनि जहिना इमनदार भाए बिहुँसि रहल छेला तेना ने विवेकानन्द बिहुँसला आ बुधिनाथे कें ओहन बिहुँसी एलनि मुदा धर्मनाथक मन, कोठीक गोरा तर मे राखल चुनक कोठीक मुँह जहिना चुन संग रहै छै तहिना औंटल रहनि। बाजए किछु ने मुदा तरे-तर मन मसकनि जे घर सँ ल' क' दुनिया धरि केकरो गरदनि कहियो भेल हेन तेँ हमर भेल हेन। चिड़ै जेकाँ एकोटा पाँखि देह मे समय सटल नहि रहै देलक। मुदा तैं कि हारि मानि लेब। जखन धरती पर जनम लेलौं, धरती माता छथि, तखन हमरो ने छथि। माए-बच्चाक सिनेह त दुइ दिसि...

पृष्ठ-४

चिट्ठी सुनि सब कियो गुम्म भए। विचार करै लगला जे समय सापेक्ष मनुख बनैं आ कि मनुख सापेक्ष समय बनै, आजुक मनुखक मुख्य रूप छी। ओना ब्रह्माजी मनें-मनें मनें मैं रखैने रहैत छैला। मुदा समयक प्रभाव त देखिते छैला जे परिवार मैं बेटो माए-बाप कैं कहै-ए जे तूं हमर कि केलहुं? जैं पुतोहु ऐतन नजे त उचित छै, किअए त ओकर जनमो आ ओकरे सेवा ओकर माए-बाप केलकैं। शियान भेला पछाति दोसर इ घर आएल। मुदा बेटो जैं ऐहेन बजै-ए ते जरूर कोनो बाल विद्यालयक कोचिंगक पढ़ाइक ज्ञान छिऐ। सत्तरह बापूतक छी सत्तरह रंगक कोचिंग अछिये जइ मैं सत्तरह रंगक बुधि-विचारक मनुखो बनबे करत।

औखन इसकी सैं ब्रह्माजी इमनदार भाए कैं पुछलनि। जेना रस्ते सैं इसकी इमनदार भाए विचारैत आएल होथि कि कीचौंथ छै उहि कैं छाछ भ' बजला- कान खोलि सब सुनि लिअ। आइ धरिक इतिहास मैं छोट-पैघ लगा कैं चौदह हजार लड़ाइ भेल अछि, आ भेल अछि कहियो देव-दानव करै त कहियो रकछा (रक्षा) राक्षस करै। ई भेल अतीत, आगू अछि भविस आ बीच मैं अछि वर्तमान।'

इमनदार भाएक बात सुनि धर्मनाथक मन चुनिआएल मन कनी-कनी घुनियालगल। जइ सैं मनक तामस मैं पुनपन एलै। बजल- 'ई अतीत भेल बेतीत आ बेतीत सैं जे परपरतीत भेल सैं भेलै प्रीतक पूर्व अवस्था। तही बीच नारद बाबा वीणा नेने, बिनु समादें पहुँच गेला। परिवारो मैं एहिना होइ-ए जे जैं कोनो विचार करैं परिवारजन वैसब आ जैं कियो बाहरी लोक आबि गेला त पहिनें इनकर विचार सब सुनिते छी।

ब्रह्माजी नारद बाबा कैं कुशलक्षेम करलनि- भने अहाँ आबिये गेलौं। अहीं भार हमरा परिवारक। देश-दुनियाँक कि हाल अछि।'

नारदबाबा पहिनें वीणाक तारक जड़ि कैं कनेटी द' कैं स्वर ठीक केलनि। किअए त मन मैं उठि गेल छलनि, हाथ मैं जे वीणा अछि, ओ कोन वीणा छी, मुँह सैं फुकैवला सपहरिया सबहक छी, आ कि सरस्वती मैयाक देलकी दिअनि। सारस्वतक मन

कथा - हारि केना मानब - पृ० ५

रहितो असारतत्व कतँ सँ आबि जाइ-ए। नारद बाबा अपन विचार मंथन जे कोँ लगला तइ सँ वीणाक हाथ रुकि गेलनि आ मुँहक वाणी सेहो थाति (छिपाकऽ) धऽ लेलकनि, जइ सँ पुछला पश्चातिओ (ब्रह्माजीक) नारदबाबाक मुँह बन्ने रहलनि। नारदबाबा कें चुप देख बुधिनाथ हुसकी दइत बजला- 'बाबा, तीनू भुवन सँ टहलि-बुलि, देख-सुनि एलौं हेन, आ तइओ मुँह....?'

ओना बुधिनाथक इशारा नारदबाबा बुझि गेला मुदा बुधियार लोक लेल इहो त आफत (आफद) अछिये जे नीको बात कि विचारकेँ सब ठाम नइ बाजल जाइ-ए। अपन दिन-दुनियाँ देखैत नारदबाबा बजला - 'बौआ, पेट मे विचारक लहरि ठहल अछि जइ सँ बजैले मन तनफनाइ-ए मुदा मुदा अपन हारक मारल.... लोक लोक लग मे बजबो केना करत?'

ओना ब्रह्माजी नारदबाबाक विचार सुनि मुस्की मारैत हुसकी दइ देला मुदा विवेकानन नजरि बुधिनाथ पर टिकल छल आ धर्मदेवक इमनदार भाए पर, जइ सँ नारदबाबाक बात कियो ने सुनबे केलनि आ ने बुझबे केलनि। जहिना एकटा ऋृषि अपन इमानकेँ धरम बुझि सतक बाट धेने चलै छेला। एकटा शिकारी एकटा गाय कें खेहारने अबै छल। गाइयक दशा देख हुनका दयाक सागर उमड़ि गेलनि। जान बचौने गाय पड़ाएल जाए छल। रस्ताक ओकुल सँ आ कि बोन-झाड़क ओकल सँ गाय शिकारीक नजरि सँ ओझल भऽ गेल। ओ (शिकारी) ऋृषि लग मे आबि गाइयक जानकारीक बात पुछलकनि। स्पष्ट शब्द मे ओ ऋृषि जवाब देलखिन जे जे देखलक से बाजत नहि आ जे बाजत से देखलक नहि, तहिना भेला चुपा-चुपी देख इमानदार भाए बजला - 'से कि बाबा?'

अपन मजबूरी सँ बेबस भेल नारदबाबा बजला - 'बौआ बाल-बोध सँ कौनो विचार छिपाएब पाप छी। तेँ तोड़ा सब सँ किछु ने छिपेबह।'

Ajanta Officer

छ · ६

नारदबाबाक उमड़ल मनक सागर मे विवेकोमन, बुधि नाथों, धर्मदेवो आ इमनदार भाए सेहो टकटकी लगा देखै लगला। नारदबाबाक मन मे आगू-पाछू उमड़ लगलनि। आगू-पाछू होएक कारण भेलनि अपन तीनू भुवनक रूप-चित्र देख। नारदजीक रूप चित्र छनि, भक्तिक तीन पद्धति मे — व्यास पद्धति, इनमन पद्धति आ नारद पद्धति; जइ मे एक पद्धतिक दाताक रूप मे अपनो छथि। मुदा दोसर रूप, जे देखै छला तइ मे गामक-घरक पुरुख-पातर सँ ल' क' मौगी-मेहरि धरिक बीच छनि जे नारदबाबा एक नम्बर झगड़ लगौन छथि। घरोवला आ घरोवाली दुनू सुख-चैन सँ रहै नहि दइ छथि। से ओ चाहे मर्त्य-भुवनक उमड़ आ कि देवभुवनक।

ब्रह्माजी नारदबाबा पर नजरि फेड़लनि। नजरि फेड़ाइते नारद-बाबाक मन फुड़फुड़ेलनि। बजला — 'बौआ, नीकोहु काज त नीक होइते अछि, जे अधलो काज कखनो नीक भ' जाइ-ए। तहिना नीको काज कतौ अधलो भ' जाइ छै, कतौ अधलो काज नीक होइते अछि। धर्मदेव बीचे मे टपकल — 'जेना?'

नारदबाबा बजला — 'बुद्धदेव आ महावीर जैनक नाम सुननेहेँ हेबहक?'

'हँ, इतिहासक किताबो मे पढ़नो छी।'

'दुनू सन्त छेला, जहिना भोजन मे सादगी, तहिना वस्त्र मे सादगी, जहिना विचार मे सादगी, तहिना बेवहार मे सादगी दुनूकेँ छलनि। अपन विचारक विद्यालय मे केकरो परहेज नहि छल।'

'हँ, से त छलनिहेँ।'

'दुनू एके युग मे भेला, एके रंग दुनू युग दृष्टा सेहो छेला।'

'हँ, से तँ छेलाहे।'

'मुदा...'

'मुदा कि?'

'यैह जे एक गोटे 'बहुजन हिताए' आ दोसर गोटे 'सबजन हिताए' मानै छेला।'

पृ० 6

ओना 'बहुजन हिताइ' आ 'सबजन हिताइक' भाँज मे चारू गोरे, - इमनदार भाए, धर्मदेव, बुधिनाथ आ बिबेकानन ओझरा गेला। मने-मने मन विचारै लगला मुदा ब्रह्माजी बुझि मने मन मुस्की मारै लगला। सब अपने-अपने विचार मे तेना फँसि गेला जे बकता कियो रहबे ने केला। जइ सँ चुपा-चुपी पसरि गेला ब्रह्माजीक मन मे भेलनि जे ऐना जँ कोनो विचार कँ बैसल आ कियो बजनिहारे ने रहता तखन विचार कि हएत? नारदबाबा कँ चरिअबैत बजला- 'नारदजी, इन्द्रासन सँ आदेशपत्र आएल अछि, जे आजुक मनुख निरमबैक, तइ मे...?'

नारदबाबाक मन दुनू दृष्टि सँ कडुआएल (करुआएल) छलनि, पहिल- चलैत-चलैत तते थाकि गेल छेला जे मन करुआ गेल छलनि। दोसर, तीनू भुवनक चालि-चलनिक बेवहार देख मन तेना अगियागेल छलनि जे बिचार करिया गेल छलनि। ओही करुआएल करिआएल मनक बीच ब्रह्माजीक प्रश्न छलनि। बजला- 'आजुक जेहेन दुनिया अछि तइ मे सबसँ उत्तम कोटिक निर्माण (मनुखक निर्माण) ओ हएत जे निरमाणकर्ता निर्माणार्थी कँ (जेकर निर्माण करब) पूँजी (जाइ) अनुकूल माने गरीबी मे नेपाली दारू पीया भतही आ अमीरी मे कनाडियन रसक मोटर साइकिलक सवारी पर चढ़ा, एक हाथ मे मोबाइल आ दोसर हाथ मे सिगरेट चढ़ा, सवारीक हेन्डिल कँ दुनू हाथे छोड़ि, अन्हा-गाड़ीस बाट पर चलाएब नीक निर्माण हएत।'

ब्रह्माजी बुझि गेला जे नारद जी खिशिया कँ विचार देलनि। ओना इनको विचार कँ सोलहो आना नहियो मानबसँ नीक नहियेँ हएत। किअए त अपने ने बैसल-बैसल निरमबै छी, मुदा नारदजी तँ तीनू भुवनकेँ छटहिल बुलि देखै छथि तँ देखलाहा बजला अछि। अपन विचार कँ बेवहारिक बना ब्रह्माजी बजला-

नारदजी, अहाँ विचार सँ सहमत छी तेँ समर्थन कँ छी, मुदा, ऐहेन मनुखक सँ ते जग-हँसार जग-हँसारते ने हएत। किछु छी ते जबाब देही मे छी कि ने।'

ब्रह्माजीक विचार सुनि नारदजी अपन नामस...

पृ.-८

कैं ~~मनें मे दबै~~ मनें मन चौंड़ै लगला। मुदा जहिना डुमैबला वस्तु पानि मे जाइते डूमै लगै-ए आ बिनु डुमैबला अधारो पानि मे अलगे रहै-ए, तहिना नारद बाबाक मन मे उठैत रहनि। अपन पल्ला (पाला) झाड़ैत बजला- 'लोको कि लोक छी, जहिना बिनु सींग-सींगड़ौटीक अछि तहिना बिनु नाङरि-पुछड़ीक सेहो त अछिये, ~~तहिना~~ रहने...?'

ब्रह्माजी बजला- 'बदनामी हएत?'

नारदजी बजला- ~~बदनामी~~ 'जे बदनाम करत ओ त अपने बदनाम अछि, तखन बदनामीक लाज केकरा हएत? हमरे कियो पद्धतिकर्ता कहै-ए आ कियो घर-जरौना, तेकरा हम कि करबै।'

ब्रह्माजी कैं नारदजीक विचार जेना जँचलनि, ~~तहिना मन खु~~ जँचिते मन मे खुशी उपकलैन जइ सँ मुँह मुस्किएलनि। मुस्की दइत बजला- 'तखन?'

'तखन कि, अहीं कैं लोक कि बुझै-ए से बैसल-बैसल बुझबै, कियो बेइमान कहै-ए आ कियो नशाबाज।'

'से केना?'

'जेकरा घर मे बेटीक बाढ़ि अबै-ए ओ बेइमान कहै-ए आ जेकरा बुधि-~~बाकिया~~ भसिया जाइ छै ओ ~~भां~~ भँगपीबा कहै-ए।'

'ऐ मे हमर कोन दोख।'

'से अपना मने बुझने हएत। बजबै जे भाए, हम त दुनियाँक नजैर मे नर-नारीक सृजन करै छी, तहिना बुधि-विवेकक सेहो करै छी। तइ से लोक मानत। ओ थोड़े बुझत जे मकान (घर) बनौनिहार कैं त पहुँच गेल, मुदा केतौ सीमेंट कम रहल आ कि बालुए कम रहल, तइ दुआरे मकान बनौनिहार कामै हएत। ओ त कमो-बेसी करि कैं मशाला तैयार कइये लेत।'

ब्रह्माजी- 'तखन?'

नारदजी- 'तखन यैह ने, जे कतौ बदनामी हएत त कहबै जे ~~भाँग पीब~~ भाँग कनी बेसी पीया गेल। तैं हारि थोड़े मानि लेब।'

समाप्त २।११।०१८

कथा - अप्पन बीरान - पृ० 1

आनो गाम जकाँ हरिहरपुरो। स्वतंत्रता आन्दोलन जहिना सब गाम मे तहिना हरिहरपुरो मे। ओना पाँच सय परिवारक गाम मुदा गामक जमीन, गाछी-कलम पोखरिक चौथाइयो (चारिओ आना) हिस्सा पर गौँआँक अधिकार नहि। बारह आना सँ आरो सम्पत्ति पर अनगौँआ जमीनदारके जड़ो-जड़ आ मासोक अधिकार तँ अछिये। आजादी भेला पछाति कगानक बमुली जमीनदारक हाथ सँ निकलि गेल मुदा जमीन पर अधिकार तँ रहबे करए। गौँआँक बेलगान चलैत धारकिक भरि संग किछु गोटेक हाथ मे किछु जमीनो, आ मलगुजारी देने खेत मुदा बारह सँ चौदह आना परिवार केँ मात्र बटाइये रहए। तेँ कि गामक जमीन गौँआँक कहियो नहि रहल, से बात नहि। मालगुजारीक चलैत साले-साल नीलाम होइत गेल आ गौँआँक जमीन छिनाइत गेल। जइ सँ गामक बारह आना सँ आरो जमीन अनगौँआँक हाथ मे चलि गेल। गौँआँ लेतिहर किसान नहि बटैदार किसानो आ बटैदार बोनिहारो (मजदूरो) बनि रहि गेल। अधिकांश बोनिहार मुदा जेना-तेना, आ कमाइ खटा गौँआँ बहुरबैयाक संग जमीन हथियौलक। जेना-तेना कऽ जे किछु जमीन पर बलात्कार कंकड़ (लड़ाइ) तँ किछु पर सिकमी बटाइक लँ किछु जमीन कीनियोँ कऽ गौँआँ अनगौँआँक केँ गाम सँ हटौलक। बहुरबैया केँ हटिते गौँआ नमहर साँस छोड़लक। गौँआँक हाथ सँ जमीन ससरैक (गौँआ सँ अनगौँआ) अनेको कारण भेल। मुदा किछु मलगुजारीक तँ किछु समाजक जाल-फाँस मुख्य रहल। सामाजिक जालो-फाँस अनेक रंगक रहल मुदा मुख्य रहल मरलाक पछातिक काल्पनिक दुनियाँक बेवहार। काल्पनिक बेवहार ई जे मुइलाक पछातिक खर्चक जे विधि-विधान रहल ओ समाजक रीढ़ केँ तोड़ि देलक। समाजक ऐहेन दबाव रहल जे खेतो-पथार खुशी सँ बेचबैत छल। एक तँ गामक लोकक हाथमे गामक सम्पत्ति (खेत) नहि तैयो पर प्राकृतिक प्रकोप। ओना तीन एहेन समए मुख्य रूप सँ छल मुदा तीनू मे सँ एक-एक समए भेल। एक भेल तीन-तीन, चारि-चारि एक समए भेल। एक भेल जे अनुकूल मौसम / अनुकूल मौसमक अर्थ भेल जे भरि साल एहेन होइत छल, अखनो होइए जे बारहो मास अनुकूल समए बनैत छल। कौन समए केहेन हवा चलत, कौन समए केहेन गरमी पड़त, आ बरसातक रूप रहत। दोसर तरहक समए बनैए, सौरियाह। जइ ए

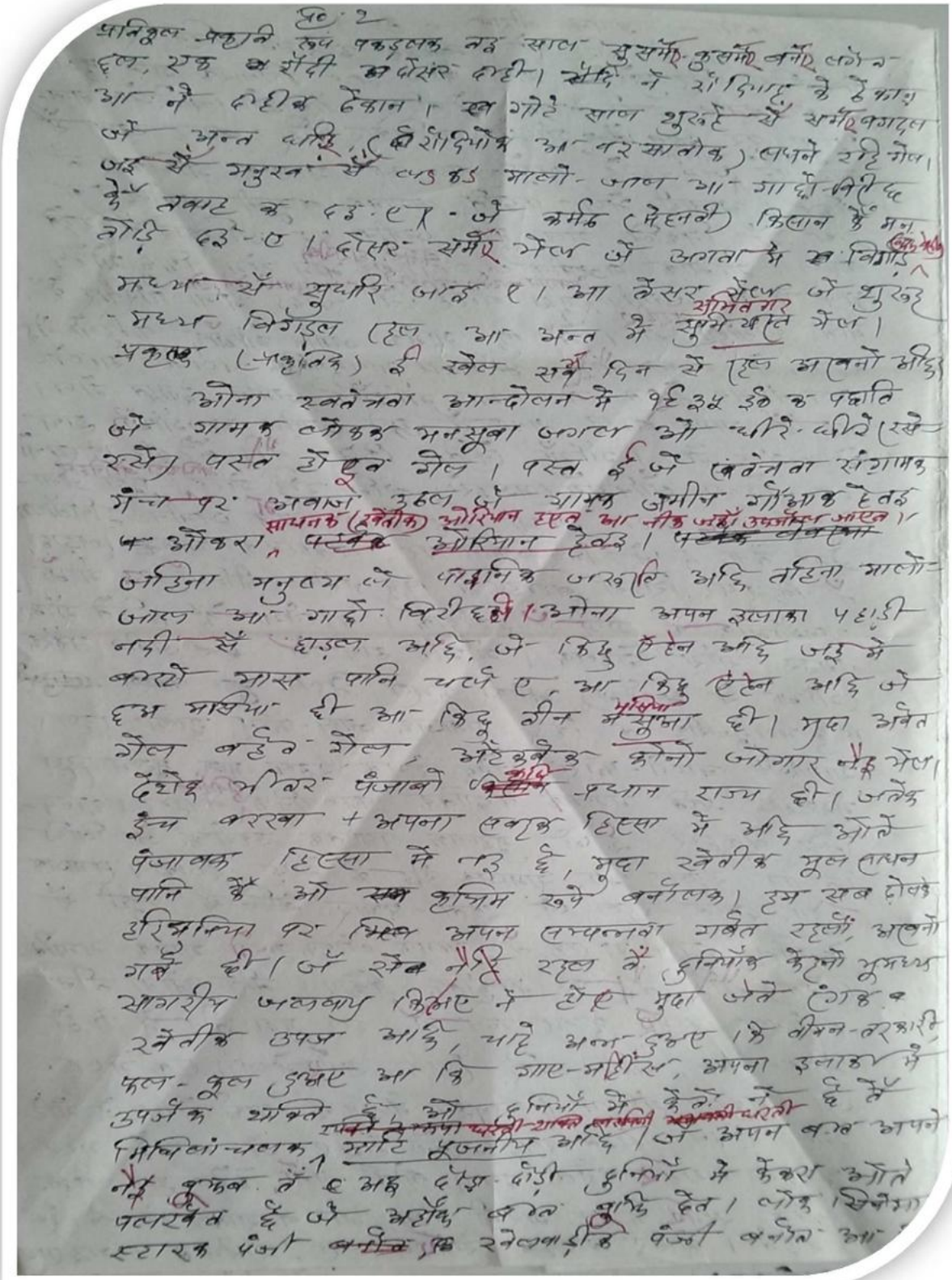

प्र० 2
प्रतिकूल प्रकृति रूप पकड़लक तऽ साथ सुसमॉर-कुसमॉर बनॉर लोकन
छल, एक ओ शैंदी दोसर छही। ओहि ने रॉकिपाड़ के हैकाण
आ ने छहीक हैकान। एक गोटे साण शुरुहे सँ सर्मॉरबगादल
जे अन्त धरि, (शैंदीपोक आ नरसातीक) अपने रहि गेल।
जइ सँ मनुक्ख सँ 45 65 मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ
केँ तवाह क देलक जे कर्मठ (मेहनती) किसान कें मन
तोड़ि देलक। दोसर समॉर भेल जे अगता मे बिगाड़ि
मध्य सँ सुधारि जाइ छै। आ तेसर भेल जे शुरुह
मध्य बिगड़ल छल आ अन्त मे सुभ्यस्त भेल।
प्रकृति (प्राकृतिक) ई खेल सभ दिन सँ छल अखनो अछि।
ओना स्वतंत्रता आन्दोलन मे 1935 ई० क पछाति
जे ग्रामक लोकक मनसूबा जगल ओ धीरे-धीरे (रसे-
रसे) पसरि गेल। पसरि ई जे स्वतंत्रता संग्रामक
मंच पर आवाज उठल जे ग्रामक जमीन गोआक हेतइ
ओकरा, ओरिमान हेतइ।
जहिना मनुक्ख जे प्राकृतिक जरूरति अछि तहिना माछो-
जाल आ गाछो-बिरीछक छै। ओना अपन इलाका पहाड़ी
नदी सँ छाड़ल अछि, जे किछु ऐहेन अछि जइ मे
बारहो मास पानि चलै छै, आ किछु ऐहेन अछि जे
छह मासिया छी आ किछु तीन मसुआ छी। मुदा ओहेत
गेल बढ़ैत गेल, ओकर कोनो जोगार नहि भेल।
देखैत भरि पंजाबो प्रधान राज्य छी। जतेक
इंच बरखा अपना इलाका हिस्सा मे अछि ओते
पंजाबक हिस्सा मे नइ छै, मुदा खेतीक मूल साधन
पानि छै ओ कृत्रिम रूपे बनौलक। इस सब होइके
इतिहासिया पर अपन सम्पन्नता गर्वित रहलौं, अखनो
गर्व छी। जॉ सेहो नहि रहल तँ दुनियाँक कोनो मुख्य
सागरीय जलवायु किछुए ने होइ मुदा जेते लोकक
खेतीक उपज अछि, चाहे अन्न हुअए कि तीमन-तरकारी
फल-फूल हुअए आ कि गाए-महींस, अपना इलाका मे
उपजैक शक्ति छै ओ दुनियाँ मे केतौ ने छै तैँ
मिथिलांचलक माटि पूजनीय अछि। जे अपन बल अपने
नहि बुझब तँ ई अछि दौड़-दौड़ी दुनियाँ मे केकरा ओते
पल्लवित छै जे ओकर पकड़ि देत। लोक सिनेमा
स्टारक पंजी, खेलाड़ीक पंजी बनौत आ

पृ० ३

अपन- बाप- दादाक आ कि अपना गाम-घरक।

हरिहरपुरेक हे भाए- मैथरीक परिवार मे सुपतलाल
आ सुपतलाल। ओना असलमे ओ परिवार सबसँ नीक गाम
मे मानल जाइ-ए मुदा देहु बोनिहार परिवार मे दुनू भाँइक जन्म
भेल। बोनिहार परिवार रहितो भाए-बाप सुनिहार; तेँ आने गरीब
परिवारक बच्चा जेकाँ रहितो, केना बच्चा सियान-चेतन
बनि जिनगी बितौत, सेहो सुनिहारी दुनू परानीकेँ।

बच्चे सँ दुनू भाए मेहनती जे पिताक देखा-देखी सँ
सीखलक। सीखने। बड़केआक धिआ-पुता जकाँ प्लास्टिकक खेलौना नहि जे खलिये
फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना। ओना बहरबैयाक एम
सँ गाँआक बीच अएल सम्पत्ति (जमीन) सँ नमहर निसाँस छुटल
मुदा तेकर (जमीनक) बाढ़ि त रँग-रँगक निहंगर अछिये। एक
त ओहिना घटबी होएत। होएत खेत (जमीन) कम घट बनि गेल, तइ
पर घटबी होएत के उपाय नइ भेने ओहुक मनो घटैत जाएल।
केना ने घटत। अही कहू जे धान गेल अहि, खादक पाइ नइ अहि, रोपक ताक सहायक आ
उनकेक कारण खाकी मने (कियारे) नहि अभाव (अधिक) खादक गेलामे दंडक
सेहो सहयोगी बनल। खेतक संग मौसमी पानि (बरखा) ओ
आ ठवरशक्ति बढ़बैक (नगत बढ़े के) छाउर-गोबरक संग अपन
पुरान पद्धतिक बीआ बपन (बीआ बनाएब)।

उदौ सँ अपना देहमक गृहपति गृहस्त गृहक सबअहिना
सब कलाक सँ सम्पन्न छथा नहिना दुनियाक बीच अपन कला-
कारी रखितो छथा। खेतीक पूर्णताक बीच छलनिहे। जे कोना
अन्न उपजबैत छला, आ कि तीमन-तरकारी आ कि फल
फलहरी, ओकर बीज सँ फल चढ़िक बीचमे छलनि। ओना
एक रसाइ बूरि बकैं जे समयानुकूल ओजार औजार
जकाँ पनिओआ पाइन नइ चढ़ौल जाएत त ओ मोतिया जाएत। मोतिआएल
मोतिआएल एतै मोतिया जाएत उजे अपन चीने पद्धतीनसमाप्त
(समापत) कऽ जाइत। मात्र घर-घरारीवला सुपतलाल पिताक
बनौल बाट पकड़ि पौसिया गाय बच्चे सँ पोसब शुरू केलक
परिवारक खर्चक भार पिता पर। जहिना बिद्याध्ययनक लेल
माता-पिता बेटाक (बच्चाक) अपना लेल सभ दऽ दइ छथि तहिना
सुपतोलालक दुनू भाइक लेल पिता देखलनि। जहिना पाँच
बरख चढ़िते गारजनोक नजरि आ आरो अभिभावकक नजरि
बिद्यालया दिस बढ़ैत तहिना सुपतोलालक पिता नजरि गेलनि।
अजुका सभ जकाँ त नहि जे आनौ आन देशक
बोली-चाली नइ सीखब त कमा कऽ खाएब केना। ओना
दुनू भाइक उम्र मे तीन बरखक अन्तर, मुदा जोगीलके

पृष्ठ-६

उमेर ओते भइते नइ रखैत जते संगी बनि काज (संगोरैत चलि पूरि) संगोरैत चली। पनरह बरखे पुरैत-पुरैत सुपतलाल अपन पोसल गाइअक (सैना कैं पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सब वस्तुक दाम (रुपैया मूल्य) कम तैं तीनिये रुपैये कट्ठा पाँचो कट्ठा जमीन कीनलक। जइ दिन पिता (सुपतलालक) पाँच कट्ठा जमीन बेटाक देखलनि तही दिन परिवारक मन भरैत देखि भगवान कैं प्रणाम केलनि। आजुक महगीक दौर मे कोन-वस्तुक मूल्य आगू बढ़ि दौड़ रहल अछि आ कोन पाछु पड़ि रहल अछि, से कहब कठिन पड़त। ओना मोटा-मोटी सब वस्तुक मूल्य बढ़ि (पाइक रूप मे) बढ़ि रहल अछि। तैं अपन उपारजित पूँजी कैं धड़गर नइ बनाएब त चिलहोरिया जकाँ ऊपरे से झपटि लेत। झपटि कि लेत जे अपनो हिया खोलि झपरबे चाहै छी। आन गाम जकाँ ने हरिहरपुर अठारह गंडा पोखरि बला अछि ने कोसी-कमलाक भरैन करल गाम जकाँ, जे एकोटा पोखरि कुमड़ैये उपनैत कुगत। तइ दुनू से उठि हरिहरपुर मे तीन भागक पोखरि कमलाक भरैन भ' गेल आ एक भागक तीनटा पोखरि बँचल अछि। ओना पहिने हरिहरपुर बलाक विचार रहनि जे गाम चपगर अछि तैं जँ गामक चौबाइ पोखरि रहत (जाएत) गामक मुँह-कान नीक भ' जाएत। गामक मुँहठाक कि? ऐह ने जे वासभूमि मे पानिक जमाव नइ हुअए, बरसाती मासक तरकारी जे चौमास हुअए, फुल-फल दुनूक (गाछी-कलम) ओसतन आँकुक जमीन होए, तहिना अटकि जाए छलनि जे अठारह गंडा पोखरि कते रकबाक गामक। तइ संग दोसर प्रश्न उठि जाइत जे सौंसे गामक मे जते पानिक जरूरत अछि ओते क' पहुँचाएब। मुदा गाम मे बेसी मुँहगर-कनहगर नहि तैं दुइये-चारिटा पोखरि रखनौलनि। → हरबाही (आर्थिक) शोषणक विद्यालय गामे-गाम, नार्यै बान्हि। जइ हरबाह बनाए लेचका से हरबाही सिखा दैत।

पनरह बरखे पुरिते सुपतलाल हरबाही (सिखलक। अपन गाइक बच्चा सँ बड़द बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल अपना ऊपर लेलक आ कुपतलाल कैं गाइयक भार सुमझा देलक। एकर माने ई नइ जे कोनो काज मे कटा-कटी भेल। हर काजक जिम्मेदारक खगता होइ छै, वएह डिमावे। ओना दुनू काज परिवारेक भेलाक तैं परिवारक सब काज पर सबकैं नजरि रहै पड़त, नइ त कखनो कमी ओर संभावना बढ़ैक संका अबैत।

कथा - अप्पन-बीरान - पृष्ठ ५

दुखाही- सिमते सुपतलालक परिवारमे तीन आमदनीक, तीन टा बाट खुजल। पहिल दुखाही सँ बाहरक आमदनी, दोसर गाए आ खेतिहरकेँ (खेतीकेँ नव) यंत्र संगी बनने खेतीक संभावना बढ़िते अछि। नहुँमे खेतक मालिक बहरबैया। ओ सभ कि ओहेन भठिआइ छोड़ै छथि जे एतबो ने बुझता जे बगल खेत ओकरे ने देखै नीक जेकरा समांगक संग दुखबड़ह अछि। ई तँ नहि एजे कन्याकुमारी सँ कश्मीर आ कश्मीर सँ अरुणाचल सड़क बनाएब, मुदा प्राकृतिक काज (सड़क सदृश) दुइ-पहिया सँ होए। आब। दुइ-पहियाक काज तँ गामे-घरमे होइते अछि जे पार नहि लागि रहल अछि आ, हिनकहीं जकाँ मेघ टेकुन। गाम घरमे आँगनो ओहन आँगन घरक कमी नहि अछि, जे आँगन सँ दरबज्जा आ दरबज्जा सँ आँगन जाइ-अबैमे नाहक असोकर्य पड़ैत अछि। कन्याकुमारी सँ कश्मीर-अरुणाचल सड़कक जरूरत अछि, मुदा गाम घरक, बाधक (खेतीक जमीन) ओहेन अछि जे दसो, बीसो बीघा जमीन ओहन समतल नहि अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

सुपतलालक भाग जागल। गाममे हाही भेल। तेहेन हाही भेल जे गामक उपजाबाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो-पात सड़ि-गलि नष्ट भ' गेल। आगू सँ बेसी गामक गाए-महींस बड़द मरि गेल। ओना सुपतलालक गरल मुदा खुट्टा परक सात-आठ माल रहने पाँच टा बचल। अगिलग्गी पद्धति, रौदी-दाहीक पद्धति, जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन नेपार कुटुम संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एके-दुइये गाम पहुँचल। सुपतलाल केँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मन-खप भेलो, खर्च खतम भए गेल, रौदी-दाही भेल आ अहाँक पूँजी (खेत) तँ चौखेड़ हेतै सभ पड़ल नहि चलि गेल, मुदा हमर करता केँ चलि गेल। विचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकरा मासर्ष सकुगोरे से लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएत जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजाक पद्धति अनुमानित कुतं (उपजा) निर्धारित हएत, सभ हुनक अपन-अपन नजरि रहत। पाँचो बीघा गोरयाह खेतमे कमो पानि भेने गामक चारू भागक पानि बहि कऽ चलि अबैत, जइ सँ आमनाथक जमीनमे बेसी सुविधा भ' जाइत। सुपतलालक भाग जागल।

पृ०- ८८

मनरूप बटाइ सँ पहिने सुपतलाल कें अपन हीनता पाँचो कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठा कें बरहमसिया खेती जोकर बनौने छथि। बाढ़िक ई जे तीनू मौसमक तीनू फसल उपजैत। ओना हरि अनंत हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्क अनन्त अछि। ईहो नहि जे बरहमसिया साधिए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैत जे बरहमसिया ओहो तँ मेहनत कऽ दैत जे साल मे एक बेर उपजा दैत। मुदा तेहन मानब उचित हएत। उचित तँ यएह जे बारहो मास ओइ मे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबै। जँ से नहि तँ खाली समय मे, जइ समय उत्पादन नइ हएत, जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपाइ करबाक जरूरत अछिए। खैर जे होउ। सुपतलालो अपन पाँचो कट्ठा जमीन कें धरोहर बुझि उपजबैत अबैत छथि। मध्यम किस्मक जमीन पाँचो कट्ठा मे बरखो उपजबैत छथि। एतेक उपजा होइ जे अपन परिवारक भोजनक अभाव संग नगदो-नारायण अदहाक अबैत जाइत।

एक दिन दुनू भाँइ (सुपतलाल - कुपतलाल) बारक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। रौदियाहे समय दस बजेक पछाति बाध मे कियो चलैत-फिरैत नहि। गामो-घर देख ऐबे कोनो। गाछ सबहक पत्ता झड़कि-झड़कि अध सुखू बनि गेल। रौदे बाध मे उपरौंझ दरस नहि। टोल सँ निकलिते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देखि कुपतलाल बाजल - 'भैया, गाम - बीरान भेल अपनो ने बीसल जाएत, तइ गामक माटि-पानि मोरि जीबै-जन्तु केना बाढ़ ?'

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकड़ि कुपतलाल कें बाजल - 'बौआ, से केना बुझै छहक?'

सुपतलालक प्रश्न उत्तर दइ लेल जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करैत रहिना ओहिना भाँइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल - 'भैया, जखनि खेत अन्ने ने आ कि आमो उपजा नहि हएत, तखनि लोक केना जीवित रहत? बिना कोनटा-पानी सँ तँ लोको चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। जाओ लोक परसाद पबै बला!'

कुपतलालक ओझराएल जिज्ञासा बुझैत सुपतलाल बाजल - 'बौआ, अपने दुनू गोटे छी, आ ई दिल्ली आँगन कहि जाहिर चारू गोटे कें अपन-अपन जिनगी छै

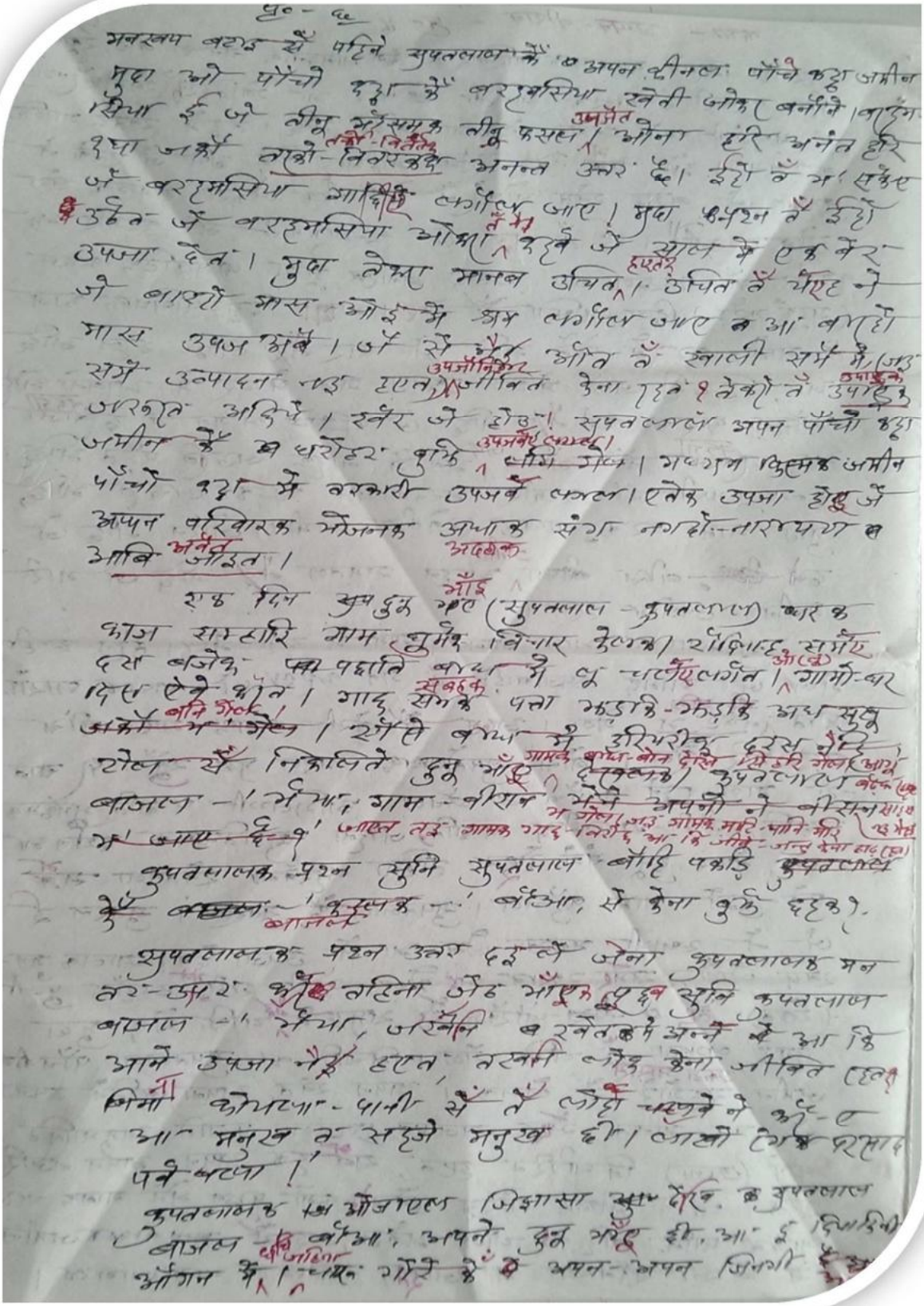

अधि प्र० . 6.
मिनोखक काज छै। तहिना ने सबटक छै। एक कें नष्ट भेने पर्यावरण बिगड़ैत ...
'ई सें तँ ठीके छै?'
'अपना कुनु माँटु कें रतनेतें कुनो काज छह। जौं अपन काज पर ठाढ़ रहैत तँ अछुता भक्त कमाल जकाँ रहितह। नइ जौं पकियो अछुता पुरा भेलहुँ तँ सोलहनी रहैत। भेद-अभेद मेटा जाएत।'
'हैं, से तँ ठीके भैया?'
'बौआ सुनह, जे बात हम कहै छिऐ, ओ तोरा कहला पद्धतिये ने बहुत कुरअइ छह, तहिना तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पद्धति कुनल।'
'हैं से तँ ठीके?'
'बौआ- आब तँ सहजे कते दिन सँ खेती ओ छी पुल अहिया नहियेँ होत रही तहियो सँ लोकक नहियि सुनै छी जे गामे-गाम नहरि बनत, डैम सँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ कारखाना जकाँ चौबीसो घंटा खेतीक काज चलतै।'
'भैया, ई बहुत भेल, दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कें सुतत नइ तँ भगवान सँ रकाकार केना हएत।'
धुर बुड़िबक, एहिना कहै छी, जहिना करखाना मे चौबीसो घंटा काज होइ तहिना खेतियो मे होइ। खेतेक उपजासँ सँ चौबीसो घंटा कारखाना चलैत ए।
कुपतलाल जेना अकचकि गेल। अकचकाए केना ने ओते आ ओकरा समैर छै बाजल- 'भैया, अपन घड़ी-घंटा बजा अपना मंदिर मे पूजा नइ करइ ताबे तक तेहेन तेहन घड़ी-घंटाक अवाज सुनैत रहबइ जे अनेरे कान मे तेते झड़ पड़तह जे काने कड़ा भेलह। कानमी-कामकी बनि अनेरे औना लगलह।'
कुपतलालकेँ अकचकाइत देखि सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे मने समरथ मन आ समरथ बुधि छै नैहैं अनेरे भरि दिन तास पर (तासक खेल पर) बैसि खौंझा कें (उत्पादन कैँ) कागज बना देत। जखने कागजक ... चलन ... अन्न-पानि, खाद्य- बिरीद, सोना-चानी सभटा खौंझेँ बनि जाएत। तखनि कौन जरूरी (खगता) छै जे खेत सँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रसले-पेरा ...

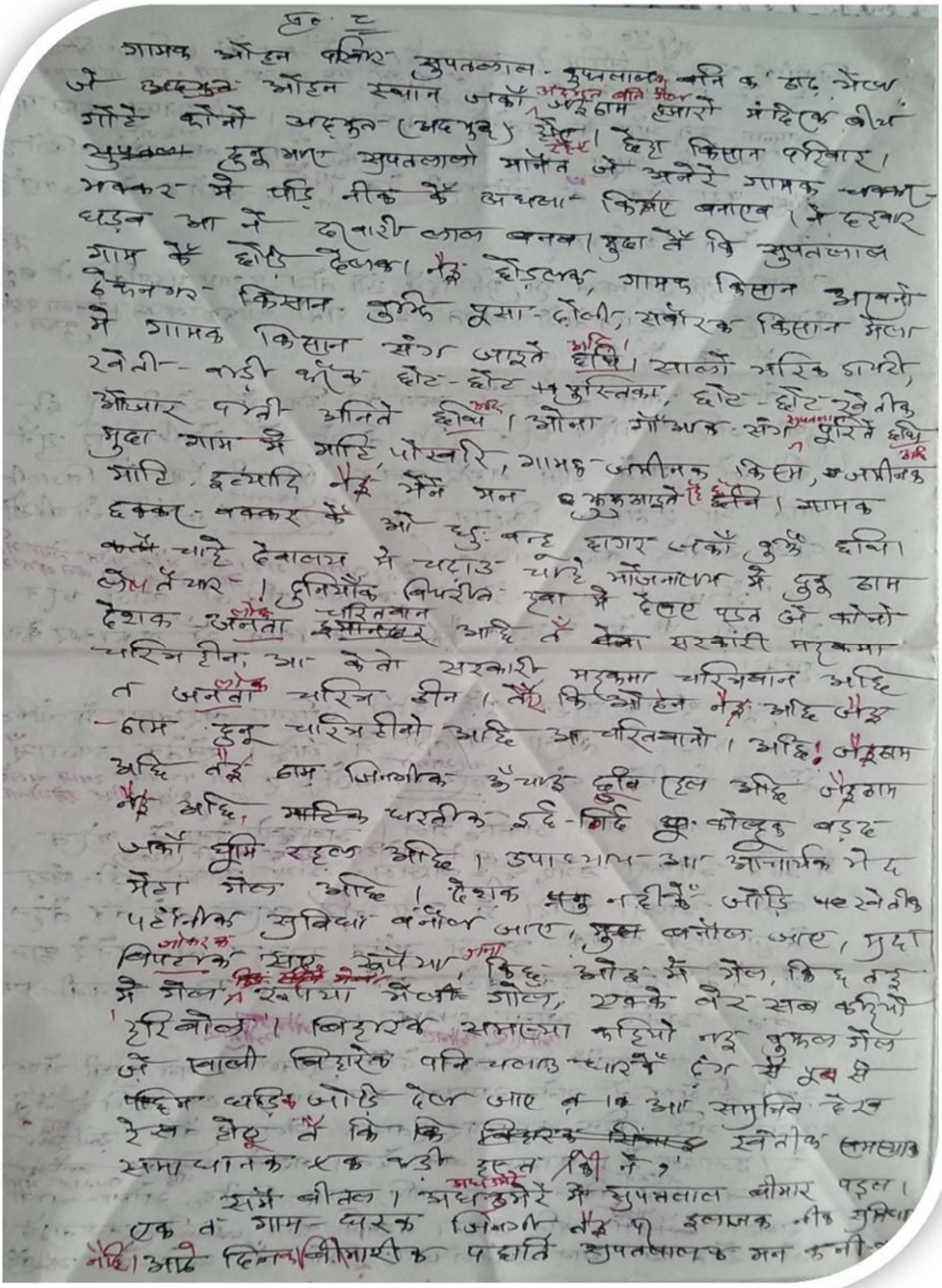

पृ॰ ८

गामक ओहन परिसर सुपतलाल-कुपलालक बनि क' ठाढ़ भेल जे अछूत ओहन स्थान जकाँ अइ ठाम हजारो मंदिरक बीच गोहे छोनो अछूत (अदभुत) छैक। छैठ किसान परिवार। सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर मे पड़ि नीक कैँ अधला किएए बनाएब। ने हरबार धड़ब आ ने दरबारी लाल बनब। मुदा तैँ कि सुपतलाल गाम कैँ छोड़ि देलक। नै छोड़लक, गामक किसान आ बनौ मे गामक किसान। कुर्मि पुसा-ढोली, सबौरक किसान मेला खेती-बाड़ी बौक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक औजार पत्री अनिते छथि आ गामक किसान संग जाइते छथि। साबो गरिक डायरी, मुदा गाम मे गहिँ पोखरि, गामक-जमीनक किसम, जमीनक गाछि इत्यादि नै भैने मन कुकुआइते छैनि। गामक छक्कर-चक्कर कैँ ओ घुट्ठ बनि डागर जकाँ कुँइ छथि। कतौ चाहे देवालय मे चढ़ाउ चाहे भोजनालय मे कुनु ठाम लोक तैयार! दुनियाँक विपरीत हवा मे देखए पड़त जे कोनो देशक लोक चरितवान अछि तँ कोनो सरकारी महकमा चरित्रहीन, आ केतो सरकारी महकमा चरित्रवान अछि त लोक चरित्रहीन। तैँ कि ओहेन नै अछि जैइ ठाम दुनू चरित्रहीनो अछि आ चरितवानो। अछि! जैइ ठाम अछि तइ ठाम जिनगीक ऊँचाइ डूबि रहल अछि जैइ ठाम नै अछि, माटिक धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हुक बड़द जकाँ घुमि रहल अछि। उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक [illegible] जोड़ि पटखेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, [illegible] बनौल जाए, मुदा जोकरक बिपटाक साहु रुपैया गाड़ल, किछु ओइ मे गेल, किछु तइ मे गेल, खपाया भेलौ गोल, एकके बेर सब कहियो 'हरिबोल'। बिहारक समस्या कहियो नइ बुझल गेल जे सात्तो बिहारेक पनि चलाउ चारतैँ ढंग सँ पुब से पच्छिम बढ़िक जोड़ि देल जाए त ... आ समुचित देख रेख होइ तँ कि बिहारक खेतीक समस्याक समाधानक एक बड़ी डेग नै छी?'

समय बीतल। अधवयसे मे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर [illegible] इलाजक नीक सुविधा नहि। आठ दिनक बीमारीक पछाति सुपतलालक मन [illegible]

कथा - अपन बीरान, पृ०-5
चौखड़ि लागल। चौखरैत- मन में गेलैक जे आब कोनाक माहिक देहक
कोनो ठेकान अछि। कतनि फुटि गाएत। आबकि फलाँ कुपतलाल कें सेर
सबो एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सबकें दऽ देबह। अनेरे
गैर काल माथा पर एकटा बोझ चढ़ल रहत।'
अरवनि धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहेन आज्ञा पालक
छल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे करैत आ ओतबे करैत।
ओना ओ जेठ भाइक प्रति पूर्ण समर्पण! ओना फल अधला
कुपतलाल कें भेल। भेल ई जे कुपतलाल कें कहियो कोनो
काज कें फरैक (परखैक) रगता नहि भेल। जइ सें सबें
काजक धुरि रहितो उनइसहा - उपरलहाक गामक इतिहास
नहि बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार
वा लिखनिहारक मने उचहि गेलनि जे हमरो गाम-घर
अही दुनियाँ मे अछि।
परिवारक सबें समांग एकठाम भेल। ओना जइ रे
सुपतलाल तीन भैयाक सबहक हिस्सा मे आबि गेलइ। मुदा परिवारमें
परिवार धी आपसि एक-दोसरक दुख-दर्द (नीक-अधला) दोसर नहि
बुझि अपन बनौने ताधरि परिवारक गाड़ी केना ससरत। अनिते
पत्नी (सुपतलालक) बाजली- सब दिन ओहिना पकड़ने रहब आ
कि कहियो छोड़ब?'
पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना
रणभूमि जाइ सँ पहिने सिपाही बाटे मे घेरा जाइ-ए तहिना
सुपतलालक मन घेरा गेल। जिनगीक संगी। जे गाड़ीक एक पहिया
रहैत वा चपलक एक संगी बिछुड़ैत केतौ फेका जाइ-ए, तहिना
सुपतलालक मन घेरा गेल। सुपतलाल कें गुम-सुम देखि कुपतलाल बाजल- भैया, राजा-रंकक
कोनो ठेकान नहि छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक
गाड़ी जोतलहु से जोतलहुँ। जे तूँ मरबह तँ हमरो मरबे
बुझिहह। धुरि ने हमरा देखह, बुधि तँ तोंही भेने जेबह तखनि
खाली रहत दन-दनौने रहत?'
सुपतलालक आ कुपतलालक बेटा कौलेज मे बी.ए.क
विद्यार्थी। तीन मास पछाति परीक्षा हेतैक, स्नातक भऽ जिनगी
शुरू करत। अपन भार व्यक्त कैत सुपतलाल बेटो आ
भातिजो (सुखमनलाल आ दुखमनलाल) कें बीच बाजल- जाउ
अरवनि धरि परिवारक गाड़ी खिंचलौं। बुझू। जे बीमारी सँ

तहूओ नीक जँ नइ सेहत तँ कोनो नीक। जे समीप जीवन ओ अहाँ दुनू
गेल जे अपनो मन कहै ए जे एतेक कोनो अहाँ दुनू जीवन प्रतिकूलता संग
की, अपना जनैत ओ न एलौं, एकर गारंटी देत जे अहिंठाँ सँ परिवार
गाड़ी खिंचलौं, मनुक्ख बनि जे आएल ओकरा मरै नइ देलियै।
मुदा दुनू भाइकेँ देखि एते त मन खनहन अछिये जे अगिला
गाड़ी खिंचनिहार परिवार मे गढ़ने गेल। कते परिवार गाम मे
अछि जे तोरा [अहाँ] सभ जकाँ कौलेज मे पढ़लक। मुदा अपन
विचार, अपन काज अनका पर लदैत नहि अछि, देखैत अछि
कहैत अछि। बस एतबे [कहब] कहै छी।'
सुगमलाल बाजल- 'बेटू, अहाँ विचारे कि होइ?'
सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजरि सँ सुगमलाल
दिस तकलक, ओहो त कौलेजे मे पढ़ै ए। किछु त अपनो बात जोड़त
मुदा परिवारक अहाँ सँ [अहाँ सँ अनेत परिवार कहू] अनेत जेठ-छोट [छोटका] विचारक संग विचार
नइ मिलैबाक चलनि रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप
मानल गेल। मुदा से नहि बाजैक बेटा सुपतलाल [मन मे उठल], दुनू
भाए विचारि क' कहब। तैं कोनो विकार मन मे नहि।
सुपतलाल बाजल- 'बौआ, समैक संग चलैक अछि। बहुत
आशा सँ दुनू भाए कहै तोरे सब लेल खेत कीनलौं। सम्पत्ति
अर्जलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुर
मे चलि जेतह। बेसी अखैन नइ कहबह, अखन तोरा अपन
परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह, जे तोरे
सब दुआरे अपन खेत बचेलौं, नइ त आरो सभ मे बैंटल
रहितौ (अछितौ) त जमे ने होइत। मुदा जे भेल, खेतीक
जे साधनक अभाव मे कुलो, ओकरा पुरबैत गाछ-बिरिछ रजे
पुरना खाड़ अछि ओकरा समयानुकूल बदलैत चलब
तँ किसानक खतियान चलतह नइ त सरकारी खजाना
जकाँ तमादी हेतह।
सुगमलाल- 'तखन?'
'तखन ऐहेन रजे सामाजिक जे लगो लतड़ैत अछि
जकाँ दुनियाँ मे लतड़ि जाइ-ए, मुदा पढ़ि ओकरा जड़ि
पकड़बे तखन ने?'

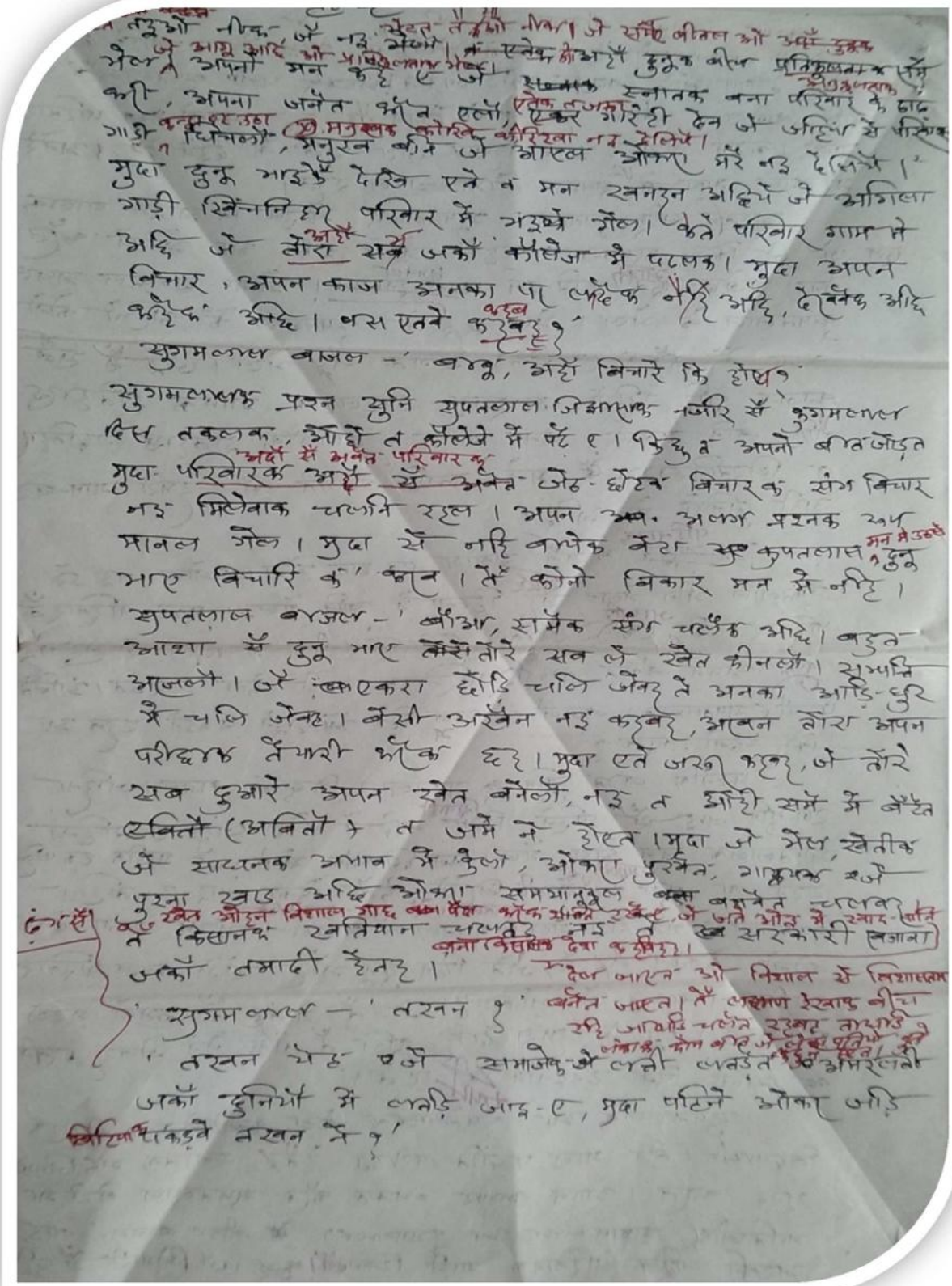

कथा - दिवालीक दीप पृ० १

कातिकक पनरह दिनक अन्हारक (सामूहिक) समूहक दिन अमावस्या छी। आइये रातुक पहिल पहर आ दिनक पाँचम पहर मे लक्ष्मीक पूजा आ दिनक छठम-सातम पहर आ रातुक दोसर-तेसर पहर मे काली पूजा सेहो छी।

...

सेहो बात त नहिये अछि। ओहो त अछिये जे काजक संचनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइ मे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी करै पड़ै-ए। मुदा ऐठाम ने घटबीक प्रश्न अछि आ ने बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगी के सुचारु ढंग सँ संचालित करैक। जइ सँ समय पर दीपो जरा सकी आ पावनि सेहो मना सकी।

दरबज्जा पर पएर दइते पत्नी बजली- कृष्णदेव भैयाक, लक्ष्मी पूजाक हकार द' गेला अछि।

बजलौं - 'कहलएनि नइ जे अपनो किम्हरो सँ अबिते हेता, तइ बीच चाहो पीब लेब, मुँहा-मुँही गप्पो भ' जाएत।

'जहिना माछी-मच्छड़क नंग-चंग कैने मन कछमछाइत रहैए तहिना कृष्णदेव भैया कैँ कछमछाइत देखलएनि,' पत्नी बजली।

मन मे भेल जे अनेरे जे झिंगाफ-झोंगि मन मे बनैत छी से अनेरे। सब साल कृष्णदेव भाए कातिकक दिवाली दिन लक्ष्मीक पूजा करैत छथि आ पान-मखान-मिठाइक हकार दइते अछि। जेबो करैते छी। तहिना आइयो जाएब। बजलौं - 'और (आरो)

पृ०- २

किछु बजला ?'

पत्नी बजली - 'रस्ते- रस्ती बजैत गेला जे ऐम्हरें होएत उदयलाल होएत घर पर जाएब।'

मन मे भेल जे साँझुक पहिल पहरक पुजा लक्ष्मीपुजा छी तखन जे अनेरे गप- सप मे समय गमा लेब तखन समय पर नहि पहुँच केना पाएब। मुँह बन्न कौने अपन साँझुक नियमित क्रिया कें अपनबै मुड़िते रही कि रस्ता पर अबैत उदयलाल पर नजरि पड़ल। जखन कान मे आबि गेल जे कृष्णदेव भाए, लक्ष्मीपुजाक इकारक मादे किऐनाम सँ बिदा भेला, तखन जेँ हम कृष्णदेव भाएक सती इकारक जानकारी द' देबइ त ओ दुनू सिरें नीक हएत।

बजलौं - 'उदयलाल, कृष्णदेव भाए ऐनाम आने साल जेँका लक्ष्मीपुजा छियनि, ओकर इकार छइ। पहिल साँझक पुजा छी तेँ समय पर पहुँचै लै आबन बेसी गप-सप नहि करब। तोहूँ तैयार हुअ गे, हमहूँ तैयार होइ छी। ओतै निचेन सँ गप-सप करब।'

ओना उदयलाल मजाकिया लोक छथि, तेँ ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन सँ कठिन आ गंभीर सँ गंभीर विचार कें मजाक- मजाक मे उड़ाइयो दइ-ए आ पुराइयो त दइते छथि। उदयलाल अगुताएलो मे बाजल - 'परसाद मे पान- मखान टा बँटता आ कि नबको किछु बँटता।'

उदयलालक बात सुनि नहुँआ पर दहला फेकब आ बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं। हमर चुपी देखि आ कि अपन मन मे उदयलाल कें उद्गार रहै से त ओइह जाने मुदा फेर बाजल - 'भाए सहाएब, पग- पग पोखैर कें जहिना कमला- कोशी खेलक आ पान- मखान के परबासी भाए रखैलनि, तहिना आब एकरा किताबे- कैसेट मे रहए दियौ।।'

ओना मन मे भेल जे बाजी- 'किताबो पढ़निहार कि आब छथि आब त कैसेट सुसँ बेसी लोक पढ़ि-ए ऐने, शब्दकोष/जइ सँ एते त लाभ भेबे कैल जे मिथिलाक शब्द मे अंग्रेजीक आदि बढ़बे केलै मुदा फेर भेल जे जखने किछु बाजब कि ओ फेर तेसर बात चालि देत। तेँ चुप्पे रहलौं। ओना उदयलाल कें समैक पाबंदी (पैबंदी) नइ छथि मुदा काजक पैबंदी रहने जेनाक गाड़ीक गति असथिर/कमजोर छइहे।

पृ॰-३

ओना उदयलाल मजकियल लोक चालि पकौड़-चलनिहार
लोक जेँका हँसी--चौल (चालि) करैत अछि मुदा तेकरा ओ गपे-
सप तक रखने अछि। गपोक कि कोनो आड़ि-धुर अछि लोक मनजे
मन मे लोक कैँ फुड़ै छै से बजै-ए। मुदा जिनगीक खेल
त किछु और (आरो छी) छी, ओ त गति-विधिक क्रिया सँ चलै
ए, जइ सँ उदयलालक जेहने बुधि सकताएल छै बाहिना काजो सकताइल
चालि छै। तैँ विसनाम पात्र अछिये। ऐहेन दोरस
उदयलाल मे नहि अछि, जइ सँ मन दुखी नइ होइ-छै
सेहो बात नहिये अछि। कोन क्रियाक लेल कते उच्चारण
होएत से बेचारा मे नइ छै। एकर माने ओ इस्कूल-कौलेज
नइ देखलक सेहो बात नहिये अछि। हँ, एते जरूर छै जे
व्याकरण नइ पढ़ने भाषा-बोध मे कनी कमी
रहिये गेल छै। ओना ओ पत्रिका मे पढ़ने छल जे अरस्तूए
लग सँ भाषा, आ समाजक विचार होएत आएल, जे
केहेन शिक्षाक खगता समाज कैँ अछि जइ सँ ओकर जिनगी प्रगतिक
पथ पर गतिशील रहत। मुदा खैर जे अछि, तइ सँ उदयै-
लालकेँ आ कि अपनो कोन मतलब अछि। मतलब अछि
औगुका जे केना अछि तइ समय पर पहुँच पूजा मे शामिल
हएब। जँ उदयलाल कैँ फनजो पर छोड़ि अपने चलि जाइ, सेहो
केहेन हएत। हँसी-खुशी सँ उदयलाल अपने मे आगू बढ़ैत।

तइ बीचमे उदयलालक प्रति दोसर विचार उचाड़ि
कैँ मन मे चिड़ै जेँका पाँखि फड़फड़ौने खसल।
आगू मे खसैत (मनक आगू मे)। विचार सँ मन तिलमिला
गेल। तिलमिला इ गेल जे उदयलाल सन नवजुवक
जे आजुक युवाशक्तिक अंश अछि ओ त अहिना भगवानेक
अंश जेँका तँ युवो मे युवाशक्ति अछिये। चाहे जे हुअए मुदा
उदयलाल समाज मे किछु अछि, काज
सँ बेसी काजक विचार निकुट्ठे मे लागल रहैत अछि, तैँ कालक दोखक
देखी त अछिये मुदा झड़-झड़ारो लोक त ओकरा नहिये बूझल
जा सकै-ए। जड़-झड़ार जेँका उदयलाल थोड़े अछि, जे सभ
सँ पहिने फुटि कैँ तैयारो भ' जाइत-ए आ पर्व
सँ पहिने झड़िये जाइ-ए।

पृष्ठ- ४

संजोग बनल उदयलाल बाजल- पाँच मिनट मे तोहूँ तैयार भ-जा आ हमहुँ तैयार भ' जाएब। मुदा तैयार भेला पछति हम तोहर रस्ता नइ तकबह। सोझे कृष्णदेव भाए ऐठाम चलि जेबह।'

ओना उदयलालक समयक बान्ह ओते सककत नइ बुझि पड़ल, मुदा संजोगो त संजोग छी। जँ कियो ओकरा रस्ता मे एतबो पुछनिहार भ' जाए जे भाए, बड़ अगुताएल देखै छिअ, तेकर जबाब ओ अखन तक देत तेकर ठीक नहि छै तैं बान्ह हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा जँ कियो नइ भेटतै त जहिना बाजल तहिना ओ आगू बढ़ि कृष्णदेव भाएक दरबज्जा पर पहुँचते दरबारी (चरबाही) बनि बौकिऐबो करितै। नइ कतौ सेहो बात नहियेँ अछि।

पानियोँ सब बात सुनि मने-मन अपनो काजक (कियाक) आ हमरो काजक गोरा-गपसा बैसाबए लेने हेती। जँ किछु अवरोध मनमे होइतनि त बजबे करितथि से किछु नहि अखन धरि बजली। एकर स्पष्ट माने यैह ने भेल जे कृष्णदेव भाए ऐठाम समय पर पहुँचबाक आदेश दइये देलनि गेल।

जहिना पाँच मिनटक समय उदयलाल देने छल तहिना तैयार भ' घर सँ निकललौं। ओना कहब जे उदयलालक घर कृष्णदेव भाएक घर सँ लग अछि तैं पहिने पहुँचत, सेहो बात नहिये अछि। किअए त जते समय हमरा ऐठाम सँ उदयलाल कैँ जेबाकाल लगत ततबे समय ने हमरो जाए मे लागत। मुदा समय त ओइ सँ पहिने निर्धारित भ' गेल, तैं मोटा-मोटी दुनू गोरे कैँ एके रंग समय भेटल।

जहिना कृष्णदेव भाए ऐठाम हम पहुँचलौं तहिना उदयलालो पहुँचल। दरबज्जा पर पहुँचै सँ पहिने दुनू गोरेक भेँट भ' गेल। संगे दुनू गोरे दरबज्जाक अगनेय मे प्रवेश केलौं। कृष्णदेव भाए कैँ देखलएनि जे दुनू परानी हल-चल, हल-चल कऽ रहला अछि। ओइ हलचली मे दुनू परानी मे सँ किनको नजरि हमरा दुनू गोरे पर नहि पड़लनि।

कथा — दिवालीक दीप — पृ०-५

ओना अपना कुर्सि पड़ल जे दुनू परानी कृष्णदेव भाएक नजरि नहि पड़ल। मुदा उदय मन मे इहो भेल जे सबकेँ अपन-अपन नजरिओ संग अछि आँखियो त अछिये। जइ सँ सोलहनी इहो मानि लेब जे हुनका (कृष्णदेव भाए) नजरि नइ पड़लनि सेहो केना मानब? आँखि रहितो कियो चश्मा लगा दैछै-ए आ कियो बिनु चश्मेक ओकरा सँ बेसी देखै-ए। मन असमंजस मे पड़िये गेल। मुदा तइ बीचे मे उदयलाल बाजल - 'गौरी भाए, भरिसक कृष्णदेव भाएक नजरि अपना सब पर नइ पड़लनि।' बजलौं - 'केना बुझै छहक?'

उदयलाल बाजल - 'अपना सब हकरिया भैलिये तहिना ने कृष्णदेवो भाए ढकबाइ भेला। जँ कनियो नजरि पड़ल रहितनि त ओ जरूर किछु ने किछु कहबे करितथि।'

उदयलालक विचार सुनि अपनो मनेँ मानि गेल। फेर भेल जे कृष्णदेव भाए कारबारी छथि हुनका नजरि नहि पड़लनि मुदा अपनो दुनू गोरे त समाजक संग हकरियो छी, तखन किअए ने अपन हाजिरी (उपस्थिति) हुनका लग दर्ज करा ली। बजलौं - 'उदयलाल, अपना सब आनि कँ कतौ आ चुपेचाप बैस जाएब सेहो नीक नइ हएत, तेँ अपन उपस्थिति दर्ज करा लाए।'

उदयलालोक मन मे सएह विचार उठि रहल छलै, स्वीकारैत बाजल - 'कृष्णदेव भाए लग चलि कँ चेहरा देखा देला पछाति कतौ बैसि कँ गप-सप करब।'

आगू बढ़ि कृष्णदेव भाए लग पहुँचलौं। उदयलाल तइ बीचे मे बाजल - 'भाए साहेब (कृष्णदेव भाए) अ. हाथी चढ़ि अहाँ गौर पुजने छी जे भौजी सन संगी हाथ लागल।'

ओना कृष्णदेव भाए पटनी दिशि तकै लगला मुदा मुँह सँ किछु बकार नहि फुटलनि। बजलौं - 'भाए, कते काज पछुआएल अछि।'

कृष्णदेव भाए बजला - 'समयानुसार काज अपन रस्ते पर अछि, मुदा सूर्यास्तो होइ मे दू-चारि मिनट बाकी अछिये।'

पृ०- ६८

उदयलाल बाजल- भाए सहाएब, ऐखन हमरा सबकेँ रहने अछि दुनू परानी केँ काज मे (पूजाक तैयारी मे) व्यस्त रहैत आ हमरो दुनू गोरे केँ शर्म रहैत जे जेठ भ' क' कृष्णदेव भाए दुनू परानी खटि रहल छथि आ हम सब ठाढ़ भेल मुँह देखै छी।'

कृष्णदेव भाए बजला -' तोहर कि विचार ?

उदयलाल बाजल -' अहाँ, दुनू परानी अपन पूजाक तैयारी करू आ हम दुनू गोरे दुआर (गेट) पर बैस हकिया सबहक आगवानी करब।'

कृष्णदेव भाए किछु ने बजला। बुझि गेलौं जे आदेश भेट गेल। दुनू गोरे अगनेयक (दलबज्जाक आंगन) मे कुरसी पर बैस गप-सप करै विचार कैलौं। ओना गप-सपक क्रम मे उदयलाल कखनो-काल कुकुआन जँका बुझि पड़ैए मुदा वास्तव मे ओ गहिरगरो अछि गंभीरगरो त अछिये। बजैक ढंग ओ बदलने अछि। सदि-काल हँसि-हँसि बजनो करै-ए आ गंभीर-सँ गंभीर विषय केँ हँसियेः मे उड़ाइओ दइ ए आ पुराइयो त दइते अछि।

सूर्यास्त भेल। बिजलीक ज्योत सँ सौंसे जगमगा गेल। कृष्णदेव भाए सेहो घर-आंगन मे बिजली लगौनहि छथि। तइ मे आइ बैसी ओरियान सेहो कएलनि अछि। बजलौं -' उदय, बुधि बपजेठ होइ-ए। भलें तू उमेर मे छोट छह मुदा तू बहुत होशियार छह। लोक लाग मे हँसि-हँसि कँ बाजि लइ छअ, मुदा--- ?'

मुदा सुनि उदयलाल जेना एकाएक गंभीर भ' गेल, जेना ओकर गंभीरता हृदय सँ ऊपर आबि गेल होए, जहिना धरती मे गंभीरता ऐने: ओकर सृजनशक्ति एते क्रियाशील भ' जाइ-ए जे ओइ मे मॉंगक बीआ छीटू आ कि बधुआक, ओ बड़बड़ा केँ जनमि जाइ-ए तहिना उदयलाल मे सेहो बुझि पड़ल। उदयलाल बाजि उठल ने रहल अछि मुदा जहिना करिआएल मेघ समुद्र मे लयकि अपन संगी (समुद्र सँ उठैत बादल) पकड़ि संगे

पृ०-6

विदा होइ-ए तहिना बुझि पड़ल। बजलौं- उदय, बिजली बौलब इजोत कैं दिवालीक दीप... ?'

जहिना समुद्र मे जुआरि उठै-ए, ज्वार मे बाढ़ि अबै-ए, पोखरि इनार मे उछालि अबै-ए तहिना उदयलालक मन मे जुआरि (अगारि) उठल। बाजै लगल— 'भैयारी, तखन ने भय-अरि (भय+अरी) होइ-ए जखन सब भैयारी एक मुँह एक बोल बनि एक-एक काजो कौंत आगू मुँहे दिसक दिशि बढ़ब। नइ त कतौं दीप जड़त हृदय मे आ कतौं बौल (बिजली) इजोत प्रकाशित करत। जँ दीपक पावनि के तर पड़ि जाएत आ प्रकाशक पावनि अगजिआर होएत रहत।'

ओना धरमागती बुढ़ी त उदयलालक विचार सोलहनी नइ बुझलौं, मुदा ओकर बाणीक जे बाण रहै ओकरा सोकि दिशा-हीनो जाब नीक नहि बुझि बजलौं- 'हँ, से... ?'

जना हमर बात कैं अधड़रेड़ै पर उदयलाल लोकि लेलक। जहिना चीपल ताना पाइनिक छिरका कैं सोकि लइ-ए तहिना। ओना कहब जे पानियो सँ पातर (मेही) ओस होइ-ए जेकरा दुभि अपन मुँहक अमृत बना माथ पर धारि लड़ने रहै-ए जाधरि सुर्यक अर्घ नहि लइ छैए। मुदा से सब बात नहि छल, अपना मन मे अपन पावनि बनल छल।

उदयलाल बाजल- 'आइ आधाकातिक। अमाबस्या (अमवासिया) छी। कातिक कैं लोक तेरहम मास कहै छैए। किअए ? कौनो मास सँ गिनती शुरु कैला पद्धति ओ मास तेरहम भइये जाइ-ए।'

मन मे जेना घोड़दौड़ शुरु भेल, तहिना डुबए लागल। हिसाब त ठीके उदयलाल कहै-ए मुदा बुझल त कातिके टा अछि, जेकरा लोक तेरहम मास कहै-ए। मुदा त अपन विचार कैं नहियें बाजब नीक बुझलौं। किअए ने उदयलाले अपन पनचैती अपने कौंत चलत। मुदा उदयलालक बात हम नीक जेँका सुनलौं आ कि अनठाएल-मनठाएल जेँका बुझलौं, सेहो त उदयलाल कैं इशारा सँ बुझाएब जरूरी

पृष्ठ-८

अछि। उदयलालेक स्वर मे अपनो स्वर मिलबैत बजलौं—
हँ, से त कहिते अछि।
उदयलाल बाजल- कातिक, किसानी जिनगीक ओ मास छी, अखनो
अछि आ पहिने त सोलहनी छल, जे बरसातक विभिषिका
सँ तुरत-तुरत उबड़ल [हैं-ए]। विभिषिका अनेक
रूप मे घटैत, कतौ धार-धुर इलाका मे धारक करतिया
कॅ-ए त कतौ आहर-तुफानक संग करनाइ कॅ-ए जाइत आन-मालक
सँग, चीज-वस्तुक क्षति सेहो कॅ-ए त, कतौ बाढि बाति
गामक-गाम कैं मेटा दइ-ए, इत्यादि-इत्यादि। तैं कातिक
कैं दोबर भारी मास मानल गेल अछि। ओहुना फसलक
उपजक हिसाब सँ सेहो चैतिक रब्बी-खरायूक पद्धति
उपजक सालक आठम मासक दूरी मे सेहो अछिये।'
तइ बीच कृष्णदेव भाए सेहो अलग मे आबि
बजला— 'पूजाक समय भ' गेल, तैं अहूँ सब तैयार भ'
जाउ। जखने हम शंख फूकब कि अहाँ सब देवस्थल पर पहुँच जाएब।'
ओना उदयोलालक मन मे रहबे करै जे कृष्णदेव भाए
ऐठामक पूजा मे शामिल होइ ले एलौ हेन, तैं उनकर कृत्तिकव्य छिअनि
तें ओ अपना बिहिते (बिहीतें) औकाता, हम सब तइ मे ने पाछु-पाछु संग पुरबनि।
बजैक क्रम मे उदयलाल मस्त सँ झूमि रहल छल, जहिना संगीतक
अंतिम मोड़ पर ऐला पद्धति संगीतज्ञ झूमै लगै-ए तहिना। मुदा कृष्णदेव भाएक वाणीक अंतिम लड़ीक-कड़ी जोड़ि
उदयलाल बाजल—' ऑफुके पनरहम दिन कातिकक पुरणिमा
हएत, जइ दिन कातिक अपन अंतिम सीमा पर पहुँच—
भाए-बहीनिक पावनि सामा-चकेबा करैत
अगहन दिस (धानक मास) धान-धान अग्रसर हएत।
उदयलालक मुँहक मिठगर बोल सुनि-सुनि मन मे जेना
मीठ-मीठ सुआद अबै लगल। ओना मन मे इहो होइत रहै
जे कहीं बीचे मे कृष्णदेव भाए नै शंख फूकि दथि जइ सँ आगूक
विचारक बाटे ने रुकि जाए। उदयलाल मने-मन ठिकिया लेलक
जे जाबे कृष्णदेव भाए शंख फूकैक सूर-सार करत तइ बीचे मे अपन
विचार कैं सीमा पर पहुँचा देब। बीचे मे बजा गेल—
' उदयलाल, आइ त अनहरियें पखक (पक्षक) ने पावनि छी

कथा — दिवालीक दीप — पृ०-5 अनहरिया

ओहिना प्रश्न ठेलौं तहिना उदयलाल जवाब दइत बाजल- अन्हरिया पक्षक सामूहिक रूपक पर्वक अंतिम दिन पर्व छी। अन्हार मे सब किछु हेरैबे नइ करै-ए, मेटबो करै-ए। ओहरे अन्हार मेटबै छी ज्योति पुंज। जे पर्वक पर्व छी दिवाली दिनक दीप पर्व।'

ओना उदयलालक विचार सुनि मनक कुइ-काइ छँटै लागल मुदा कुहो-काइ कि साधारण अछि ओ त मैल वस्त्र जेँका अछि, जेँका जते बेर साबुन लगा धोबै तते ओकर मैल छँटैत जाएत आ चमक अबैत जाएत। मुदा तइ संग मन मे बड़ी शंका त उठिये रहल छल जे तैँ कुइँ-कुइँ करै जे समय चाही, जे समय एहि गतिये पड़ाएल जाइ-ए जेकरा पकड़ि चलब कठिन त अछिये। ओना विचारो आ क्रियोक सेहो अपन गति अछिये मुदा से गति निर्भर करै-ए कर्ता पर। जेहेन कर्ता भर्ता करै-ए तेहेन धरता (धर्ता) पबिते अछि।

बजलौं — 'उदय, अही प्रकाश पुंज (दिवालीक दीप)......?'

आगूक विचार पेटे मे छल तइ बीचे मे उदयलाल आगूक विचार केँ लोकैत बजए लागल — 'भाए, पहिल साँझ लक्ष्मी पूजा छी, दिवा रात्रि मे कालीपूजा सेहो हएत, आ भोर होइते गोवर्धन पूजाक आगमन सेहो भऽ जाएत। माल-जालक घरोमे आ बरदोक थैर मे दुभि धानक संग फुलो-पात सँ पूरल बखारक (कोठी-कोठली) पूजा सेहो छीहे।'

बजलौं — 'हँ, से त छीहे।'

उदयलाल बाजल — 'तैँ कि पावनि बिसरजन भऽ जाएत। प्राते भने तेसर दिन भरदुतिया छी, जे भाइ-बहीनिक भरै-पुरैक पावनि छी। सब बहीन नौतहारिनी भेली आ सब भाय नौतपुरा भेला।'

ओना जइ सूढ़िये उदयलाल बजैत छल तइ सूढ़िये अपनो नइ कुइँ छलौं मुदा भकुआएल बोध केँ जेना-जेना भकपन कमैत जाइ छै आ मन फरीच होएत जाएत छै, तहिना उजाए लागल, जइ सँ उदयलालक विचार सुनै मे नीक लगिये रहल छल। बजलौं — 'हँ, से त छीहे।'

उदयलालक विचार केँ जहिना सइह मेटल, तहिना सहटैत सहीट मे आबि बाजल — 'भाय, परिवारक आंगनक बीच आंगन मे अड़िपन साजि आसन ओछा दुनू हाथ मे सिन्नुर-पीठार लगा पानक पात पसारि फूल अछत, पान-मखान

पृष्ठ-१०

सँ दुनू भाए-बहीन अपन संबंध कें पूजित करिते छथि।'
बजलौं -' ई त अहाँ सँ पूजित होइत आबि रहल अछि।'
उदयलाल बाजल - ई भाए-बहीनक पावनिक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।'

कुछ बजलौं त किछु नहि मुदा मुड़ी जरूर डोला देलियै। ओना उदयलाल कें अपन विचार मे सहृदय-संग समाधान सेहो भेटल होए तहिना भेलै। मुस्की दैत बाजल- प्रातःकाल (माने भरदुतिया क प्राते) सँ छठि पावनिक विधि करण शुरू होइत। माघ-मड़ुआ बाड़ब (बरिआतीक पावनिक नाप नइ कहै छी) सँ विधि करण शुरू होइत उगैत-डुबैत दुनू सूर्यक अर्घ्यदान होइत, सामा-चकेबा संबंधक सोहर-समदाउनक शुरुआतक संग अड़िपनक बीच हर-कोदारि खुरपी, हँसुआ संग (खड़ाँउ) खराम सेहो पूज्य होइत देव उठान (देवोत्थान) धारी देवक आगमन बीच सेहो होइते अछि। तेकर पछाति हनुमान जन्मोत्सव (जनमोत्सव) सँ हटले कोशी-कमलाक स्नानक संग सामा-चकेबा विसर्जन बीच कृष्णदेव भाए महाभारतक कृष्ण जेकाँ शंख फूकि देलखिन। दुनू भाए १ ठाम कें विदा भेलौं।

समाप्त २८।१०।०१८

कथा - रेहना चाची - पृ० १

दिन लहुसैत किसुन भाए, लौफा हाट सँ घुमैत जखनि दीप पहुँचला तँ रस्ता पर ठाढ़ रेहना चाची पर नजरि पड़लनि। कोराक बच्चा (प्रपौत्र) केँ रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत। सुनितेसँ किसुन भायकेँ सात-आठ बर्ख पहिलुका चाची (रेहना चाची) बुझि पड़लनि मुदा सत्तरि बर्खक झुर-झुर भेल शरीर, धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक मुरकी देखि शंको भेलनि। ओना सात-आठ बर्ख सँ किसुन भाय रेहना चाची केँ नहि देखने रहथि तैयो हुनका मन फँसल रहनि। मुदा पुरान लोकक अबाज-बोली तँ कहियो नहि बदलैत अछि, रेहना चाचीक अबाज छी। जग्गा भरी छोटि रस्ते पर साइकिल दहिना पएरक भरे ठाढ़ कैने, रेहना चाची पर आँखि गड़ौने मने-मने बिचारिते छला कि अनायास मुँह फुटलनि -

'रेहना चाची छी?'

रेहना चाची सुनि चाची बच्चा पर सँ नजरि उठा चारू दिस नजरि खिड़कौलनि। दहिनवारी भाग साइकिल पर ठाढ़ भेल पर नजरि पड़लनि। चेहरा सँ चिन्ह (चीन्ह) नहि सकली, मुदा कान मे किसुनक अबाज ठेकलनि। अबाज ठेकिते बोल फुटलनि - 'बौआ, किसुन छी?'

'बौआ किसुन' सुनि किसुन भायकेँ जी मे जान एलनि। जान अबिते जीह पर रखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप-रंग-बोल ठेकलनि। ओइह (वैह) रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ रखने दहिन भाग रखनौर उत्तर बेरमा पूब कुदुवी (कदुवी) आ पछिम सुखेत भरि देखलनि। वैह देखलनि हुनकर कर्मभूमि आ दीप देखलनि पतभूमि (पतिभूमि)। एक तँ ओहुना दीप ओहन गाम अछि जइ मे धोड़ैया घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइ सँ रस्तो-पेरा घराड़िये बनि सुरत होइ-ए। पहिने घराड़ी पर घर बनबै ने जाइ-अबै लेल आड़ि-चर्च बाट (रस्ता) रखता होइ-ए। बाटक काज तँ एक पेड़िओ, खुरपेड़िओ सँ चलैत सकै-ए, मुदा घराड़ी बिना घर बाँसक बुजा बनि थोड़े रहत-एत। घराड़ी भरि जमीन मे बास केनिहारी रेहना चाचीक जीविका बेबसाय देखलनि। ओरे आँगना-घरक काज सम्हारि अपन जबाबदेही पथिया मे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक बारह पैआरी डोरा, हिसाब सँ निकलि आ एक अनियाँ जकता,

पैयाही पृ० २

पेइयाही सुइयाँ लऽ गामक सीमान टपि आन सीमान धरि भरि दिन गमा साँझ कऽ फेरि अपन सीमान मे पहुँच जाइ छेली। मिथिलाक जे गौरव गाथा अछि दुआर पर आएल बाट-बटोही, दुखल-सुखल, जे खाइ बेर पहुँचैत तँ (जखन जे सभ रहै) पहिने हुनका आग्रह करैथि। ओना खाधुरीक अपन-राज-पाट छै। जे से नहि छै तँ ओइठामक कोटा (ओजैतक) हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियान, पहिने लोकक भिखाए लइर तरकारी नतहारी ताकत। मुदा नतहारी जकाँ तँ नहि मुदा हिस्सा मे बरखा तँ लोक निमाहिते अछि। कोनो गाम अखन सँ पहिने रैहना चाची बिसरि जाइ छेली जे भरि दिन खाएब कि, आ रहत केतए। परिवारक परिवारक बीच खाली कारोबारक सम्बन्ध नहि। घेंटा-घेंटा बोरि रैहना चाची अपनो जिनगीक आ अनको जिनगीक खिस्सा पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आइल छेली।

साइकिल पर सँ उतरि किसुन भाइ, स्टेण्ड मे साइकिल ठाढ़ कऽ कऽ बजला — 'चाची गोड़ लगै छी?'

किसुन भाइक गोड़ लगब रैहना चाची सुनबे ने केलथि जे आसिरवाद दितथिन, ओ बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन — 'बौआ भाए नीके छह कि ने। जहिया सँ गाम छुटल, कारोबार गेल। तहिया सँ चीन्हो-पहचीन गेल।'

रैहना चाचीक बात सुनि किसुन भाइक माथ चकरेलनि। अहिना एक जनियाँ, दू जनियाँ, बहुजनियाँ ओहुनो-बिछाइन चकरएला किसुन भाइक माथ चकरेलनि जे गाम छुटल। गाम किए छुटल। गुम-सुम भेल किसुन भाइ रैहना चाचीक झुर-झुर भेल चेहरा, जेना खेसारी बदामक बीढ़िया झुर-झुर भेलो पछातिए गरदी तरकारीक रूप लैत अपन जिनगी चैन सँ गमबैत चाहै-ए, तहिना चाचीक मन पुलकैत। मुदा बिना कुकनौं तँ नहिये लोक कुकैत। किसुन भाए पुछलखिन — 'चाची, गाम केना छुटल?'

किसुन भाइक प्रश्न सुनि रैहना चाची कें एको मिसिया बिसबिसी नहि लगलनि; जेना नव जीवन पाबि कियो नव दिश सँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना, भगिन जमाए पाबि रैहना चाची खुशी होइ।

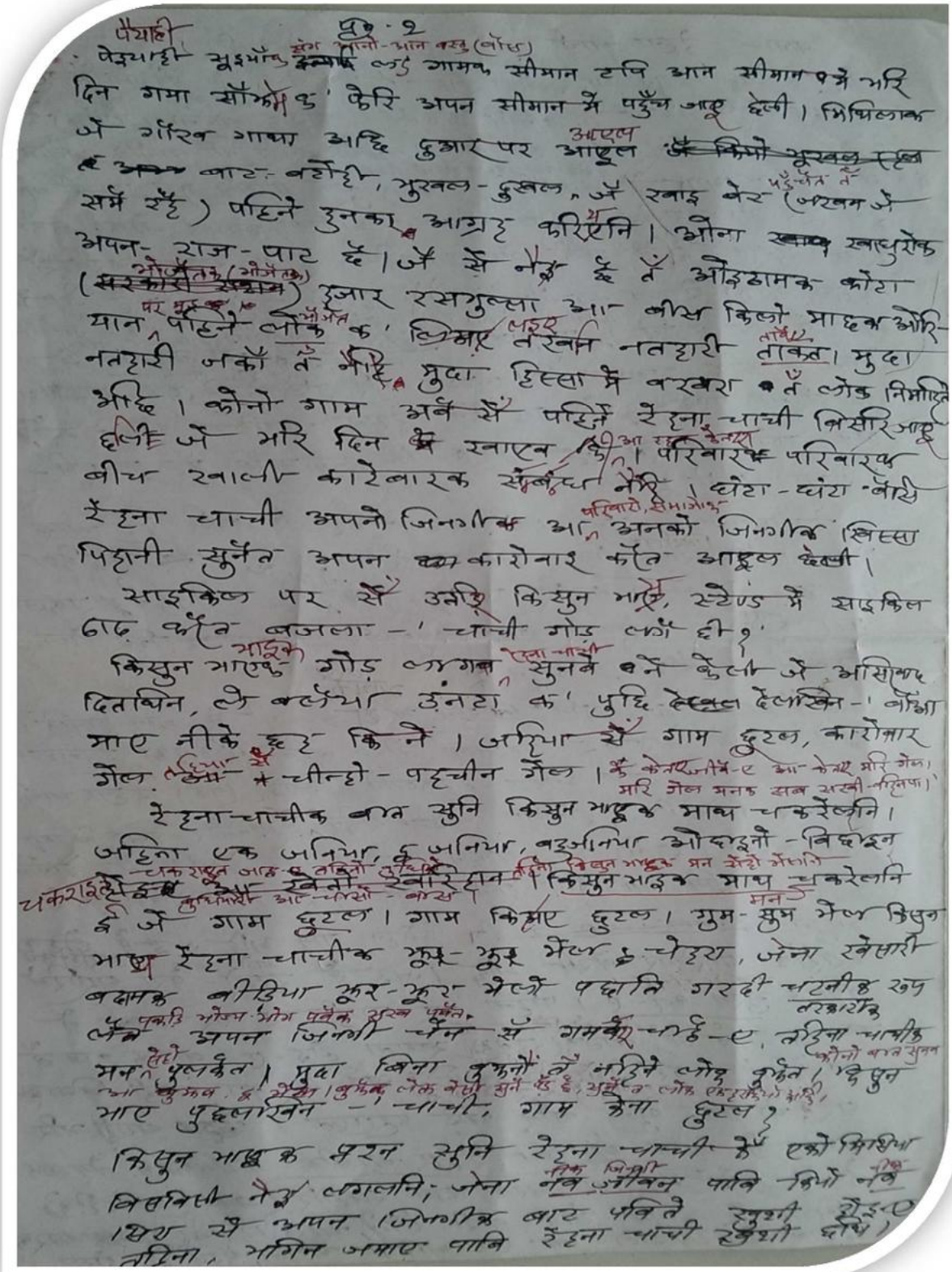

मुद्रा पैट मे पैसे के झगड़ा उठि गेलनि । झगड़ा सं उबरलनि ने पीतल
मे अंधारल सं इहत बात अहि को बाजन आ कि नहि । जाना आब
औह बातक जरूरत नहिए जकाँ अहि मुदा इतिहास काल-खंड विहीन
भइये जाएत । मन बैकानू (रेहना चाचीक) अ' बेलनि मुदा विश्वास देलकनि।
विलासपुर ई देलखनि जे अपन अमेरिका दिन सुरेश्वर त अहि कए दिए ने
जिनगी छूटि लेत बात बिजली भाइ के कहि दिअए । आब
राब दौड़ला औना खरची छुटने देश हए हए रेल, पस मन भरतो भइ-ए जे नजदीक सेना
गामक लोक कारेनारे रा रस्ता अछि । डुबए लगल जे अन
एक संग किछुन भाइक मन मे रंग-बिरंग अनेको प्रश्न डी मेलनि,
मुदा जहिना मुड़ी आ हाँग फटक कश (लहास) के परखब कहिने
कि अखरा-अखरा बुझैए मे जहिना प्रखर वक्ता सब आपन मेहिका
चाउर मे मोहका चाउर केहि काज सासारि बइ छीचे आ कि
मोहकैट चाउर मे मेहीका केहि दइ छीचे । मुदा अनेरे मन बौआने छी । बाजल-
चाची, अछिया जे मेल, से मेल, आब नीके छी कि ने ?
किछुन भाइक बात सुनि रेहना चाची निसमित भइ गेली। निसमित
ई अ' गेली ने पूछ देह छी, अपन गाम गाम पाँच-गामर
के हिनाइछु मेल कि ने । औना आब अपन उमेरो ने रहल जे
माछु पी पथिया बड़ चारि गामक सेना अबै । अपन बेटा-पोता
आसा-भरोसा भगवान अछाड़े हेरि लेलनि, मुदा फेरि ओहो ने देलो कहलनि ?
रेहना चाचीक उत्तर किछुन भाइ नीक जकाँ बुझि सकला तेकर
कारण मेलनि जे बगलो कहाँ देखलनि जे बा बेटा-पोता हेरि
लेलनि आ बगलो कहाँ देखि नपाँच बचचा छी आ भगिन
जमाइक परिवार मे रहि छी। मन के सोझरबैत किछुन भाइ बजला
'चाची, हमरा औंढिना मन अछि अखनी, भाइओ आ अहुँ एकै
दीन बारी के रहबै, आ बीच मे हम दुनू किस रहब ?
किछुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सासरि
कलेक जिनगी जन्म बिजलीका जकाँ मन मे चमकलनि। कहिआहुन मेघ
बदरिआइल मौसम, बदरिआइल राति मे
पोखरि बरोबरि के बीच - जखन बिजलीका चमकै छै तखनी ओ
इजोतक संग अनाज काटै कहै छै
अपन अन्नाजक आस पहिने दे' दहुन ए जे हम लाली नाक
इजोत छी, चाउ कि पीअरी । सीआस पीअरी दुर-देशक
देह-दे लाली अबए । सतर्क जहिना प्रमाण अगराइल होइ छै
कि सतक/सतकी एक हहन । आ ते मोनी के

पृ०-४

रेहना चाचीक आगू मे आइ किसुन भाय कैँ ने अक चलनि बने बक। दिन सेहो ओहुना धुक-धुका गेल। सुर्य तँ डूमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल। किसुन भाए बजला - 'चाची, अखनि तँ दिन निसचित ए नइ भेल, मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँ तँ निऔंन कर छी।'

किसुन भाइक निऔंन सुनि रेहना चाचीक मन हहरलनि। मन हहरलनि ई जे ओइह (पहिलुके) जुग-जमाना रहल आ कि ओइ सँ नीको-अधलो भेल। नीक अधलाक बीच रेहना चाची बोकिया तर पड़ि गेली। ओझरा गेली जे किए संबंध छल, कोरा-कौरा तर केते दिन किसुन भाय पोसल गेल। पावैन मे पवनौट रहैत अएलौं, अपने कते खेलौं ने कौन हिसाब। आइ किसुन भाएक बेटाक बिआह छी, कि ओतए पहुँच पाबुना सकै छी? केना पानि सकै छी? जैह गाम लोक अधला काज कर छल तैह गाम गंगा जल सँ सिकत कऽ नीक बनौल जाइ छल, आ अखनो बनौल जाइ-ए। मुदा गाम गंगाजल मोहन तँ उपराइ रहिया गेल। जैह गाम कि, उपराए रहल। सँ नीक बनौल जाएत। रेहना चाचीक मन ओझरा गेलनि। मुदा सोझुका तरा जकाँ जेना मन मे (रेहना चाचीक मनमे) भुक दऽ उगलनि। उगलनि ई जे जँ कहीं दाजेद चर्च पाछु पड़ि जाएत आ अनेरुए फाजिलेहे गप सँ झ पड़ा देत तइ सँ नीक जे। बजली - 'बौआ, दोओ-कौड़ी लेबइक हेन?'

दौआ-कौड़ीक बात सुनि किसुन भाइक मन पुलकलनि। बजला - 'चाची, अखनि गोटे-सप (बिआहक) उठल हेन, ओ सभ गप पछुआइले अछि, जखनि बिआह मे ऐने आब, तखनि सब गप बुझा देब।'

किसुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मन मे उठलनि, जेते अहला-मिलाँ, परिवार सभ कैँ झाँपन-तोपन दइते रहलनि ततेँ ने नीक। भगबान सभकेँ नीक करथुन। बजली - 'किसुन बौआ, देखते छह जे आब अथबल भेलौं। चलै-फिड़ैक जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से....।'

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाए गुम भऽ गेला। [illegible] गुम ह भऽ गेला जे कि रेहना चाची कैँ यज्ञ काज मे निऔंन कऽ लऽ जाए पारब। कि समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समै बनल जा रहल अछि ओ भरिआएल जरूर अछि। मुदा जखन तर पड़ल औंगरी जँ निकालि नहि जैब, त जौंतक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या त पीसिआ हएत वा औंगरी पिसाइत। मुदा भविस भविस देत।

कथा — अकाल (मे पड़ल छी) - नारी चित्रण - पृ०-1

करिया कुटिते सुगापटीवालीक माथ पर दस-बारह टा छिट्टा-पथिया गेटल देख बौकी दीदी - दुखलाहिन दुखनी - आइ भोरे-भोर केम्हर दिन उगल, हए सुगापटी वाली ?

बौकी दीदीक बोल जना सुगापटीवालीक मन के छौंड़ि देलक। ओना बांटा-बांटा भरि बौकी दीदी लग बौसे सुगापटीवाली अपनो आ अपन परिवारे टाक नहि, देश-दुनियाँक गपो-सप भँत आ काइस तेनाइस खैनो भँत। खासक' पानिक डुब्बा आ भोजकाजक लड्डू त अड़ायी (अड़बेच) क' बौकी दीदी पुतोहु सब से चोरा क' सुगापटीवाली लें रखबे करैत। दसो-बारहो टा छिट्टा-पथियाक गेट मन ऊपर सें उतारि सुगापटी वाली अँगनाक मुँहथरि पर रखलक। भभत पसीना छिट्टा स ल' क' बसहीला, बहाउर केबाक संग सगतोड़ा सगाधुसा पथिया चढ़िक गेट। करीब महीना दिन पछाति बौकी दीदी कें सुगापटीवाली से भेंट भेल छलनि, तैं मास दिनक गपो-सप बझैने, जे कोन सुगापटी वाली कुर्हैत आ दीदीओ। माथक छिट्टा उतड़ैते (उतैड़ते) दीदीक नजरि सुगापटीवालीक मुँह पर पड़लनि। मनुआएल मरू मुँह पीलाह फूल जकाँ कुम्हे पड़लनि। मुदा बजली किछु ने, नइ बजैक कारण भेलनि जे अपने मन मे कुलबुलैने जे जरूर कोनो बेर-विपत्ति (बिपैत) मे बेचारी पड़ल अछि। आन दिन केहेन लहटगरि मुँह देखै छलीह आ आइ किआए धुमलाइल मोलायल कुम्हि पड़ै ए। केना बेचारी कें बेथाक बात पुछि आरो लटकाबी, तइ सँ नीक किआए ने दोसर-तेसर बात पुछि गपक धार (विचारक धारा) मे भसिया दियै। अनेरे त अपने सब बाजि जाएत। (सुरधान, आफौं, अइलहा रसून, पीज, [illegible] निकालि ओतह। (जेतै)) तइ मे एक मासक कथा-पुराण पड़ुआइले अछि। जखने पछिला गपक (अंतिम भेंटक) नाँगरि पकड़ा देबइ कि अनेरे ने बड़बड़ाए लागत। तइ मे जे अपना पुछैक अछि से पुछि-परेखि लेब। सैह सोचि दीदी बजली - 'कनियाँ कतै हेराएल छेलहु जे एते दिनक पछाति नजरि पड़लहु ?'

बौकी दीदीक प्रश्नक उत्तर नइ देन सुगापटीवाली उचित नइ बुझलक। उचित ऐ दुआरे नइ बुझलक जे प्रश्नक उत्तर बिनु पौने प्रश्नकर्तोक मन तामसे नइ बजै ए। मलिन मनक बात रखैत सुगापटी वाली बजलि - 'दीदी, छिनका ले लाथ कोन? लोक कें बेटा सेंग सहल जाइ छै मुदा धन सँग नइ सहल जाइ छै। ऐबेर भगवान हमरा सब के जबर से ल' देलनि।' कहि सुगापटीवाली गाल दिस [illegible] अनैत नोर कें आँचर सँ पोछै लागली। मुँह पर आँचर पड़िते [illegible]

अथा गेलनि। मुदा बौकी दीदीक मन ओतै लटकल जे बेघाऊकथा कालन ओत। मुदा सँ कते-कत बेदीक लाबा जकाँ छिड़िआएल। छिड़िया गेल।

शिकार फसैत नइ देखि बौकी दीदी दोसर बाण छोड़लनि। बजली- 'ऐनीआँ आब त अथा: अरनाड़ो बीत गेल, आन किअए मन पसौना छिड़ा आ सगतोड़ा (फुला) पथिया बीनै (बीने) छह?'

भरि मुँह बौकी दीदी ऐ दुआरे ने बजैत जे जखन हमरा कुतै केकरो सेनीक नइ भाएल होइ ए तखन अनेरे किअए केकरो जिनगीक सोग-पीड़ा जगा पीड़ित करबै। मुदा बौकी दीदीक वाणि सुवाणि भेलनि। जना बेमारी मे पड़ल किओ, कष्ट सँ भीतरे-भीतर कुहरैत अपन वेथा अपने मन मारि सहैत रहैत, मुदा रोगक निदानक डॅक्टर देखिते मन मुँह भुभुआए जाइत तहिना सुगापटीवालीक मुँह भुभुआएल- 'दीदी, लिखा त अपन पेटक बात सब दिन कहै छिअनि, तैं नइ कहलनि सेहो नीक हएत। बड़का अकाल मे पड़ि गेने कुथियो बौआ गेल अछि?'

सुगापट्टीवालीक बात सुनि बौकी दीदी सहमली, मुदा जे मन मे छेलै से अखनो नइ बुझि पड़नि। बजली- 'अकालोक कि अड़ि-पालो अछि। अखन जेना मन फुड़ै छै आबि जाइ छै।'

मुदा बौकी दीदीक बात सुनियो कऽ सुगापटीवाली अनठेलक। ओना आनि कऽ नइ अनठेलक, भेलइ इ जे अखन पथियाक चर्चा दीदी केलनि तखन सुगापटीवालीक मन अपन वेथा मे तेना बौआएल जे सुधियो-बुधि चुसुकि गेल छेलै। मुदा दोसर प्रसंग पछाति ओड़इ अपन हिस्सेदारी मंगैत आगू आनि बाजल- 'दीदी, महिना दिन पहिने, इ सब (छिट्टा-पथिया) बनेने छलौं, किअए त महीना दिन रोजगार अमनेचा रोकरी बनबै मे लगौं छल, नफगर काज। चारि टा पेटी आ चारि टा कारा मे रोकरी बनि जाइ ए। दिन-राति खटि कऽ पाँच-दस हजार हाथो-मुट्ठी मे रहै वा बचा लइ छलौं, से तइ मे अकाल पड़ि गेल।'

सुगापटीवालीक बात बौकी दीदीक मन मे धँसलनि। मन मे घसिते जना फुन-फुनी चेलकनि। फुन-फुनी इ चेलकनि जे अपनो टेंटिआइ सभै-मे कते-दिन आ कते राति अन्न बिनु कटल अछि। दिन त कटि गेल छलनि मुदा ओकर भीतर तड़िआएल जे सोग-पीड़ा अछि, से त कटबे ने केलनि। पाबनि-तिहार के कहै जे, अनदिनो बेचारी के एक मुट्ठी खसाक लऽ दहते दिऐ जँ कहीं राति मे मानस नइ भेल होए त केना कआथ मन-एक मनक भारी बोझ (पथियाक जाक) लऽ 'कऽ बेचै जाएत। तइ मे बड़का छिट्टा (भरे पसौना) आब के लेत। लगनो त लगिचाइये गेल। भदवरिया आदृ भोजो तँ लोक उठाइये कऽ रखि लइ।

पृ० - २

मासे-मास (खूब) भऽइ (धापाक भोज) दऽत सालक अंत होएत-होएत भोज निवटा लऽइ-ए। ~~तहिना [illegible] अछि~~। तेहने साग धुऔं पुनि हो अछि। एक त फड़ाएल साग दोसर कफ हैरक घर, सेहो [illegible] जाइ-ए, सुनाइ-ए। ~~[illegible] अदबारि मे लोक साग रखाइ-ए कि बिल्बु [illegible]~~

~~[illegible] साग पिल्हा लोक बिल्बु [illegible] मौनसक पिल्बु [illegible] छै। बिल्बुक अर्थ इ नइ जे केवल जगहक पिल्बु होइ-ए, साग सँ लऽ अमृत फल यदि पिल्बु पैदा करै-ए, तेहाम एकर थर्मामीटर नापि केना सकै-ए। जहिना रंग-रंगक बौर रंग-रंगक फाड़ा, पोलू, माछी, इत्यादि पैदा करै-ए, तहिना रंग-रंगक गुणो अवगुण त पैदा करिते अछि।~~ बौकी दीदी बजली - 'कनिया, गप-सड़क्का पाछुओ हेतइ, पहिने इ कहइ जे रौतुका खेलहा धेर कि मुरखल?'

बौकी दीदीक बात सुगापरीवाली कैं अनसोंहात जेकाँ बुझि पड़लनि। अनसोंहात इ जे अरखन मोरे दुइ, रौतुका मुरखल बुझर आ कि भरि पेट खेलहा, आब ने लोक मुँहो-कहाय बुझत आ मानसक (खेवाक) ओरियानो (ओरिऔनो) कात। अरखन जे बाजिये देब जे मुरखल छी, त दीदीयो येह ने कहती जे कनी बिलमि जाइ, सेही कि मुजा मुरल छी, खा लिअ क' जइहइ।' मुदा कसो मन उनटि गेलइ, जे तीन-तीन चारि-चारि दिनक पावनिकें रहुआ, आ भोज-काजक लड्डू त सेहो दीदी रखने रहैत छथि। सामंजस्य कैत सुगापरीवाली बाजलि - 'दिवका खेल। एखन (बौकी दीदी एखन) खाइ-पीबै मे कोनो कि लाज-धाक होइ-ए। अरखन मन हएत माँगियो क' ला लेब।'

सुगापरीवालीक बात सुनि बौकी दीदीक मन थमलनि। मन थमिते आगूक बात (केथा-कथा) सुनैक इच्छा भेलनि। मुदा बाइ रे मिथिलांगना, कठिन सँ कठिन (भारी-सँ भारी) दुख-पीड़ाक बोझ माथ मे समेटि रखने रहैत छथि, मुदा पति वा परिवारक बीच नहिये खोलैत राखब नीक बुझैत छथि। ओना नीको त अछिये। पुरुष हुअए आ कि नारी, जँ अपना दुख-पीड़ाक कैं निराकरणक ओरियान अपने कें त ओ चीज-ओ से चिक्कन बाट चलत गेल। मुदा जँ ने अपने मोने आ ने परिवारक बीच राखी त ओ दुखद जरूर भेल। बौकी दीदी बजली - 'कनिया, किदैन कहलहुँ, बड़का अकाल?'

बड़का अकाल सुनिते सुगापरीवाली चौंकि गेलि। चौंक इ गेलि जे दुबा-बिहाड़ि कैं लोक अबितो देखै-ए आ नाइयो देखै-ए, मुदा भेल कतौ, आ बजरि गेल अपना उपर। हजारो-लाखो बीघाक गाछी-कलम (आमक) नइ फड़ल, किसानक साल भरिक उपज मारल गेल। मुदा अपन त किछु ने नोकसान भेल, मुदा तैँ कि जिनगी नइ मारल गेल। अपने परिवारो समाजोक जिनगी त मारले गेल अछि।

ह०-४

सबेरे-सबेरे (भोरे-भोर) सकाल-अकालक चर्चे आन्धन नीक नहि। ई त दुख तिकालक निषय छी। मुदा बाँकुओ दीदी रगड़ाइए त छलिये। रगड़िक' सुनबो आहीन। बिचित्र स्थिति देख सुगापट्टीवाली बाजलि- 'दीदी, दुख-बेथा कि कतौ पड़ाएल जाइ-ए, आगाँ लोकक त मानिये छिऐ। अखन भिनसुरका समय छी। ऐ पचिया बिकाएत त बाँकी खेबो आनि आ अकालोक किस्सानी सुना देबनि।'

सुगापट्टीवालीक बिचार बाँकी दीदी कैं पँचलनि। मुदा तइओ मनमे तेहेन खिस-खिसी रहनि, जे पनचौती त मानै छी मुदा खुट्टा गाड़ब अहीठाम। फेर दोहरबैत बाँकी दीदी बजली- 'कनियाँ, छाँहो-ढुइ जे कहि देने रहब, कि ने, ते अपनो बिचारब आ तोरो से पहिले खनिसतर पहाति सुनि लेब।'

बाँकी दीदीक रगड़ देखि सुगापट्टीवाली बाजलि- 'दीदी, ऐ बेर आम नइ फड़ने महीना दिनक आमो खेनाइ पर आफत भ' गेल आ रोजगारो चलि गेल। चारि-टा बेटी (नौकर चाकर) आ चारि टा कमासुत कामसँ एकटा टोकरी बनि जाइ ऐ। भरि दिन मे चालिस-पचास टा बना लइ छलौं। दिन-रातिक काम पसरल रहै छल। राति क' डिबिया लेसि क' खाइ-बेर तक काज करै छलौं। टोकरीक दाम कँग-टैग किसानो आ बेपारियो ततेक पाकल आम क' दइ छलौं, मुदा ऐ बेर नइ भेल।'

बाँकी दीदी कैं सेहो तीन बीघा गाछी-कलम। ओना परिवारक हिसाबे बाँकी दीदी कैं बेसी गाछी-कलम छनि मुदा किसानी जिनगी मे सब रंगक खेतीक अपन महत छै। कालाइत दुआरे बाँकी दीदी कैं बेसी गाछी कलम छनि। सुगापट्टीवालीक सुर मे सुर (सुर मे सुर) मिलबैत बाँकी दीदी बजली- 'कनियाँ बिनु रहनौ जेहने तेहन भाग तेहने अपनो भाग मे भ' गेल। बेहिना रहनौ अपनो भाग ओहुना। एके रंग भेल कि ने। अखन हमही टा छिआए, हजारो-लाखो किसान छाती मे मुक्का मारि जीनिते छथि, बैआ तोँ कि मरि जेबह। समै कतौ दुर चलि गेल। फेर आम फड़त, तोहर टोकरीक धंधा चलबे करतह। भेल त बीच मे किछु दिन, तइ ले अनेरे सोग-पीड़ा मन मे किआए रखने छह। बिसरि जाह।'

बाँकी दीदीक बात सुनि सुगापट्टीवालीक मुँह लजिया गेल। पचियाक माथ मे उठा सुगापट्टीवाली किसनी-गाछी दिस उठा बढ़लीह।

परिचय : पाण्डुलिपिकार

नाओं : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र)

जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती)

सम्मान/पुरस्कार : 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

साहित्य लेखन : 2001 ईस्वीक पछाइतसँ... ।

रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक- लघु कथा संग्रह।

परिचय : सङ्कलन कर्त्ता

नाओं : उमेश मण्डल- जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : प्रारम्भिम शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए.- एल.एन.जे. कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)। एम.ए. (मैथिली), बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुर। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (UGC NET- June: 2015), **प्रकाशित रचना :** निश्तुकी (पद्य संग्रह), संस्कार गीत, विध-बेवहार गीत आ गीतनाद (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक पहिल संकलन), मिथिलाक जीव-जन्तु/वनस्पति और जिनगी'क डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त लोकगीतक रेकार्डेड ऑनलाइन ऑडियो और वीडियो डिजिटल संकलन। **सह सम्पादक :** विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका एवम् विदेह-सदेह पत्रिका- ISSN 2229-547X VIDEHA. संग सम्पादन : (1.) विदेह मैथिली विहनि कथा (विदेह-सदेह- 5), (2.) विदेह मैथिली लघुकथा (विदेह-सदेह- 6), (3.) विदेह मैथिली पद्य (विदेह-सदेह- 7), (4.) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (विदेह-सदेह- 8), (5.) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (विदेह-सदेह- 9), (6.) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (विदेह-सदेह- 10) **सम्पर्क-** तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06, निर्मली, पिन- 847452, जिला- सुपौल।

उपरोक्त पोथीसभक e-version videha.co.in आ pothi.com परसँ download कएल जा सकैत अछि।

₹ 500

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9 789388 421898

(c)2004-2018. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHAसम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: **राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)**। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, **आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह।** रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।